# अध्याय : 1

# राजस्थानी भासा : सरूप विवेचना

राजस्थानी आज राजस्थान री मायड़ भासा है। राजस्थानी भासा रै साहित्य री भारतीय भासावां रै साहित्य में अेक न्यारी ओल़खाण गिणीजै। राजस्थानी भासा रो जूनो साहित्य लूंठो अर गरब करण जोग है। आज राजस्थानी भासा में हाथ सूं लिख्योड़ी पोथ्यां रो जितो अखूट भंडार है बितो स्यात ई किणी भासा में हुवै। जिण तरियां राजस्थान री परम्परावां अदभुत हैं उणीज भांत अठै रो साहित्य भी। राजस्थान आपरै वैभव सूं भरियोड़ै अतीत, गरबीली परम्परावां अर सांस्क्रतिक जीवन रै ऊंचै आदर्सां सारू आखै जग में नामी–गिरामी रैयो। बेमिसाल त्याग, महान बलिदान अर ऊंचै दरजै री वीरता, पराक्रम अठै हमेस प्रेरणा देवण जोग रैया। राजस्थान सूर–वीरां री जलम भोम सारू सिरै गिणीजै। अठै जिदंगी रै हरेक छेत्र में जीवन मूल्य अर मान–मरजादावां री, अठै रा वीर–पुरुस अेक सींव थरपीजी। ओ इज कारण है के आज राजस्थान रो इतियास उजळी वीरगाथावां रा फड़फड़ाता पांनां रो सांचो इतियास है ।

अठै री इण धरती सूं जुड़ियोड़ो अठै रो राजस्थानी साहित्य लौकिक अर सांस्क्रतिक परम्परावां री दीठ सूं अैड़ो विख्यात रैयो के देस रा मानीता विद्वान इण साहित्य री सरावणा करता रैया । रस, भाव अर ओज सूं भरियोड़ै इण राजस्थानी साहित्य कांनी सर जार्ज ग्रियर्सन, डॉ॰ टैसीटरी, डॉ॰ सुनीति कुमार चाटुर्ज्या जैड़ा विद्वानां रो ध्यान गयो । वीर रस रो जैड़ो ऊंचै दरजै रो रस–परिपाक राजस्थानी साहित्य में दीखै, वैड़ो दुनियां रै किणी साहित्य में नी। इण रो कारण ओ है के राजस्थानी री वीर रस री कविता वां कवियां सूं रचीजी जिका आपरी खुली आंख्यां सूं जुद्धभोम में लड़ता वीरां नै देख्या। वै आपरै हाथ में कलम भी पकड़ी तो बखत आयां तलवार लेयनै जुद्ध में भी जूझ्या । आं कवियां कनै जुद्ध रो भोग्योड़ो अणभव हो। अठै री वीर रस री कविता री प्रसंसा करता थकां रवीन्द्रनाथ ठाकुर लिख्यो के– 'भगती रस री कविता तो आखै भारत रै हरेक साहित्य में मिल ज्यावै पण राजस्थान आपरै खून सूं जिकै साहित्य रो निरमाण कर्‌यो, उण साहित्य रै जोड़ रो साहित्य आज साव दुरलभ है। राजस्थानी कवियां री आ खासियत ही के वै जुद्ध रै नगारां रै बिच्चै आपरी कवितावां रची''। 'इण कथन सूं लखावै के अणभव सूं रच्यो–पच्यो राजस्थानी साहित्य वीर रस री दीठ सूं मारमिक नै भुजावां नै फड़कावण वाळो है । रचनात्मकता रै इण बिंदु माथै राजस्थानी रचनाकार अपणै आप में घणो महताऊ हो ।

इणीज भांत महामना पं. मदनमोहन मालवीय भी राजस्थानी साहित्य नै सरावता थकां कह्यो–''राजस्थानी वीरां री भासा है, राजस्थानी साहित्य वीर साहित्य है अर दुनियां रै साहित्य मांय इण री न्यारी ठौड़ है । आज री पीढ़ी सारू उण रो अध्ययन जरूरी होवणो चाइजै । इण जीवंत साहित्य अर उण री भासा रै विकास रो काम घणो जरूरी है– म्हैं उण दिन री उड़ीक करूं हूँ जद हिन्दू विश्वविधालय में इण रो समपूरण विभाग कायम हुवै अर राजस्थानी भासा अर साहित्य री खोज री भणाई रो सांतरो प्रबंध हुवै''। इण सूं जाहिर है के राजस्थानी साहित्य आपरी जीवंतता अर खुद रै न्यारै निरवाळै सरूप सूं देस रा मानीता विद्वानां नै प्रभावित करियौ । राजस्थानी रा विद्वान प्रो0 नरोत्तमदास स्वामी लिख्यो है– 'राजस्थानी साहित्य जिदंगी रो साहित्य है जिदंगी सूं छेड़ै ओ पागलां रो प्रलाप नी बल्कि जिदंगी सूं अेक गाढ़ो सम्बन्ध राखण आळो है। ओ मिनख नै प्रेरणा देवण वाळो अर अेक नुंवी चेतना जगावण जोग है।' राजस्थानी साहित्य जनता रो साहित्य है।[1] राजस्थानी साहित्य में जिकी भावनावां रो चित्रण दीखै, उण रो विस्तार आखै देस अर जिदंगी सूं जुड़ियोड़ो है। राजस्थानी साहित्य री मोटी खासियतां में जलमभोम

सारू त्याग अर बलिदान रो भाव, देसभगती अर धरती–प्रेम, नारी रो प्रेरक व्यक्तित्त्व, मरण तिंवार रो चाव, दुसमीं सूं बदळो लेवण रो भाव, सुतंतर भावना, देस री अेकता अर अखंडता, सिंणगार अर वीर रस रो चित्रण इत्याद हैं अर आं विसेसतावां रै कारण राजस्थानी साहित्य घणो ओपतो लागै।

**राजस्थान रो नामकरणः–** राजस्थानी राजस्थान राज्य री भासा है राजस्थान सूं बारै कोलकात्ता, मुंबई, चेन्नई इत्याद में भी प्रवासी राजस्थानी लोग मायड़ भासा रो प्रयोग करैं इण वास्तै राजस्थान रै नामकरण बाबत कीं विचार कर लेवणो चाइजै, क्यूंके राजस्थानी नांव राजस्थान माथै ई राखीज्योड़ो है। राजस्थान में साहित्य सिरजण री अेक लूंठी परम्परा रैयी है इणीज भांत राजस्थानी भासा रा भी पुराणैं वखत में केई नांव रैया हैं।

राजस्थान सबद रो सगळा सूं पैलो प्रयोग 'राजस्थानीयादित्य' वि.सं. 682 में बसंतगढ़ (सिरोही) रै अेक सिलालेख माथै खुदयोड़ो मिलै।[2] इण रै पछै मुहणोत नैणसी (वि.सं. 1667–1727) री ख्यात अर 'राजरूपक'[3] (सं. 1788) में राजस्थान सबद रो प्रयोग हुयो पण अठै इण रो प्रयोग राजधानी रै अरथ में है। प्रान्त रै अरथ में 'राजपूताना' सबद रो सै सूं पैलां जार्ज टामस सन् 1800 में कर्‌यो।[4] इण रै पछै सन् 1829 में कर्नल टॉड आपरै इतियास 'एनल्स एंड एंटीक्यूटीज ऑफ राजस्थान' में राजस्थान सबद रो प्रयोग करियो जिको आगै चाल'र प्रान्त रै अरथ में रूढ़ हुयगो। आजादी सूं पैलां अठै छोटी–बड़ी 21 रियासतां ही जिकी पछै अेक हुयगी अर राजस्थान सबद प्रान्त रै रूप में अंगेज्यो। सर जार्ज ग्रियर्सन आपरी पोथी 'लिंगविस्टिक सर्वे ऑफ इंडिया' में राजस्थान प्रान्त री भासा नै ई राजस्थानी नांव दियो अर इण नांव रो आधार सायद कर्नल टॉड री पुस्तक ही हुवै।

पुराणै वखत में राजस्थान रो अेक नांव नी हुय'र अलग–अलग भूखंडां रा अलग–अलग नांव हा जिका रियासतां रै वखत में बदळता रैया। जिंया राजस्थान रै उतरादै भाग नै ,'जांगलू', उगूणै भाग नै 'मत्स्य' (जयपुर,,अलवर अर भरतपुर रो भाग) दिखणादै अर उगूणै भाग नै मेदपाट, बागड़ प्राग्वाट अर गुर्जरत्रा, मध्य भाग नै अरबुद व सपादलक्ष इत्याद नांव सूं ओळखता।

अरावली पहाड़ री परबत माला राजस्थान नै दो भागां में बांट देवै– अेक उतरादो अर आथूंणौ भाग तो दूजो दिखणादो अर उगूणो भाग। उतरादै– आथूंणै भाग में बीकानेर, जैसलमेर, जोधपुर अर शेखावाटी रो कीं भाग सामिल है। सामूहिक रूप सूं इण भाग नै मारवाड़ या मरू देस कैवता । अर इणी भूभाग री भासा मरूभासा रै रूप में जाणीजती। ईं सूं साफ जाहिर है के मरूभासा राजस्थानी वास्तै पुराणो नांव हो।

**मरूभासाः–** मारवाड़ या मरूदेस में जिकी भासा बोलीजती, उण नै मरूभासा नांव दिरीज्यो अर अेक बखत में आ ई भासा आखै प्रान्त री प्रधान अर साहित्यिक भासा ही। आगै जाय'र राजस्थान रै ब्रजमंडल रै नेड़ै जिको छेत्र हो वो ब्रज अर गुजरात रै कनै जिको छेत्र हो, वो गुजराती भासा रै परभाव में आयग्यो।

मरूभासा रो पुराणो उल्लेख सगळा सूं पैलां उद्योतन सूरी रै लिख्योड़ै ग्रंथ 'कुवलयमाला' में मिलै।[5] ओ ग्रंथ आठवीं–नवीं सताब्दी रो है। इण ग्रंथ में 18 देसी भासावां रै साथै मरू, गुर्जर, लाट अर मालव प्रदेस री भासावां रा उदाहरण इण मुजब हैं :–

**अप्पा–तुप्पा भणिरे अह पेच्छइ मारूए तत्तो,**
**'न उ रे भल्लउ' भणिरे अह पेच्छइ गुज्जरे अवरे**
**'अम्ह काउ तुम्ह' भणिरे अह पेच्छइ लाडे**
**भाइ य भइणी तुब्भे भणिरे अह मालवे दिट्ठे** (अप्रपभ्रंश काव्य प्रभी, पृ.)

मरूभासा रा दूजा नांव 'मरूभूमभासा' , 'मारूभासा', 'मरूदेसीय भासा', 'मरूवाणी' इत्याद भी मिलै। बिंया मरूभासा ई आगै चाल'र मारवाड़ी रै परिनिस्ठित साहित्यिक रूप डिंगल रै नावं सूं जाणीजी । 'रघुनाथ

रूपक' रा रचनाकार इण मरूभासा नै 'मुरभूमभासा', 'रघुवरजस प्रकास' रा रचनाकार 'मरूधर भाखा' अर 'वंशभास्कर' रा रचनाकार इण नै 'मरूबानी' कही है। सूर्यमल्ल मिश्रण तांई आतां–आतां मरूभासा या मरूबानी डिंगल रै अरथ में रूढ़ हुयगी अर आ राजस्थानी रै ब्रजभासा सूं प्रभावित पिंगल सूं साव अलग ही। इण तरै जूनै बखत में जिकी भासा नै 'मरूभासा' कही, उणी रो विस्तार आज राजस्थानी है अर इण में राजस्थानी भासा री सगळी बोलियां समायोड़ी हैं।

**राजस्थानी भासा री उत्पत्ति :–** भासा री उत्पत्ति रै बाबत विचार करां तो ठा पड़ै के सरूपोत में जिकी भासा रैयी उणनै वैदिक संस्क्रत रो नांव दियो गयो । इणनै ई वेदां री भासा कहीजी। वैदिक संस्क्रत सूं विकसित हुय'र संस्क्रत बणी । संस्क्रत जद साहित्यिक भासा बणी तो जनसाधारण में बोलचाल री भासा रै रूप में प्राक्रत आई । प्राक्रत रा दो रूप हा । पैली प्राक्रत में पाली अर अर्ध मागधी भासा ही, जिण में बौद्ध अर जैन धरम रा ग्रंथ लिखीज्या। दूजी प्राक्रत भासा में केई छेत्रीय बोलियां ही जिण में खास शौरसैनी, पैशाची, ब्राचड़, महाराष्ट्री, मागधी इत्याद ही । प्राक्रत सूं ईं अपभ्रंस रो विकास हुयो । अपभ्रंस रो बखत मोटै रूप में 500 ई. सूं 1000 ई. तांई मानीजै।[6] देस रै न्यारा–न्यारा भागां में अपभ्रंस रा न्यारा–न्यारा भेद हा। आधुनिक आर्य भासावां रो जलम भी अपभ्रंस रै न्यारा–न्यारा रूपां सूं हुयो जिणमें राजस्थानी भी अेक है । आधुनिक आर्य भासावां रो जलम अपभ्रंस रै अलग–अलग छेत्रीय रूपां सूं इण मुजब मान्यो जावै :–

| अपभ्रंस | आधुनिक भासावां |
|---|---|
| शौरसेनी | आथूंणी हिन्दी, राजस्थानी, पहाड़ी, गुजराती । |
| पैशाची | लहंदा, पंजाबी । |
| ब्राचड़ | सिंधी । |
| महाराष्ट्री | मराठी । |
| मागधी | बिहारी, बंगला, उड़िया, असमिया। |
| अर्ध मागधी | पूर्वी हिन्दी । |

इण सूं साफ जाहिर है के राजस्थानी भासा री उत्पत्ति अपभ्रंस शौरसेनी सूं हुयी ।

पण अठै विद्वानां में इण बात रो मतभेद है के राजस्थानी अपभ्रंस रै किण रूप सूं जलमी। डॉ. ग्रियर्सन राजस्थानी री उत्पत्ति नागर अपभ्रंस सूं मानै[7] तो डॉ. सुनीति कुमार चाटुर्ज्या सौराट्री अपभ्रंस सूं राजस्थानी रो उद्भव मानै।[8] राजस्थानी विद्वानां में डॉ0 मोतीलाल मेनारिया[9] अर डॉ. हीरालाल माहेश्वरी[10] गुर्जरी अपभ्रंस सूं राजस्थानी री उत्पत्ति मानै। इण तरै गुर्जरी अपभ्रंस सूं राजस्थानी अर गुजराती रो तो शौरसेनी अपभ्रंश सूं हिन्दी रो विकास हुयो। 15वीं सताब्दी तांई तो गुजराती अर राजस्थानी अेक ई ही। पछै 16वीं सताब्दी में गुजराती अर राजस्थानी रो न्यारो–न्यारो विकास हुयो। डॉ. सुनीति कुमार चाटुर्ज्या रो मत हैं के गुजराती अर राजस्थानी री उत्पत्ति प्राचीन पश्चिमी राजस्थानी सूं हुई अर आगै चाल'र 16वीं सताब्दी में गुजराती पश्चिमी राजस्थानी सूं अलग हुयगी। इण तरै गुजराती अर राजस्थानी दोनूं आपस में भाणां हैं।

राजस्थानी भासा रै सुतंतर रूप री चरचा करां तो ठा पड़ै के राजस्थानी पैलां तो अपभ्रंस सूं अलग हुई अर पछै प्राचीन राजस्थानी सूं अलग हुय'र नवीन राजस्थानी रै रूप में आपरीं ओळखाण ठावी करी। प्रो. नरोत्तमदास स्वामी नवीन राजस्थानी री कीं विसेसतावां इण भांत मानै जिकी उण नै प्राचीन राजस्थानी सूं अलग करै :–

1. ए अर औ–आं दो नुवां स्वरां रो विकास ।
2. वर्तनी में अइ–अउ री ठौड़ ऐ अर औ रो प्रयोग।

3. नपुसंक लिंग छोड़ दियो या तो पुलिंग में मिलग्यो।

4. सबदां रै अन्त में इ , उ अर अ रै उच्चारण रो लोप ।

डॉ. सुनीति कुमार चाटुर्ज्या रै मत में राजस्थानी भासा री प्रमुख विसेसतावां इण तरै है :–

1. राजस्थानी में 'अ' रो उच्चारण 'इ' रूप में । जिंया मनुष्य रो 'मिनख'।

2. मूर्धन्य 'ण' अर 'ल़' राजस्थानी री खास ध्वनियां हैं। मूर्धन्य ड–ड़ ध्वनियां री तरफ कीं बतो झुकाव हैं।

3. केई बोलियां में च , छ , झ तालव्य ध्वनियां रो उच्चारण दन्त्य सुणीजै।

4. 'ऐ' अर 'औ' यथाक्रम सूं 'ए' अर 'ओ' रै रूप में बोलीजै।

5. राजस्थानी में महाप्राण अघोष बरग रा घ,झ, ढ़, ध, भ रो उच्चारण खास अर मौलिक है।

6. अघोष महाप्राण ध्वनियां ख , छ , ठ , थ , फ बदलै़ नीं।

7. घोष महाप्राण घ , झ , ढ़ , ध , भ सबदां रै पैलां आवण सूं कंठनालीय स्पर्श सूं मिल जावै।

8. केई जगां 'ह' लिख्यो तो नी जावै पण अंत में उच्चारण 'ह' री ध्वनि रो प्रयोग जरूर हुवै, जिंया कयो – कहयो।

**राजस्थानी री बोलियां :–** राजस्थानी राजस्थान री मायड़ भासा है पण इण रो छेत्र घणो व्यापक है आ दूर–दूर तांई बोली ज्यावै, इण सूं इण री बोली रा न्यारा –न्यारा रूप है। राजस्थानी भासा नै बोलणियां लोगां री संख्या आज सात करोड़ मानीजै। भासा विज्ञान रा विद्वान राजस्थानी नै अेक सुतंतर भासा अंगेजै ।

प्रो. नरोत्तमदास स्वामी राजस्थानी री मुख्य च्यार बोलियां मानी हैं :–

1. आथूंणी राजस्थानी या मारवाड़ी : इण रो छेत्र उदयपुर, जोधपुर, जैसलमेर, बीकानेर अर शेखावाटी है।

2. उगूणी राजस्थानी या ढूढ़ाड़ी : इण रो छेत्र जयपुर अर हाड़ौती अंचल है।

3. उतरादी राजस्थानी : इण रो छेत्र अलवर, मेवात तांई है।

4. दिखणादी राजस्थानी : इण रो छेत्र मालवा तांई है इण में नीमाड़ी री बोलियां भी आवै।

आं बोलिया में आथूंणी राजस्थानी या मारवाड़ी प्रधान है क्यूंके इण रै छेत्र रो विस्तार दूजी बोलियां सूं घणो है। प्रो. नरोत्तमदास स्वामी रै मत में डिंगल रो मूल आधार भी मारवाड़ी है ।

डॉ. मोतीलाल मेनारिया अर डॉ. हीरालाल माहेश्वरी राजस्थानी भासा री पांच प्रमुख बोलियां मांनै। आ रो परिचै इण मुजब है :–

**1. मारवाड़ी :–** साहित्य अर विस्तार री दीठ सूं मारवाड़ी राजस्थानी री सै सूं महताऊ बोली है। मारवाड़ी सरू सूं ई साहित्यिक भासा रैयी है। इण रो छेत्र जोधपुर, बीकानेर, जैसलमेर,, किशनगढ़, अजमेर मेरवाड़ा अर शेखावाटी इलाकै तांई है। ईं रो सुद्ध रूप जोधपुर अर इण रै आसै –पासै रै इलाकै में दीसै। आ ओजगुण प्रधान है। मारवाड़ी राजस्थानी भासा रो अेक मानक रूप गिणीजै।

**2. ढूंढ़ाड़ी :–** आ बोली जयपुर, किशनगढ़ अर अजमेर –मेरवाड़ा रै उतरादी अर उगूणै छेत्र में बोली जावै। जयपुर इलाको इण रो खास छेत्र है। हाड़ौती इण री उपबोली है जिकी कोटा, बूंदी अर झालावाड़ छेत्र में बोली जावै। इण बोली में संत दादू अर उणा रै सिस्यां रो लिख्योड़ो धारमिक साहित्य मिलै़।

**3. मेवाती :–** आ अलवर – भरतपुर रै उतरादै –आथूंणै भाग में गुड़गांव तांई आ बोलीजै । इण बोली माथै ब्रज भासा रो असर साफ लखावै। इण मांय घणो साहित्य नी है । चरणदासी पंथ रा जलमदाता संत चरणदास अर उणां री दो सिस्यां दयाबाई अर सहजोबाई री रचनावां इण में मिलै़।

**4. भीली या बागड़ी :–** आ बोली डूंगरपुर, बांसवाड़ा अर मेवाड़ रै कीं छेत्रां में बोली जावै। डॉ. ग्रियर्सन भीली नै अेक सुतंतर भासा रो दरजो दियो है पण डॉ. हीरालाल माहेश्वरी इण नै सुतंतर भासा नी मानैं। गुजराती इलाका सूं जुड़ियोड़ै छेत्र कारण इण बोली माथै गुजराती भासा रो असर है ।

इण तरै राजस्थानी भासा री पांच बोलियां है जिणां में मारवाड़ी बोली री प्रधानता है अर आज साहित्य रचना सारू आ बोली आखै प्रान्त में अपणायी जावै ।

**राजस्थानी भासा री अकेरूपता :–** राजस्थानी भासा री न्यारै–न्यारै अंचलां में न्यारी–न्यारी बोली हुवतां थकां भी बै कठैई राजस्थानी रै स्वरूप या अेकरूपता में बाधक नी। कहावत है के 'च्चार कोस पर पाणी बदलै, आठ कोस पर बाणी'। इण सूं आ बात साफ हुवै के राजस्थानी भासा री अै बोलियां राजस्थानी री सिमरघता नै प्रगटै अर दूण सूं राजस्थानी रै विकास नै भी गति मिलै। अैड़ी स्थिति दुनियां री सगली भासावां साथै है के उणां में केई बोली अर उपबोली दीसै।

जिण 'मारवाड़ी' नै राजस्थानी भासा रो दरजो देवां उण रो कारण ओ है के सदियां सूं इण मारवाड़ी में ई साहित्य लिरव्यो जावतो रैयो है दूजी बोलियां में लिखित साहित्य रो अभाव रैयो। पछै मारवाड़ी नै बोलण आला़ भी दूजी बोलियां सूं घणा हैं। इण वास्तै मारवाड़ी नै अेक मानक भासा रो दरजो दिया जा सकै है अर ओ वाजिब भी है। भासा वैग्यानिक भी इण बात नै स्वीकारै के भासा रो विकास बोलियां सूं हुवै। हिन्दी अर अंग्रेजी री तो बात छोड़ो, आज गुजराती, मराठी, बंगला इत्याद भासावां रो विकास क्रम भी इणी भांत दीसै। बोलियां रै लिखित रूप नै देखां तो उणमें न्यारोपणो लखावै पण इण लिखित रूप सूं ई भासा रो अेक समान रूप सामै आवै। राजस्थानी री न्यारी–न्यारी बोलियां रै गद्य–पद्य री रचनावां नै देखां तो लागै के राजस्थानी रो अेक मानक रूप रैयो है अर वो आदिकाल सूं अबार तांई अेकजैड़ो दीसै।

किणी भी भासा री अेकरूपता वास्तै जरूरी है के उण में खूब लिख्यो जावै अर बरोबर लिख्यो जावै। इण स्थिति सूं –भासा में आपोआप ई अेकरूपता आय जावैली। इण वास्तै राजस्थानी भासा नै लेयर कीं भ्रांतियां हैं अर उणां में अेक बात राजस्थानी भासा री बोलियां री कही जावै तो ओ आरोप भी लगायो जावै के मारवाड़ी बोली नै आरवै राजस्थान माथै थोपी जाय रैयी है अर उण नै ई राजस्थानी रो मानक रूप मान्यो जावै है। पण जिंया हिन्दी, ब्रज, अवधी , भोजपुरी, राजस्थानी, मालवी इत्याद बोलियां रो महत्तब है अर आं रै सामिल रूप रो नांव ई हिन्दी है बियांई राजस्थानी भी मारवाड़ी, हाड़ौती, दूंढाड़ी, बागड़ी, शेखावाटी इत्याद बोलियां रो अेक सामिल रूप है।

कीं लोग ओ भरम भी फैलावै के राजस्थानी हिन्दी रै विकास में बाधक है पण ओ कैवणो साव गलत है। हिन्दी आपणी राष्ट्र भासा है तो राजस्थानी आपणी मायड़ भासा। राजस्थानी भासा री मानता सूं हिन्दी नै किणी भांत रो नुकसान नी। राजस्थानी तो हिन्दी सूं भी पुराणी भासा है। मुनि उद्योतन सूरि आपरै ग्रंथ 'कुंवलयमाला' (वि. स. 835) में उण वखत री 18 भासावां रै साथै 'मरूभासा' रै रूप में राजस्थानी रो उल्लेख कर्‌यो है अर उण वखत सूं आज तांई राजस्थानी अेकानी जनभासा तो इण रै साथै साहित्यिक भासा रैयी है। इण तरै अेकरूपता नी हुवण री बात साव निराधार है।

**लिपि :–** राजस्थानी भासा री लिपि देवनागरी है पण कीं आखरां री बणावट में थोड़ो अंतर है। राजस्थानी 'ल' अर 'ल़' री अलग–अलग ध्वनि है जियां 'गाल' सबद में 'ल' ध्वनि होवणै सूं इण रो अरथ कपोल रै रूप में है पण जे गाल री ठौड़ 'ल़' आखर रो प्रयोग हुवै तो पछै 'गाल़' रो अरथ गाली हुय जावै। इणी तरै 'ड' अर 'ड़' री भी राजस्थानी री अलग–अलग ध्वनि हैं। राजस्थानी में हिन्दी रा स, ष, श वरणां री ठौड़ फगत स (दन्त्य रूप) रो ई प्रयोग हुवै।

**डिंगल अर पिंगल :–** राजस्थानी रो साहित्य डिंगल अर पिंगल भासावां में मिलै। डॉ. मोतीलाल मेनारिया रो मत है के 'डिंगल राजस्थान री बोलचाल री भासा रो ई साहित्यिक रूप है अर पिंगल

री तुलना में आ घणी जूनी, साहित्य री दीठ सूं सिमरिध अर ओजगुण सूं भरपूर है।'[11] राजस्थान में पिंगल भासा में भी घणो साहित्य मिलै। पिंगल रै इण साहित्य सिरजण रा रचनाकार भाट जाति रा कवि हैं तो डिंगल रो घणकरो साहित्य चारण कवियां रो रच्योड़ो है। अठै आ बात उल्लेखजोग है के भाट जाति चारण जाति सूं अलायदा है। राजस्थान में पिंगल भासा रो नांव भाट जाति रै आधार माथै 'भाट–भायखा' अर्थात् भाटां री भासा भी कहीजै । ईं रो प्रमाण सोळवीं सताब्दी रा चारण कवि उदैराम रै लिख्योड़ै 'कवि कुल बोध' ग्रंथ में ओ दूहो मिलै :–

**चारण डिंगल चातुरी , पिंगल भाट प्रकास ।**
**गुण संख्या–कल–बरण गण , यांरो करो उजास ।।[12]**

इण सूं प्रगट हुवै के डिंगल अर पिंगल दोनूं अेक–दूजै सूं साव अलग हैं अर आं रो व्याकरण अर छंदसास्त्र भी साव अलायदा है । पिंगल रो विकास सौरसैनी अपभ्रंस सूं तो डिंगल रो विकास गुर्जरी अपभ्रंस सूं हुयो। आगै चाल'र चारण अर भाटां में आं दोनूं भासावा नै लेय'र होड़ भी मची। चारण कवि भी पिंगल रै मांय रचनावां करी। आं रा पिंगल में लिख्योड़ा चरित्र–काव्य, पौराणिक काव्य अर भक्ति काव्य मिलै। सूर्यमल्ल, स्वरूपदास, गणेशपुरी जैड़ा पिंगल रा मानीता रचनाकार हुया। सूर्यमल्ल रै 'वंशभास्कर' ग्रंथ रो तीन–चौथाई भाग पिंगल में रच्योड़ो है। इणीज भांत 'पृथ्वीराज रासो', 'रतनरासो', 'विजयपाल रासो' इत्याद ग्रंथां में भी पिंगल रो प्रयोग हुयो है।

अठै आ बात भी ध्यानजोग है के डिंगल अर पिंगल नै लेय'र विद्वानां में केई तरै रा मतभेद भी रैया हैं। अेक मत रै मुजब पिंगल डिंगल सूं घणी जूनी है अर पिंगल रै बजन माथै ई डिंगल नांव पड्यो। ज्यादातर विद्वानां रो ओ ई कैवणो है पण डॉ. मोतीलाल मेनारिया रो मानणो है के डिंगल सबद पिंगल सूं जूनो है अर पिंगल रै तुक माथै डिंगल नांव राखीज्यो, आ कल्पना साव निरमूल है। खैर, ओ अेक बहस रो सवाल है। आ भी संभव हुय सकै के अै दोनूं नांव अेकै साथै चालीज्या हुवै। पण कीं भी हुवै पिंगल डिंगल सूं साव अलैदा है। डॉ. सुनीति कुमार चाटुर्ज्या भी डिंगल अर पिंगल नै दो अलग–अलग भासा रो दरजो देवैं।[13]

इणीज भांत 'डिंगल' सबद नै लेय'र भी विद्वानां रै मांय कीं भ्रम हैं। डॉ0 मोतीलाल मेनारिया डिंगल नै सुतंतर भासा मानैं तो कीं विद्वान डिंगल नै फगत काव्य सिरजण री अेक सैली कैवै। प्रो0 नरोत्तमदास स्वामी रै मुताबिक डिंगल राजस्थानी सूं अलग कोई भासा नी, बल्कि आ राजस्थानी री ई अेक खास काव्य सैली है क्यूंके साधारण राजस्थानी अर डिंगल में विसेस भेद या तो सबदावली रो है या सबदां री लिखावट (वर्तनी) रो, व्याकरण रो भेद तो ना कुछ है।[14] इण सूं मैसूस हुवै के सरू में डिंगल बोल–चाल री भासा रैयी हुवै अर पछै साहित्यिक भासा रै मांय ढ़ळगी हुवै। प्रो0 स्वामी रै सबदां में डिंगल अपभ्रंस सैली रो ई विकसित रूप है। कदे डिंगल सबद रो प्रयोग पूरी राजस्थानी भासा सारू तो कदे चारणी सैली वास्तै करीजतो रैयो है।

'डिंगल' सबद रो प्रयोग सगळा सूं पैलां राजस्थान रा ख्यातनांव कवि आसिया बांकीदास आपरी रचना 'कुकवि बतीसी' (1871 वि.) रै इण दूहै में कर्यो है :–

**डिंगलियां मिलियां करै पिंगल तणों प्रकास ।**
**संसक्रित है कपट सज , पिंगल पढ़ियां पास ।।[15]**

संवत् 1863 में सेवग मंछाराम डिंगल गीतां रो विवेचन करणवाळो 'रघुनाथ रूपक' ग्रंथ डिंगल भासा में लिख्यो पण उण में डिंगल सबद रो प्रयोग 'वंशभास्कर' में करतां थकां लिख्यो :–

**डिंगल उपनामक कहुंक, मरूबानीय हु विधेय ।**
**अपभ्रंश जामे अधिक, सदा वीर रस श्रेय ।।[16]**

इण सूं डिंगल रो अपभ्रंस री तरफ झुकाव अर वीर रस रै अनुकूल हुवण री बात जाहिर हुवै। ईं वास्तै ओ कह्यो जा सकै है के सरू में डिंगल बोलचाल री भासा ई रैयी हुवै अर पछै विकसित हुय'र साहित्यिक भासा रो रूप धारण कर्‌यो हुवै। डिंगल सबद रो प्रयोग कदे भासा रै रूप में तो कदे सैली रै रूढ़ अर्थ में हुवतो रैयो है। बिंया चारण जिण राजस्थानी रै साहित्यिक रूप में कविता करता रैया, वा ई डिंगल जाणीजती रैयी है।[17]

**डिंगल सबद री व्युत्पत्ति :–** 'डिंगल' सबद री व्युत्पत्ति बाबत केई मत प्रचलित दीसै पण बिंया अै सगळा अनुमान रै आधार माथै हैं :–

1. डॉ. एल.पी. टैसीटरी डिंगल नै गंवारू अर अनगढ भासा कही, पण आ बात तर्कसंगत नी लागै। डिंगल पढ़्या–लिख्या चारणां री भासा रैयी है पछै उण रो आपरो छंद–सास्त्र, रस, अलंकार इत्याद भी हो अर आपरै बखत में राजदरबार में मान–सम्मान सूं सुणीजती रैयी है।

2. श्री हरप्रसाद शास्त्री 'डिंगल' री व्युत्पत्ति 'डगळ' या 'डगर' सबद सूं मानैं पण ओ मत भी मान्य नी कह्यो जा सकै। वां रो कैवणो है के 'डगळ' पैलां जगळ या मरूदेस री भासा रो नांव हो पछै पिंगल री तुक माथै डिंगल हुयग्यो। वै आपरै मत में अेक दूहो भी उदाहरण सारू प्रस्तुत करैं:–

**दीसै जगल–डगल जेथ जल बगल चाटे ।**
**अनहुता गल दिये , गळा हुंता गल काटे ।।**

3. श्री गजराज ओझा रै मुताबिक 'ड' वर्ण री प्रधानता रै कारण पिंगल रै वजन माथै डिंगल नांव पड़्यो। पण ओ मत भी मंजूर नी कर्‌यो जा सकै क्यूंके 'ड' वर्ण प्रधान मान लेवणो उचित नी।

4. श्री पुरूषोत्तम स्वामी रो मानणो है के 'डिंगल' सबद डिम+गळ सूं बण्यो है। 'डिम' रो अर्थ डमरू री आवाज अर गळ रो मतलब गळै सूं है इण वास्तै गळै सूं डिम–डिम री आवाज में निकळ'र जिकी कविता वीरां नै बिड़दावै, वा डिंगळ है। पण ओ मत भी निराधार है।

5. प्रो. नरोत्तमदास स्वामी डिंगल री व्युत्पत्ति रै बाबत दो संभावना अभिव्यक्त करै। पैली संभावना आ हुय सकै के पिंगल नागराज री समानता में उडिंगल नागराज री कल्पना करीजी हुवै क्यूंके इण में उडिंगल सबद ई डिंगल रो मूल कह्यो जा सकै है।

6. डॉ. मोतीलाल मेनारिया डिंगल सबद रो सम्बन्ध डींग सूं मानै अर वां रै मुताबिक डिंगल रो अर्थ उण भासा सूं है जिण रै ग्रंथां में डींग बघारी हुवै। चारण लोग दरबारी कवि हा अर आपरै आस्रयदाता री खूब चढ़ा–बढ़ा'र प्रसंसा करता। डॉ. मेनारिया रो मानणो है के आज भी बुजुर्ग चारण डिंगल नी कैय'र 'डींगल' सबद रो प्रयोग करैं।

इण तरै आप–आपरै अंदाज सूं डिंगल सबद री व्युत्पत्ति री तलास केई विद्वान करी है पण भासा विग्यान रै किणी ठोस आधार रै अभाव में, किणी मत नै मंजूर नी कर्‌यो जा सकै।

आं सगळी बातां रै बावजूद डिंगल रो अखूट साहित्य है। डॉ. मेनारिया लिख्यो है के डिंगल साहित्य में राजस्थान रा सैकड़ू वरसा रा संस्कार, जुझारू लोकजीवन अर इतियासू चेतना रो सांतरो रूप दीसै। डिंगल साहित्य में इतियास सूं जुड़ियोड़ी मोकळी सामग्री है अर मध्ययुग रै इतियास लेखन में आ घणी सहायक हुय सकै। डिंगल रो साहित्य गद्य अर पद्य दोनूं विधावां में मिलै। गद्य सामग्री में ख्यात, बात, विगत अर पीढ़ी–वंसावली मिलै। चरित्र–नायक रै रूप में लिख्योड़ा ग्रंथां में रासो, प्रकास, विलास, रूपक, वचनिका अर छंदा रै रूप में रच्योड़ा ग्रंथां में नीसाणी, झूलणा, वेली, धमाल, गीत अर दूहा इत्याद हैं। डिंगल में फुटकर रूप सूं कविता, दूहा, कवित्त अर गीतां रो मोकळो भंडार है।

डिंगल मूल रूप सूं वीर रस प्रधान काव्य है बिंया वीर रस रै अलावा प्रसंगवस दूजा रस भी आया हैं। डिंगल रै अलंकारां में 'वयण सगाई' डिंगल रो चावो अलंकार है अर इण रो जैड़ो प्रयोग डिंगल में मिलै,

वैड़ो किणी दूजी भासावां में नी। ओ डिंगल भासा रो खुद रो अलंकार कहीजसी।

**राजस्थानी साहित्य : काल विभाजन :–** राजस्थानी साहित्य सिरजण री अेक लूंठी परम्परा रैयी है अर बखत मुजब इण रै मांय केई तरै रा उतार–चढ़ाव भी आवता रैया है। इण स्थिति में साहित्य रै विकासक्रम नै समझता थकां इण में आयोड़ा बदळाव नै प्रव्रत्तियां रै संदर्भ में अंवेरणो घणो जरूरी है। इण वास्तै साहित्य रै काल विभाजन सूं राजस्थानी रै साहित्य रो मोल–महत्त भी आंकीजै।

अब सवाल उठै के काल विभाजन रो आधार कांई हुवै क्यूंके साहित्य में तो सगळै भांत री प्रव्रत्तियां रैयी हैं इण वास्त नामकरण रो सही आधार तो प्रव्रति ई मानीजणी चाइजै। राजस्थानी साहित्य रै काल विभाजन करण वाळा विद्वानां में डॉ. एल.पी. टेसीटरी, डॉ. मोतीलाल मेनारिया, सीताराम लालस, गजराज ओझा इत्याद प्रमुख हैं। प्रो. नरोत्तमदास स्वामी अर डॉ. हीरालाल माहेश्वरी राजस्थानी साहित्य रै इतियास रो काल विभाजन इण मुजब करियो हैं :–

आरम्भ काल – सन् 1050 सूं 1450 तांई
मध्य काल – सन् 1450 सूं 1850 तांई
आधुनिक काल – सन् 1850 सूं अब लग

इणी भांत आधुनिक काल नै भी दो भागां में विभाजित करियो है –

आजादी सूं पैलां – सन् 1850 सूं 1947 तांई
आजादी रै पछै – सल् 1947 सूं आगै

काल री सींव तय करता थकां प्रो0 नरोत्तमदास स्वामी उण विसेसतावां री तरफ संकेत दियो जिकी सं. 1200 रै अेड़ै–छेड़ै निजर आवण लागी ही। इण तथ्य रै आधार माथै ही आधुनिक भासावां रै काल विभाजन री सीमा सं. 1200 रै आसै–पासै मानी। डॉ. हीरालाल माहेश्वरी रो मत है के सं. 1200 सूं पैलां ई वै विसेसतावां उभरबा लागी ही, इण वास्तै सं. 1100 सूं आथूंणी राजस्थानी रो आदिकाल मानणो चाइजै। सुरू में राजस्थानी अर गुजराती अेक ही। गुजराती रा विद्वान भी आ मानै के हेमचन्द्र रै वखत में जिकी बोलचाल री भासा ही उणनै 'ऊगती गुजराती' कही गई पण संभव है के 'ऊगती गुजराती' हेमचन्द्र रै बखत सूं पैलां भी प्रचलित हुय सकै, इण वास्तै गुजराती रा विद्वान भी प्राचीन पश्चिमी राजस्थानी या ऊगती गुजराती रो काल मोटै रूप में सं. 1100 सूं ई मानै। इण सूं आ बात साफ प्रगट हुवै के विद्वान लोग राजस्थानी साहित्य री परम्परा दसवीं–ग्यारवीं सताब्दी सूं मानै पण राजस्थानी रो उद्गम इण सूं भी घणो जूनो है। डॉ. हजारी प्रसाद द्विवेदी रो मानणो है के दसवीं सताब्दी में राजस्थानी मांय मोकळो साहित्य मिलै। जठै तांई राजस्थानी में लिख्योड़ा 'चरित्र काव्य' रो सवाल है वै तो सातवीं सताब्दी में लिख्योड़ा मानै। इण वास्तै राजस्थानी साहित्य री परम्परा घणी जूनी मानी जा सकै।

**राजस्थानी री मान्यता रो सवाल :–** भासा विग्यान री दीठ सूं राजस्थानी अेक सुतंतर भासा है अर इण रो नुवो अर जूनो अखूट साहित्य भी है। राजस्थानी भासा रो आपरो सबद कोस, व्याकरण अर नुवो साहित्य भी है। आज भी राजस्थानी में नुवो साहित्य लिख्यो जा रैयो है, पत्र– पत्रिकावां भी छपै। पण राजस्थानी री संवैधानिक मान्यता में केई तरै री बाधावां आ रैयी हैं।

सवाल ओ है के जद संविधान री आठवीं सूची में देस री मणिपुरी, कोंकणी जैड़ी छोटी–छोटी भासावां नै मान्यता मिलगी तो राजस्थानी नै क्यूंनी? राजस्थानी रै संदर्भ में अेकरूपता रो सवाल बेबुनियाद है। हर भासा री न्यारी–न्यारी बोलियां भी हुवै। राजस्थान री भी पांच बोलियां हैं पण पछै भी राजस्थानी रो अेक मानक सरूप भी है तो उण रो विसाल साहित्य भी। राज्य सरकार री तरफ सूं 'राजस्थानी भाषा, साहित्य एवं संस्क्रति अकादमी' री थरपना, जोधपुर विश्वविधालय में एम.ए. स्तर तांई राजस्थानी नै

पाठ्यक्रम में राखणो, माध्यमिक शिक्षा बोर्ड रै पाठ्यक्रम में भी राजस्थानी नै अेक विसै रै रूप में लागू करणो, राजस्थानी रै प्रकासन अर पुरस्कारां री योजना इत्याद नै देखता थकां ओ लागै के राजस्थानी भासा जे आज आपरी मान्यता सारू आवाज उठावै तो , वो उण रो हक है – अेक पुख्तै आधार रै साथै। आज राजस्थानी जनता अर रचनाकारां में भासाई जागरूकता जरूरी है। आ तयसुदा बात है के किणी छेत्र री पिछाण बठै री भासा, साहित्य अर संस्क्रति सूं हुवै। राजस्थानी भासा नै देस री आठवीं सूची में सामिल करणै री मांग साव वाजिब है। राज्य री विधान सभा लारलै सत्र (अगस्त 2003) में सर्वसम्मति सूं राजस्थानी भासा री मानता रो प्रस्ताव पारित करनै केन्द्र सरकार कन्नै भेज दियो है अबै केन्द्र सरकार रो निरणै भासाई मान्यता सारू जरूरी है।

**संदर्भ :–**


1. राजस्थानी साहित्य : एक परिचय , पृ. 19 – 20 ।
2. राजस्थानी साहित्य का इतिहास : डॉ. पुरूषोत्तम मेनारिया, पृ. 4
3. राजस्थानी साहित्य का इतिहास : डॉ. पुरूषोत्तम मेनारिया, पृ. 4
4. मिलिटरी मैयायर्स ऑफ मि0 जार्ज टॉमस, पृ. 347, सन् 1805
5. राजस्थानी भाषा अर साहित्य : डॉ. हीरालाल माहेश्वरी, पृ. 4
6. हिन्दी साहित्य का इतिहास : डॉ. नगेन्द्र, पृ. 22
7. लिग्विस्टिक सर्वे ऑफ इंडिया, वोल्यूम IX भाग II
8. राजस्थानी भासा : डॉ. चाटुर्ज्या, पृ. 45
9. राजस्थानी भासा और साहित्य, पृ. 4
10. राजस्थानी भाषा और साहित्य : डॉ. हीरालाल माहेश्वरी, पृ. 34
11. डिंगल में वीर रस : डॉ. मेनारिया, पृ. 1
12. राजस्थानी साहित्य का संक्षिप्त इतिहास : डॉ. गोरधन सिंह शेखावत, पृ. 10
13. भारतीय आर्य भासाएं और हिन्दी : डॉ. चाटुर्ज्या, पृ. 185
14. राजस्थानी साहित्य : एक परिचय, पृ. 17
15. बांकीदास ग्रंथावली, भाग दो, पृ. 81, ना.प्र.स.
16. वंशभास्कर, प्रथम भाग, पृ. 140
17. संयुक्त राजस्थान, वर्ष 6, संख्या 8, मार्च 1957, पृ. 31

# अध्याय : 2
# आरम्भ काल ( सन् 1050 सूं 1450 ई. )

किणी भी काल रै इतियास नै समझणै सारू उण काल रै परिवेस नै भी चोखी तरियां समझ लेवणो चाइजै, क्यूंके साहित्य आप रै परिवेस री उपज हुवै। इण वास्तै जद आपां आरम्भ काल माथै विचार करां तो जरूरी है के उण काल री राजनीतिक, धारमिक अर सामाजिक स्थितियां नै भी गैराई सूं समझ लेवणी चाइजै। इतियास में उल्लेख है के हर्षवर्द्धन अंतिम हिन्दू सम्राट हो अर उण रै बखत सूं ई देस माथै बारै सूं मुसलमानां रा हमला सरू हुयग्या हा अर हर्षवर्द्धन उणां रो मुकाबलो करणै में सफल भी हुयो। हर्षवर्द्धन री मिरतू रै पछै दिल्ली री सत्ता में बिखराव आयग्यो। उण बखत जिका भी हिन्दू राजा सांमी आया, वै जुद्ध री आग में लगौलग जूझता रैया। आठवीं सताब्दी सूं पंदरवीं सताब्दी तांई भारतीय इतियास राजनीतिक दीठ सूं उथळ – पुथळ आक्रमण, जुद्ध, अव्यवस्था, राजावां री आपसी फूट अर कलह रो हो, जिण रो प्रभाव ईं बखत रै साहित्य में साफ–साफ लखावै, इण सूं लागै के ईं काल में किणी अेक प्रव्रति री प्रधानता नी रैयी।[1]

**राजनीतिक परिवेश :–** हर्षवर्द्धन री मिरतू रै पछै उत्तरादै भारत में प्रतिहारां रै अेक विसाल अर समरथ साम्राज्य री नींव पड़ी पण प्रतिहारां री सत्ता रै कमजोर हुवतां ई दूजा सामन्त आप–आप रै सुतंतर राज्य री थरपना में लागग्या। इण सामन्ता में चौहानां रो स्थान सिरै हो। सांभर, जालोर, नागौर, भड़ौच, नाडोल इत्याद आं रा खास सत्ता केन्द्र हा। आं में सपादलक्ष रा चौहान इतियास में आपरी सूरवीरता अर साम्राज्यवादी भावना वास्तै घणा विख्यात रैया। पृथ्वीराज चौहान तृतीय (सन् 1172 – 1192) जद सिंहासन माथै बिराज्या, उण बखत मुसलमानां रो दबाब बढ़तो ई गयो। सन् 1178 ई. में मोहम्मद गौरी रो भारत माथै हमलो हुयो, वो दिल्ली सूं गुजरतो हुयो ठेठ गुजरात तांई पूग्यो अर उण नै सेवट परास्त हुवणो पड्यो। चौहानां नै दिखणादी अर आथूंणी दिसा सूं चालुक्यां रो भी कीं डर हो। दक्खिण –पूरब में उण बखत महोबा रा चंदेल राजावां रो राज हो। सन् 1182 में पृथ्वीराज चंदेलां माथै आक्रमण करियो। इण जुग में आल्हा–ऊदल नांव रा दो अैड़ा पराक्रमी वीर जोधा हा जिका राजा परमाल री मदद करी। 'पृथ्वीराज रासो' अर 'परमाल रासो' में इण जुद्ध रो सांतरो उल्लेख है।

इण बखत मेवाड़ में गुहिल वंस रो प्रभाव हो। आठवीं सताब्दी में इण वंस में पराक्रमी शासक बप्पा रावल हुया। इण वंस नै कदै चितौड़ रा मोर्य, कन्नौज रा प्रतिहार, गुजरात रा चालुक्य, मालवा रा परमार अर साकम्भरी रा चौहानां रै अधिकार में रैवणो पड्यो। बारवीं सदी रै आखिर में जालोर रो कीर्तिपाल मेवाड़ रा सासक सामन्त सिंह नै परास्त करनै मेवाड़ माथै आपरो कब्जो कर लियो।

रणथम्भौर रै चौहान राजावां में हम्मीरदेव अंतिम सासक हो। '**हम्मीर काव्य**' अर '**हम्मीर रासो**' में हम्मीर री वीरता अर पराक्रम रो वरणन है। सन् 1299 ई. में अलाउद्दीन खिलजी रो रणथम्भौर माथै आक्रमण हुयो अर रणथम्भौर री घेराबंदी करी। इण जुद्ध में अलाउद्दीन साथै जुद्ध करता थकां हम्मीर वीरगति पाई अर राजपूत राणियां जौहर करियो। सन् 1301 में रणथम्भोर माथै अलाउद्दीन रो अधिकार हुयग्यो। अर इण पछै वो चितौड़ माथै हमलो बोल दियो क्यूंके अलाउद्दीन चितौड़ रा राजा रतनसेन री राणी पद्मिनी रै रूप माथै मुग्ध हो। सेवट रानी पद्मिनी आपरी दूजी राणियां रै साथै जौहर करियो अर अलाउद्दीन नै चितौड़ रै किले में चिता री राख मिली। इण पछै अलाउद्दीन अर जालोर सासक कान्हड़दे रै जुद्धां रो सजीव वरणन है।

अठीनै मेवाड़ रै राज्य में भी उथळ–पुथळ हुवती रैयी। पैलां चितौड़ माथै अलाउद्दीन को अधिकार हुयो तो पछै हम्मीर फेरू चितौड़ नै कब्जै में लियो। हम्मीर रै पछै उण रो बड़ो लड़को छेत्र सिंह राणा बण्यो। छेत्र सिंह रै पछै महाराणा लाखा रै बेटै–पोतै राव चूंड़ा, रणमल, कान्हा इत्याद रो मेवाड़ में सासन रैयो। कान्हा री मिरतू पछै मारवाड़ में गद्दी लेवण वास्तै घर में ही जुद्ध हुयो। रणमल नै मेवाड़ री गद्दी मिलगी।

रणमल रै जावण रै पछै मालवा रै सुलतान होशंगशाह रो मेवाड़ रै गागरोण किलै माथै आक्रमण हुयो। इण जुद्ध में किलै री रिच्छा करणवाला अचलदास खींची वीरगति पाई। 'अचलदास खींची री वचनिका' में इण जुद्ध रो पूरो वरणन मिलै।

मोकल रै निधन पछै चितौड़ माथै राणा कुंभा (सन् 1433 सूं 1468 तांई) रो सासन रैयो अर मेवाड़ रै निरमाण वास्तै कुंभा रो योगदान सगळा सूं बत्तो रैयो ।

इण राजनीतिक स्थिति सूं मैसूस हुवै के ओ बखत जुद्धां रो हो अर लगौलग जुद्ध हुवता रैता। इण बखत चारण कवियां जिको काव्य लिख्यो वो बखत री जरूरत मुजब वीररस सूं भरियोड़ो हो।

राजस्थानी भासा रै आरम्भ काल में जिको साहित्य मिलै उणनै नीचै लिख्योड़ै मुजब बांट्यो जा सकै है :–

1. जैन साहित्य
2. लौकिक साहित्य
3. चारण साहित्य

**1. जैन साहित्य :–** राजस्थानी रै आरम्भ काल में जैन साहित्य रो घणो महत्त्व है। आपरै धरम रै प्रचार–प्रसार वास्तै जैन साधु जिण तरियां प्राक्रत अर अपभ्रंस नै अपणायी, उणीज भांत आगै चाल'र राजस्थानी भासा नै भी आपरो माध्यम स्वीकार्यो। 12वीं सदी रै उत्तराधै बखत में भलांई छोटी–छोटी पोथ्यां लिखीजी हुवै पण बै प्रचुर मात्रा में उपलब्ध हुवण लागी। विसै अर सैली री विविधता री द्रस्टि सूं जैन साहित्य सरू सूं ई महताऊ गिणीजै। जैन साहित्य रो मुख्य द्रस्टिकोण धारमिक अर चरित्र–निरमाण रो हो। इण साहित्य में रस री द्रस्टि सूं सान्त रस री प्रधानता रैयी है। प्रो. नरोत्तमदास स्वामी रै सबदां में कैवां तो जैन साहित्य री दूजी विसेसता उण रै गद्य रो अभाव लखावै पण राजस्थान में चौदवीं सदी सूं गद्य साहित्य बरोबर मिलै अर मोकळो मिलै।[2] जैन साहित्य री कथावां तो आपरी न्यारी विसेसता राखैं। आ काव्य कृतियां रो मुख्य उद्धेश्य आम आदमी रै मन में धरम रै प्रति रूझाण पैदा करणो हो। आं री भासा जन साधारण री बोल–चाल री भासा ही।

डॉ. हीरालाल माहेश्वरी जैन साहित्य रै पद्य नै च्यार मोटै भागां में इण ढ़ग सूं बांटयो है :–

**(1) चरित काव्य या कथाकाव्य :–** चरित काव्य दो प्रकार रा मिलै– इतियासू अर पौराणिक। अै काव्य प्रसिद्ध महापुरसां रै जीवन सूं जुड़ियोड़ा है। काव्य रूप री विविधता भी आं री खासियत कहीजै, जिंया रास, चौपई, ढ़ाल, पवाड़ा, संधि, चर्चरी, प्रबन्ध चरित्र, सम्बन्ध, आख्यानक, कथा इत्याद।

**(2) उत्सव काव्य :–** आं रो आयोजन किणी तिंवार या विसेस औसर सूं जुड़ियोड़ो हुवै। इण में फागु, धमाल, बारहमासा, विवाहलो, बेलि, धवल, मंगल आद नांव दिरीजिया हैं।

**(3) नीति काव्य :–** अै काव्य मुख्य रूप सूं नीति या उपदेस देवण सारू रच्योड़ा है। आं रै रचना – प्रकारां में संवाद, कक्का–मात का बावनी, कुलक, हीयाली आद है।

**(4) स्तुति काव्य :–** इण ढंग रा काव्य तीरथंकरां, साधुपुरसां अर तीरथस्थलां री स्तुति में लिख्योड़ा है। अै रचनावां छोटी–छोटी हैं अर स्तुति, स्तवन, स्तोत्र, सज्झाय, बीनती, गीत, नमस्कार इत्यादि नांव सूं मिलै।

इण सूं लागै के जैन कवि चरित, फागु, रास आद सैलियां अर काव्य रै केई रूपां नै अपणाया।

आं में '**रास**' घणी प्रभावसाली सैली ही जिका में तीरथंकरां रै जीवन चरित नै अेक आदर्स रै रूप में '**रास**' नांव सूं कविता में प्रस्तुत करियो। राजस्थानी रै इण आरम्भ काल माथै गुजराती रो प्रभाव भी साफ दीसै। इण तरै ओ कह्यो जा सकै है के राजस्थानी रै आरम्भ काल री रचनावां में जैन–साहित्य रो महताऊ योगदान है। ग्यारवीं अर चौदहवीं सदी रै साहित्य रै इतियास लेखण सारू जैन साहित्य रो प्रमुख आधार है। जैन समाज जिंया–किंया आपरै इण जूनै साहित्य नै आज तांई भी बचाय राख्यो है, आ बड़ी बात है।

जैन साहित्य री प्रमुख कृतियां रो परिचै इण भांत है :–

**भरतेश्वर–बाहुबलि धोर :–** आ कृति वज्रसेन सूरि री लिख्योड़ी है अर इण रो रचनाकाल सं. 1125 है। आ राजस्थानी भासा री सगळा सूं पुराणी रचना है जिकी मारू गूर्जर भासा में रच्योड़ी है। 48 छंदा में लिख्योड़ी ईं रचना में भरतेश्वर बाहुबलि रै जुद्ध रो वरणन है इण में वीर अर सान्त रस रो प्रभावी चित्रण मिलै।

**भरतेश्वर बाहुबलि रास :–** आ रचना वज्रसेन सूरि रा पट्टधर सालिभद्र सूरी संवत् 1241 में लिखी। ओ जैन साहित्य री रास परम्परा रो पैलो ग्रंथ है। इण ग्रंथ में भरतेश्वर अर बाहुबलि रो चरित्र–वरणन है। अपभ्रंस भासा में आं दोनूं चरित्र –नायकां नै लेय'र केई काव्य–कृतियां लिख्योड़ी हैं। इण री कथा इण भांत है के भरतेश्वर अर बाहुबलि अयोध्यावासी तीरथंकर रिखबदेव रा बेटा हा। भरत उमर में बड़ा हा इण वास्तै बांनै अयोध्या रो अर बाहुबलि छोटा हा इण वास्तै बांनै तक्षसिला रो राज दियो । ई ग्रंथ में दोनूं वीरां रै पराक्रम अर वीरता रो प्रभावी वरणन है। सेवट हिंसा अर वीरता रै पछै उण में विरक्ति रो भाव दरसाणो, ईं काव्य को मूल मकसद रैयो है। '**भरत –बाहुबलि रास**' देसी छंदा अर राग–रागनिया में लिख्योड़ो खंड काव्य है। प्रो. नरोत्तमदास स्वामी रै मत में सालिभद्र सूरि राजस्थानी रा महताऊ कवि हैं।[3] काव्य में नाटकीयता, टेढ़ा–मेढ़ा कथन अर अनुप्रास री सुन्दर छटा है। सेना, हाथी, घोड़ा अर सैनिकां रो खूब चढ़ा–बढ़ा'र बखान करियोड़ो है। इण काव्य रो अेक उदाहरण इण भांत है :–

**प्रहि उग्गमि पूरब दिसिहि , पहिलउं चालिय चक्क ।**
**धूजिय धरयल थरहर एं , चलिय कुचाचल चक्क ।।**

**बुद्धिरास :–** आ रचना भी सालिभद्र सूरि री लिख्योड़ी है। इण रै मांय 63 छंद हैं आ में भोळा–भाळा लोगां सारू '**सिखावण**' दियोड़ा है। सगळा छंदा में नीति, उपदेस अर ज्ञान री छोटी–छोटी बातां कह्योड़ी हैं। इण में लोक–व्यवहार, सामान्य आचरण अर सद्गति पावण सारू केई सीधी सरल उक्तियां हैं जिण रै कारण आ रचना घणी लोकचावी हुयी। '**बुद्धिरास**' री नीतिगत बातां में जठै सरलता है, बठै केई जगां गूढ़ता भी है जियां महानता सारू स्पष्ट मत बोलो।

**जीवदया रास :–** आ रचना जालोर रा जैन कवि '**आसगु**' री लिख्योड़ी है। इण रो रचना काल संवत् 1257 है। इणमें कुल 53 छंद है। मिनख में दया अर करूणा भाव उपजावणो, इण काव्य रो मुख्य मकसद है। इण कृति में जैन तीरथंकरां रो भी कठै–कठै वरणन मिलै।

**चंदनबाला रास :–** ओ 35 छंद रो खंडकाव्य है अर इण रा रचनाकार भी जैन कवि आसगु हैं। इण री कथानायिका जैन परम्परा री प्रसिद्ध सती चंदनबाला है जिकी चम्पानगरी रा राजा दधिवाहन री बेटी है। आ केवै के अेकर कौसम्बी रो राजा सतानीक चम्पानगरी माथै आक्रमण करियो अर उणरो सेनापति चंदनबाला रो अपहरण कर लियो अर पछै उणनै अेक सेठ नै बेच दी। सेठ चंदनबाला नै प्रताड़ित करी पण वा आपरै सती–धरम माथै अडिग रैयी। सेवट भगवान महावीर सूं दीक्षा लेय'र मौत पाई। भाव–चित्रण री दीठ सूं आ कृति मारमिक अर करूणा सूं ओतप्रोत है।

**जम्बू स्वामी रास :–** प्रस्तुत रचना महेन्द्र सूरि रै सिस्य धरम री लिख्योड़ी है इण रो रचना काल संवत् 1266 मानीजै। इण में विख्यात जम्बू स्वामी री कथा नै कविता में बांधी है। कुल 41 पद्य है। कथा मारमिक अर उपदेस देवण वाळी है।

**नेमिनाथ बारहमासा अर आबू रास :–** अै दोनूं रचनावां पाल्हण कवि री रच्योड़ी है। नेमिनाथ बारहमासा में 16 पद्य है अर आबूरास में 51 पद्य है। आं रचनावां रो रचनाकाल वि.सं. 1289 है। जम्बू स्वामी रास री भांत जैन काव्य में नेमिनाथ अर राजमती रा प्रेम–प्रसंग घणा चावा रैया हैं। नेमिनाथ तेइसवां तीरथंकर हा अर महाराजा समुद्र विजय रा पुत्र हा। उणां रो ब्याब उग्रसेन री बेटी राजमती रै साथै तय हुयो हो। कैवै हैं के नेमिनाथ आपरै ब्याव सूं पैलां बरात रै भोजन सारू अेकठ करियोड़ा जानवरां री करूण पुकार सुणी तो उणां रो हिरदौ पसीज उठ्यो अर वै संसार नै त्याग'र तपस्या सारू गिरनार चल्या गया। पछै जदै राजमती नै इण घटना रो ठा पड़्यो तो घणो दुःख हुयो अर नेमिनाथ रो अनुसरण करता थकां दीक्सा लेली। 'नेमिनाथ बारहमासो' मारू–गुर्जर कविता रा पैलो बारहमासो मानीजै।

**'आबू रास'** में मंत्री विमल अर वस्तुपाल तेजपाल रा आबू परबत माथै बणायोड़ा जैन मदिरां रो उल्लेख है।

**शांतिनाथ देव रास :–** लक्ष्मीनाथ तिलक वि.सं. 1313 में '**शांतिनाथ देव रास**' री रचना करी। इण रचना में जैन धरम रै सोलवै तीरथंकर शांतिनाथ रै जीवन री कथा कहीजी है। इतियास री द्रस्टि सूं भी आ रचना महताऊ है क्यूंके इण में केई इतियास रा तथ्य भी मिलै। इण में ओ तथ्य उजागर हुयो है कि जिनपति वि.सं. 1201 में खेड़ गांव में अर जिनेश्वर सूरि वि.सं. 1256 में जालौर में तीरथंकर शांतिनाथ री मूरती थरपी।

**रेवंतगिरि रास :–** आ विजयसेन सूरि री लिख्योड़ी काव्य कृती है। इण री रचना सं. 1231 रै अैड़े –छेड़ै हुई। इण में तीरथंकर नेमिनाथ री प्रतिमा अर रेवंतगिरि तीरथ रो वरणन है। इण में प्रक्रति रो सुन्दर चित्रण है।

जैन साहित्य री दूजी रचनावां में महावीर रास (वि.सं. 1307) विनयचन्द्र रो नेमिनाथ चउपई (वि.सं. 1325) सोममूर्ति री च्यार छोटी रचनावां – जिनेश्वर सूरि विवाह वरणन रास, जिन प्रबोध सूरि चर्चरी, गुरावली रेलुआ तथा जिन प्रबोध सूरि बोलिका (वि.सं. 1331) उदयधर्म रो '**उवएसमाल कहाणय छप्पय**' 81 छप्पय, रल्ह या राजसिंह रो '**जिणदत्त चरित**' (वि.सं. 1354) मुनि राजतिलक रो '**शालिभद्र रास**' जिनप्रभ सूरि रो '**पद्मावती चौपई**' (वि.सं. 1385) जिनपद सूरि रो '**स्थूलिभद्र फाग**'(वि.सं.1390) पूर्णिमागच्छ रै शालिभद्र सूरि रो '**पंच पांडव चरित रास**' (वि.सं. 1410) उपाध्याय विनयप्रभ रो '**गौतम स्वामी रास**' (वि.सं.1412) जयसेखर सूरि रो '**त्रिभुवन दीपक प्रबंध**' 'नेमिनाथ फागु' अर '**अरबुदाचल वीनती**' (वि.सं. 1462) तथा हीरानंद सूरि '**वस्तुपाल तेजपाल**' (वि.सं. 1485) प्रमुख है। दूजै कवियां में राजशेखर सूरि, महोपाध्याय जयसागर, देवपाल इत्याद उल्लेखजोग हैं। इण बात सूं प्रगट हुवै के राजस्थानी रै आरम्भ काल में सैकड़ों जैन कवि आपरी रचनावां सूं राजस्थानी भासा नै समरिद्ध करी।

**2. लौकिक साहित्य :–** राजस्थानी साहित्य रै आरम्भ में लौकिक साहित्य भी उपलब्ध हुवै। बिंया जैन ग्रंथ अर हेमचन्द्र रै अपभ्रंस व्याकरण में भी प्रेम, सिणगार, विरह, वीरता इत्याद रा अलेखूं दूहा मिलै। आं में कीं दूहा तो फेर–बदल रै साथ आज भी लोक में चावा मानीजै। लौकिक काव्य में जिकी काव्य रचनावां मिलै, उण रो परिचै इण भांत है :–

**बीसलदेव रासो :–** 'बीसलदेव रासो' नरपति नाल्ह कवि रो वि.सं. 1212 में रच्योड़ो काव्य है। इण ग्रंथ में इण रचना रै काल रो उल्लेख इण मुजब हुयो है :–

**बारह सै बहोतरां हां मझारी ।**
**जेठ बदी नवमी बुधिवार ।।**

कीं विद्वान इण पंगती रो अरथ सं. 1272 भी लगावै पण अधिकांस विद्वान इण रो रचनाकाल सं. 1212 ही मानै। कवि नाल्ह नै बीसलदेव चतुर्थ रो समकालीन बतायो है पण नाल्ह रै बाबत कोई प्रामाणिक

सामग्री अजै लग नी मिली।

डॉ॰ माता प्रसाद गुप्त '**बीसलदेव रासो**' रै 128 छंदा रो सांतरो सम्पादन करियो है।[4] डॉ0 मोतीलाल मेनारिया रै कैवणै रै मुजब इण में च्यार खंड हैं अर कुल मिलाय'र 216 छंद में ओ ग्रंथ पूरो हुयो है। इण री भासा गुजराती–राजस्थानी रो मिल्यो–जुल्यो रूप है।[5] बीलसदेव रासो वियोग सिंणगार री श्रेस्ठ रचना है। इण री कथा रो रूप इण तरै मिलै। बीसलदेव अजमेर रो चौहान सासक हो अर इण रो ब्याव धारानगरी रा राजा भोज परमार री पुत्री राजमती रै साथै हुयो। अेकर बातां ई बातां में राजमती कीं चुभती बात बीसलदेव नै कह दी। उण री तीखी व्यंग्य बात नै सुण'र राजा नाराज हुय'र उड़ीसा चल्यो गयो अर बारह बरस तांई नी आयो तो राजमती आपरै व्यंग्य वचनां माथै पछताणै लागी। सेवट दुःखी होय'र अेक पंडित रै साथै संदेस भेज्यो अर बीसलदेव पूठो आयग्यो।

इण काव्य में प्रेम रै सुभाविक रूप रो ओपतो चित्रण है। इण रै साथै ई साथै वियोग अर संयोग पखां रो ई मारमिक वरणन है। इण में '**मेघदूत**' अर '**संदेशरासक**' री संदेस परम्परा भी मिलै। काव्य में सामन्ती जीवन सारू आक्रोस अर नारी सुलभ भावनावां री विवसता अर लाचारी भी देखणजोग है। राजमती री तीखी व्यंग्यवाणी किणी भी कठोर हिरदैवाळा मिनख नै द्रवित कर सकै है। राजस्थान री प्रक्रति रो मनमोवणो सरूप '**बीसलदेव रासो**' में है। विरह की विभिन्न स्थितियां में प्रक्रति चित्रण घणो मददगार सिद्ध हुयो है।

'**बीसलदेव रासो**' री भासा बोलचाल री है इण सूं लागै के इण रो रचनाकार घणो पढ्यो लिख्यो नी हो। बीसलदेव रासो काव्य रो अेक नमूनो इण भांत है :–

**प्रीय तो चालियो कातिग मास, सूना मंदिर घर कविलास।**
**सूना चउरा चोखण्डी , नयण गमायो पंथि सरि जाई ।।**
**भूख नहीं त्रीस उछळी , उणी घड़ां नींद कहा थी होई ।**
**आघण कर दिन छोटा होई ,सखी संदेशो मोकलोऊ कोई ।।**

**हंसावली :–** असाइत कवि रो '**हंसावली**' नांव सूं अेक प्रेमकाव्य मिलै। इण री रचना वि.सं. 1427 में हुयोड़ी है। इण काव्य में चौपाई छंद री प्रधानता है पण बिच्चै–बिच्चै कठै दूहा भी मिलै। आ रचना सरल अर सरस है।

'**हसांवली'** रो रचनाकार असाइत सिद्धपुर में पैदा हुयो अर वो जाति सूं औदिच्य ब्राह्मण हो। '**हंसावली'** काव्य रो अेक नमूनो इण भांत है :–

**किलकिलती वन विचरती वर बीसास ।**
**सधि सामी साहस कीउ, हूँ अेकली निरास ।।**
**भणि असाइत भव अंतरि,समरि सामणी कंत ।**
**हंसाउलि धरती ढळी पीउ पीउ मुखि भणंति ।।**

**बसन्त विलास :–** '**बसन्त विलास'** लौकिक काव्य री उत्तम दरजै री रचना है। डॉ. माता प्रसाद गुप्त इण रै महत्त्व नै स्वीकारता थकां ओ लिख्यो है के आ अेक घणी सरस साहित्यिक रचना है अर आधुनिक भारतीय आर्य भासा साहित्य रै आदिकाल रै इतियास में बेजोड़ है।[7]

इण कृति रै रचनाकार रो अबार तांई ठा नी पड्यो। इण रचना में चौरासी दूहा है जिणमें बसन्त अर लुगायां नै प्रभावित करण वाळै विलासी प्रभाव रो सांतरो चित्रण है।

इण काव्य में अेक तरफ प्रक्रति तो दूजै कांनी मदमस्त नारी रै विलासी सुभाव रा मारमिक चितराम हैं। ओ काव्य सरसता अर सिणगारू भावनावां री दीठ सूं सिरै। इण कृति में आदिकाल रै

जन–जीवन रो वो पख उजागर हुयो है जिणनै आचार्य रामचन्द्र शुक्ल सायद तलवारां री झणझणाट में नी सुण सक्या। नारी प्रक्रति अर पुरूस रै मदमस्त रूप री अैड़ी सांतरी झांकी
इण काव्य में दीसै जिकी रीतिकाल रा सिणगारू कवियां रै वरणन में भी नी। बतौर मिसाल :–

**इणि परि कोइलि कूजई, पूजइ युवति मणोर ।**
**विधुर वियोगिनि धूजइ, कूजह मयण किसोर ।।**

लौकिक काव्य रै मांय जिकी दूजी काव्य कृति मिलै, उण में अेक है –**'श्रृंगार शतक'**। इणमें 105 छंद है अर इण री रचना सं. 1354 में हुयी।

संवत् 1409 में भीम '**सद्यवत्स वीर प्रबंध**' काव्य लिख्यो। इण में 730 छंद है अर इण रो आख्यान राजस्थान, गुजरात अर आसै–पासै रै इलाकै में घणो प्रचलित है ।

माणक्य सुन्दर सूरि '**मलय सुन्दरी कथा**' नांव सूं प्रेमाख्यान लिख्यो। इण रो रचना काल वि.सं. 1421 है। लौकिक काव्य री इण परम्परा में हीरानंद सूरि रो लिख्योड़ो 'विद्याविलास पवाड़उ' (वि.सं. 1428) अर हीर भाट रचित '**मानवती विनयवती प्रबंध**' भी मिलै। घाघ अर भड्डरी री मौसम सम्बन्धी कहावतां भी सायद इणी बखत में लिख्योड़ी हैं।

**3. चारण साहित्य :–** चारण साहित्य सूं मतलब चारण सैली में लिख्योड़ै साहित्य सूं है। ओ काव्य चारण जाति रा कवियां रै अलावा ब्राह्मण, राजपूत, ढाढी, ढोली, राव, सेवक इत्याद जाति रा कवियां रो लिख्योड़ो है। चारण जाति री आ विसेसता ही के वा कविता भी लिखी तो बखत आयां जुद्धभूमि में भी आपरी सूरवीरता रो परिचै भी दियो। राजस्थान में चारण जाति रो राजपूत कौम सूं गाढ़ो सम्बन्ध रह्यो है अै लोग राजपूतां रै राजदरबार में रैय'र जठै उणां नै बिड़दावता, बठै वां री कीरत अर जस रो गुणगान भी करता। ओ ई कारण है के आं रै साहित्य में वीरत्व रो सजीव रूप उजागर हुयो है। चारण साहित्य घणो समरिद्ध अर विकसित है अर ईं री देस–विदेस रा विद्वान प्रसंसा भी करी है। आं रै साहित्य में वीर अर सिंणगार रस री प्रधानता हुवता थकां भी सगळा रसां रो प्रभावी चित्रण मिलै। चारण ऊंचै दरजै रा भगत भी हुया है। आं रो सगळो साहित्य अैतिहासिक संदर्भ सूं उपज्योड़ो अर घणो महताऊ है। प्रो. नरोत्तमदास स्वामी रै मत में चारणी सैली रो साहित्य वीर रसात्मक अर इतियासू है। इण री भासा डिंगल है। डॉ. हीरालाल माहेश्वरी रो भी ओ ई कैवणो है के चारण साहित्य री विसेस बात आ है के ओ अैतिहासिक तथ्यां सूं भरपूर है। वै चारण साहित्य नै दो भागां में बांट्यो है[8] –

1. अैतिहासिक – वीर रसात्मक
2. पौराणिक अर धारमिक

राजस्थानी साहित्य रै आरम्भ काल री कीं महताऊ रचनावां नीचै लिखी मुजब हैं :–

**रणमल्ल छंद :–** ओ काव्य श्रीधर व्यास रो लिख्योड़ो है जिको ईडर रै राजा रणमल रो समकालीन हो। इण ग्रंथ रो रचनाकाल वि.सं. 1457 मानीजै। रणमल्ल छंद में 70 पद्य है। ईं काव्य में पाटण रै सूबैदार जफर खां अर रणमल्ल रै जुद्ध रो वरणन मिलै। इण री भासा ओजस्वी, अलंकारमयी अर सजीव है। अैतिहासिक रूप सूं इण काव्य रो घणो महत्त्व है। इण काव्य रो अेक उदाहरण इण भांत है :–

**दमदमकार दमाय दमक्कह , ढमढम ढमढम ढोल ढमक्कई**
**तरवर वेस पहट्टई , तररर , तुरक पड़इ तलहट्टिई ।।**

श्रीधर व्यास आपरै बखत रा महताऊ कवि हा जिका वीररसात्मक काव्य रै अलावा धारमिक अर पौराणिक काव्य भी लिख्या। '**रणमल्ल छंद**' रै अलावा श्रीधर व्यास री दूजी काव्य कृतियां में '**सप्तसती रा छंद**' (120 छंद), '**कवित्त भागवत**' (127 छंद) इत्याद है।

**वीरमायण :–** इतियासू द्रस्टि सूं महताऊ काव्य परम्परा में वीरमायण काव्य उल्लेखजोग है। इण काव्य रो रचनाकार बादर जाति रो मुसलमान ढाढी हो क्यूं के कवि खुद लिख्यो है के–

**बादर ढाढ़ी बोलियो निसाणी गलां ।**

**'वीरमायण'** काव्य रै रचनाकार अर रचना काल बाबत विद्वानां रा अलग–अलग मत हैं। पं. रामकरण आसोपा '**वीरमायण'** काव्य रो रचनाकार रामचन्द्र नै मानै, पण ओ मत उचित नी लागै। डॉ. मोतीलाल मेनारिया इण ग्रंथ रै रचनाकाल रै विसै में दो बातां कैवैं। पैली बात तो आ है के इण रो रचना काल वि.सं. 1440 मान्यो जावै अर ओ कवि राव वीरमजी रै आसरित हो। दूजै कांनी वै इण ग्रंथ नै अठारवीं सदी री रचना भी कैवै।[9] प्रो. नरोत्तमदास स्वामी इण नै चारण सैली री सरूपौत री रचनावां में ठौड़ देवैं।[10] डॉ. हीरालाल माहेश्वरी **वीरमायण** रो रचना काल वि.सं. 1460 रै पछै वि.सं. 1500 रै अेड़ै–छेड़ै मानै। इण ग्रंथ में कुल 285 छंद है अर इण में मंडोवर रै राव मल्लिनाथ रै बेटै जगमाल अर उण रै भतीजै वीरम रो जोइया रै साथै हुई लड़ाई रो वरणन है। इण में निसाणी छंद रो प्रयोग हुयो है। **वीरमायण** वीर रस री ओजस्वी अर उत्तम दरजै री रचना है। अठै अेक उदाहरण प्रस्तुत हैः–

**बटका डडगा बगतरां झटका कर झाड़ै,**
**पतसाहां दल़ पाधरै राठौड़ रमाड़ै ।**
**घोड़ा आगल़ गैब का बाजा बजवाड़ै,**
**तेग बहे भूतां तणी राठौड़ अगाड़ै ।**

इतियास री द्रस्टि सूं ओ काव्य घणो महताऊ है क्यूंके इण में राठौड़ां अर जोइया रै बारै में घणकरा इतियासू तथ्य है जिंका इतियास लेखन रै मतलब सूं पढ़णजोग है। **वीरमायण** में इण काव्य रै नायक रो यथारथकारी वरणन मिलै। भासा में प्रवाह अर सजीवता अैड़ी है के भोत कम रचनावां में मिलै।

इणीज भांत '**सप्तसती**' अर '**कवित्त भागवत**' नांव सूं भी दो चारण सैली री रचनावां मिलै जिणां रै मांय वीरता अर धारमिक भावनावां रो सांतरो वरणन है।

**अचलदास खींची री वचनिका :–** इण रो रचनाकार सिवदास गाडण है। वचनिका रै रचनाकाल बाबत कवि कीं नी लिख्यो। आ गद्य–पद्य मिस्रित छोटी सी रचना है। इण रै मांय दोहा, सोरठा अर कुंडलिया छंद रो प्रयोग हुयो है। इण में गद्य–पद्य रा कुल 120 छंद है। भासा–भाव अर साहित्य परम्परा री दीठ सूं आ अेक महताऊ कृति है।

इण वचनिका में गागरोनगढ़ रै राजा अचलदास खींची अर मांडू रै मुसलमान सुलतान होसंगसाह गोरी रै जुद्ध रो सजीव वरणन है। वचनिका रै कथानक रा दो भाग है अेक भाग में तो गागरोण रै किलै माथै बादस्या रो हमलो अर दूजै भाग में राजपूत नारियां रो जौहर वरणन है। डॉ. हीरालाल माहेश्वरी रै कैवणै मुजब– 'जुद्ध रो समै वि.सं. 1480 अर इण रो रचनाकाल वि.सं. 1500 रै आसै–पासै मानणो चाइजै'।[11] वचनिका वीर रस प्रधान रचना है पण अेक जगां करूण रस रो भी उल्लेख मिलै **वचनिका** रै प्रस्तुतिकरण री सैली '**वात**' सैली सूं मिलती–जुलती है अर आ भी हुय सकै है के कवि जन–साधारण री भावनावां नै ध्यान में राख'र ई इण काव्य री रचना करी हुवै। इतियासू दीठ सूं तो आ रचना घणी उल्लेखजोग नी पण काव्य अर भासा री दीठ सूं इण रो अेक महताऊ पख मैसूस हुवै। अेक उदाहरण देखो :–

**बिहूं छेहि बांणावली । सरपुडिंग सळळी,**
**अणी अणी अतुली षग षगां षळी,**

**रूधिर धार रळतळी , बहु नाचै कुमुद महाबली,**
**आलूझै आंत्रावली । आलय अचलेसरि अडयां ।**

कवि सिवदास गाडण इण जुद्ध नै आपरी आंख्या सूं देख्यो हो इण वास्तै जुद्ध वरणन में सजीवता अर यथारथता है। आ वचनिका चारण साहित्य री महताऊ कृतियां रै मांय अेक गिणीजै। वचनिका रो गद्य घणो सांतरो है। बात सैली रो सैज प्रवाह अर ओज है मसलन जिंया –

**अेक सीह नै पाखर्‌यौ । सूरसिहाइति आदर्‌यो । पंचामृत अभी परगस्यौ । महादान आछइ धड़इ । दूध मांहि साकर पड़ै । सोनो अर सुवास अेक अचल कथै सिवदासू ।**

इणी तरै जाखा मणिहार री अेक रचना '**हरिचंद पुराण**' (वि.सं. 1453) भी चारण साहित्य री चोखी रचना है।

**आरम्भ काल री उपलब्धि :–** राजस्थानी साहित्य रै इतियास रो ओ बखत साहित्यिक दीठ सूं महताऊ मानीजै। इण काल रै साहित्य माथै विचार करां तो ठा पड़ै के इण में चारण सैली, लौकिक सैली अर जैन सैली में साहित्य लिख्यो गयो। जैन सैली रै साहित्य में विविधता अर प्रचुरता है। राजस्थानी रै आरम्भ काल रो महताऊ साहित्य जैन साहित्य है। इण सूं ओ ठा पड़ै के जैन कवि जठै साहित्य रो निरमाण करता रैया बठै वै दूजां री लिखी रचनावां नै भी अंवेरता रैया। राजस्थानी साहित्य री देखभाळ अर रिच्छा तांई जैन विद्वानां रा प्रयास निस्चै ई उल्लेखजोग मान्या जावैला। प्रो. नरोत्तमदास स्वामी लिख्यो है के जैन विद्वान साहित्य री रचना ई नी करी, वै साहित्य नै संभाल'र राख्यो। जे जैन विद्वान साहित्य री संभाल नी करता तो पुराणै बखत रो साहित्य आज आपां नै नी मिलतो। जैन कवियां रै अलावा दूजै लोगां रा लिख्योड़ा सैंकड़ा ग्रंथ आज जैन भण्डारा में सुभाविक रूप सूं मिल जावै।[12] जे बै ओ काम नी करता तो सायद घणकरो साहित्य नस्ट भी हुय सकै हो।

भासा री दीठ सूं देख्यो जावै तो इण काल री भासा गुजराती–राजस्थानी मिस्रित है अर केई रचनावां में अपभ्रंस भासा रो प्रभाव भी दीसै । पण ईंया लागै के आरम्भ काल में राजस्थानी धीरै–धीरै साहित्य सिरजण रो माध्यम बणीजण लागी अर पछै वा आगै चाल'र गुजराती सूं अलग हुयगी। भासा री दीठ सूं राजस्थानी रा केई रूप विकसित हुय रैया हा। चारणी साहित्य में उण रो साहित्यिक रूप डिंगल रै रूप में तो जैन साहित्य में राजस्थानी रो लौकिक रूप सीधै–सरल रूप में लोगां रै सांमी आवण लाग्यो हो।

विसै अर सिल्प री दीठ सूं राजस्थान रो आरम्भ काल घणो महताऊ है। ईं काल रै साहित्य में इण काल रै साहित्य री परम्परावां रो रूप भी आपरै मूलभाव साथै दीखण लाग्यो। जैन साहित्य में धारमिक भावना अर चरित नायकां रै प्रेरणादायी आख्यानां रै माध्यम सूं चरित्र निरमाण माथै जोर दियो गयो। इंया ही चारणी साहित्य में वीर रस तो लौकिक साहित्य में सिंणगारू भावना रो सुभाविक चित्रण मिलै। इण काल रै साहित्य में सान्त, वीर अर सिणगार रस री प्रधानता रैयी अर इण वास्तै जिका विसै लिया गया, वांरा छेत्र भी आं रसां सूं जुड़ियोड़ा है अठै अेकानी जुद्ध भोम सूं भाग'र मोक्स री भावना है तो दूजै कांनी जुद्धभूमि में जुद्ध री पुकार अर ललकार है। प्रेम अर सिणगार भावना रो सांचो अर मोवणो रूप इण काल री काव्य रचनानां री संवेदना है। इण वास्तै आरम्भ काल रा काव्य रो मूल आधार धरम, प्रेम, सिणगार अर वीर भावना रैयी ।

सिल्प री दीठ सूं देखा तो इण बखत रै साहित्य में विविधता है। जैन कवि आपरै सिरजण में काव्य रै कई रूपां नै अपणाया अर आं रो प्रभाव आगै आवण वाळी रचनावां माथै भी साफ लखावै। जैन कवि '**रास**' नै अेक प्रभावसाली रचना–सैली रै रूप में अपणायो अर जैन तीरथंकर अर उणां रै जीवन–चरित अर

आदर्स नै '**रास**' रै माध्यम सूं प्रस्तुति दी। लौकिक काव्यां में बीसलदेव जैड़ी रचना भी आई तो इण विसै सूं हट'र दूजै विसयां मायै ई काव्य लिखीज्या। इण काल रै साहित्य में प्रक्रति रा केई रूप दिखाई देवै। जैन काव्य में काव्य रूपां री विविधता है जिंया रास, चौपई, ढाल, पवाड़ा, संधि, चर्चरी प्रवाद, चरित्र, आख्यान इत्याद। '**वचनिका**' चारण साहित्य री अेक नुंवी विधा ही जिण में गद्य अर पद्य दोनूं मिल्योड़ा हा। '**वचनिका**' रो आगै चाल'र अैड़ो प्रभाव पड़्यो के मध्यकाल में केई वचनिकावां लिखीजी।

छंद री दीठ सूं भी इण काल रै साहित्य में विविधता रैयी। दूहा, छप्पय, तोटक, तोमर, चौपई आद छंदा रो प्रयोग चारणी साहित्य में खूब हुयो। '**दूहो**' तो आरम्भ सूं ही राजस्थानी रो चावो छंद रैयो है। '**अचलदास खींची री वचनिका**' अैड़ो ई काव्य है जिण रै मांय गद्य अर पद्य रो मिस्रित रूप है। इण काल में कथा–वरणन री आपरी निजू सैली है। **वचनिका** नै चम्पू काव्य री संग्या दी जा सकै है । **वचनिका** छोटी हुवतां थकां भी आरम्भ काल री अेक विसेस उल्लेखजोग कृती है। इण सूं आ बात भी प्रकट हुवै के राजस्थानी में गद्य रो उद्भव 14वीं सदी रै मध्य में हुयो।

सैली माथै विचार करां तो ठा पड़ै के जैन कवियां री लोकगीतां री तरज माथै लिख्योड़ी रचनावां भी मिलै। सरू में लोकगीत री पैली ओळी दे दी अर पछै उणी वजन पर काव्य–रचना करी। अैतिहासिक दीठ सूं आं लोकगीत परक रचनावां रो घणो महत्त्व है। जैन कवि लोक प्रचलित अर परम्परागत कथावां नै आपरी रचनावां में इण ढंग सूं ठौड़ दी के बै आज लोक साहित्य री धरोहर मानीजै। जैन काव्य में कठै–कठै काव्य–रूढ़ियां रो प्रयोग भी मिलै।

इण द्रस्टि सूं देखां तो निस्चै ई आरम्भ काल रो योगदान घणो महताऊ है – कथ्य अर सिल्प रै परिपेख में। आरम्भ काल री विसेसतावां में धरम भावना रो सात्विक रूप, प्रेम री उदात्तता, गद्य रो उद्भव, वीर रस प्रधान ओजस्वी कविता, जुद्धां रो सजीव चित्रण इत्याद हैं। आरम्भ काल री कीं रचनावां तो भाव–भासा री दीठ सूं भी प्रौढ़ अर प्रेरणादायी हैं।

**संदर्भ :–**


1. हिन्दी साहित्य का साहित्य : डॉ॰ नगेन्द्र , पृ. 70
2. राजस्थानी साहित्य : एक परिचय, प्रो. नरोत्तमदास स्वामी, पृ. 22–23
3. ,, ,, ,, ,, ,, ,, पृ. 25
4. हिन्दी साहित्य का इतिहास : डॉ. नगेन्द्र, पृ. 86
5. हिन्दी भासा और साहित्य, पृ. 89
6. बसन्त विलास और उसकी भासा : डॉ॰ माताप्रसाद गुप्त, पृ. 9
7. राजस्थानी साहित्य : एक परिचय , पृ. 25
8. राजस्थानी साहित्य, पृ. 70
9. डिंगल में वीर रस, पृ. 226
10. राजस्थानी साहित्य : एक परिचय, पृ. 29
11. राजस्थानी भासा और साहित्य, पृ. 83
12. राजस्थानी साहित्य : एक परिचय, पृ. 27


**अभ्यास सारू सवाल :–**

**वस्तुनिस्ठ सवाल :**

1. बुद्धिरास रचना किण री है ?

(अ) व्रजसेन सूरि (ब) महेन्द्र सूरि

(स) आसगु (द) विजयसेन सूरी ( )

2. नेमिनाथ चउपई रो रचनाकार कुण है ?
   (अ) विजयचन्द्र (ब) उदयधर्म
   (स) शालिभद्र सूरि (द) हीरानंद सूरि ( )
3. नरपति नाल्ह री रचना कुणसी है ?
   (अ) हंसावली (ब) बसंत विलास
   (स) हंसराज–बच्छराज चौपाई (द) वीसलदेव रासो ( )
4. लौकिक साहित्य री कुणसी रचना है ?
   (अ) बसंत विलास (ब) रणमल्ल छंद
   (स) वीरमायण (द) अचलदास खींची री वचनिका ( )
5. श्रीधर व्यास री लिख्योड़ी रचना कुणसी है ?
   (अ) वीसलदेव रासो (ब) हंसावली
   (स) रेवंतगिरि रास (द) रणमल्ल छंद ( )
6. 'अचलदास खींची री वचनिका' किण ढंग रो काव्य है ?
   (अ) प्रबंध काव्य (ब) खंडकाव्य
   (स) लौकिक काव्य (द) चम्पू काव्य ( )
7. 'वीसलदेव रासो' में कुण सो रस है ?
   (अ) वीर रस (ब) करूण रस
5. जैन काव्य रो कांई उदेस हो ?
6. चारण काव्य में कुण सै रसां री प्रधानता है ?
7. वीसलदेव रासो री भासा किण भांत री है ?
8. प्रक्रति चित्रण री दीठ सूं कुण सो काव्य महताऊ है ?

**निबंध रूप में सवाल :**

1. चारण साहित्य रो कांई महत्त्व है ?
2. जैन साहित्य रै योगदान बाबत लिखो ?
3. लौकिक साहित्य री विसेसतावां बतावो ?
4. आरम्भ काल रै साहित्य रो कांई योगदान है ?
5. चरित्र काव्य सूं कांई मतलब समझो हो ?
6. उत्सव काव्य कुण सा है ?
7. लौकिक साहित्य री किणी उत्तम रचना रो वरणन करो?
8. आरम्भ काल में सगळा सूं बेसी रचनावां कुण सा कवियां री मिलै?

# अध्याय : 3

# मध्यकाल ( सन् 1450 सूं 1850 ई0 )

साहित्य रै सम्बन्ध में ओ अेक महताऊ कथण है के साहित्य आपरै परिवेस सूं उपजै अर परिवेस नै ई प्रगटै। राजस्थानी रो रचनाकार आपरी जिण स्थितियां सूं जुड़ियोड़ो हो, उणां री ईमानदार अभिव्यक्ति वो आपरै साहित्य में करतो रैयो। राजस्थानी साहित्य रै मध्यकाल माथै विचार करां तो आपां नै इण बखत रै राजनीतू अर धारमिक परिवेस नै देखणो घणो लाजमी है।

**राजनीतिक परिवेस :–** मध्यकाल में राजस्थान रै इतियास माथै विचार करां तो प्रतीत हुवै के चौहानां रै पतन रै पछै राजस्थान में की नुवां सासकां रौ उदै, दिल्ली में मुसलमानां रै साम्राज्य री थरपना, वां रा अत्याचार अर अनाचार, अंग्रेजां रो सासन अर उणां री भी खिलाफत करता लोग–अै कीं बदलाव वाली स्थितियां ही जिण रो मध्यकाल में घणो महत्त्व हो।

राजस्थान में राजपूत लम्बै समै तांई मुसलमानां सूं लड़ता रैया पण आपसी फूट रै कारण, उणरो मुकाबलो नी कर सक्या अर छेलै उणां नै हारणो पड़्यो। मेवाड़ में कुंभा रै पछै उदयसिंह मेवाड़ री राजगद्दी माथै बिराज्या। उण बखत मेवाड़ी सामन्तां में फूट ही। ईडर सूं रायमल चितौड़ माथै आक्रमण करियो अर मेवाड़ रो राजा बण बैठ्यो। रायमल री मिरतू पछै महाराणा सांगा (सन् 1509) सिंहासन माथै बिराज्या। इतियासकारां रो लिखणो है के सोलवीं सदी रै आरम्भ में उतरादै भारत री स्थिति घणी नाजुक ही। दिल्ली में सिकंदर लोदी रो सासन हो। उण री मिरतू रै पछै इब्राहीम लोदी सुलतान बण्यो अर वो चितौड़ रै हमलै में राणा सांगा रै हाथ सूं मार्‌यो गयो। इणी भांत गुजरात अर मेवाड़ रै बिच्चै बराबर तनाव बढ़तो रैयो। उण बखत मारवाड़ रा राठौड़, आमेर रा कछावा अर हाड़ौती रा चौहान आप–आपरी ताकत नै बढ़ायता रैया अर आपरै राज्य रो विस्तार करियो। सन् 1508 में राव गांगा मारवाड़ रै सिंहासन माथै बिराज्या अर आपरै राज्य–विस्तार री योजनावां बणायी। सन् 1520 में पृथ्वीराज आमेर रा राजा बण्या अर वै भी आपरै राज नै बढ़ावण सारू कोसीस में लाग्या। अठीनै राणा सांगा अर बाबर रै बिच्चै खानवा में जुद्ध हुयो जिणमें राणा सांगा पराजित हुयग्या।

रणमल रो पाटवी बेटो राव जोधा हो जिको सन् 1459 में जोधपुर बसायो अर उणनै मारवाड़ री राजधानी बणायी। सन् 1489 में राव जोधा रो निधन हुयग्यो अर सातल, सूजा अर गांगा सासक बण्या। गांगा री मिरतू रै पछै सन् 1531 में मालदेव मारवाड़ रो सासक बण्यो। मालदेव खुद आपरै राज्य नै बढ़ावणो चायो इण वास्तै मेड़ता, अजमेर अर बीकानेर माथै कब्जो करियो। सन् 1562 में मालदेव रो देहान्त हुयगो। मालदेव रै पछै राजस्थान में मुगलां रै सैनिक केन्द्रां री थरपना हुई अर राजपूतां रै आपसी टकराव अर फूट सूं आखै प्रान्त री स्थिति दयनीय हुयगी।

मेवाड़ में जद महाराणा प्रताप राजगद्दी माथै बिराज्या उण बखत चितौड़ माथै मुगलां रो अधिकार हो अर जोधपुर, बीकानेर, जैसलमेर रा राजा अकबर री अधीनता स्वीकार कर चुक्या हा। जून 1576 में राणा प्रताप अर अकबर री सेना रै बिच्चै हल्दीघाटी में जुद्ध हुयो। कवि दुरसा आढ़ा आपरै ओजस्वी दूहा में प्रताप री सूरवीरता अर स्वाभिमान रो वरणन कर्‌यो।

औरंगजेब री मिरतू पछै मुगलां री सल्तनत रो पतन हुयग्यो। दुरसा आढ़ा री बिरूद छिहतरी। '**पृथ्वीराज राठौड़ री बेलि किसन रूकमणी**' री इणी काल री कृतियां हैं।

औरंगजेब री मिरतू रै पछै राजस्थान री राजनीति में कीं उथळ–पुथळ अर बदलाव आयो अर मराठा

सगती रो उदै हुयो अर धीरै–धीरै राजस्थान में मराठा सगती रो अधिकार जमतो गयो। राजपूत राजावां री हालत उण बखत चोखी नी ही। बै राग–रंग में डूबयोड़ा हा। इण वास्तै आपस में लड़ता–झगड़ता। भारत रै मांय उण समै अंग्रेजां री सगती रो विकास होय रैयो हो। इण वास्तै मराठा सगती नै दबावण सारू अंग्रेजां सूं मदद लेवण रो आग्रह जोधपुर,, जयपुर, कोटा रा सासक करियो, इण रो नतीजो ओ हुयो के अंग्रेजां रै मददगार होवण सूं राजपूत राजावां री सुतंतरता खत्म हुयगी अर आरथिक द्रस्टि सूं भी कमजोरी आयगी जिण सूं सामन्ता री भी खिलाफत हुवण लागी। सन् 1818 में राजस्थान री सगळी रियासतां अंग्रेजां री अधीनता स्वीकार करली जिण री प्रतिक्रिया सन् 1857 रो गदर हो।

इण तरै मध्यकाल री राजनीतू स्थितियां सूं साफ लागै के समाज में जुद्ध, अव्यवस्था, अराजकता अर आक्रमण री स्थिति ही। मुगलां रो पतन, अंग्रेजां रै खिलाफ बगावत रो भाव पैदा हुवणो प्रधान स्थितियां ही। सामाजिक परिवेस में असान्ति तो आरथिक छेत्र में कमजोरी ही। समाज उण बखत केई तरै री रूढ़ियां सूं जकड़ियोड़ो हो।

**मध्यकाल री खास प्रव्रतियां :–** मध्यकाल री रचनात्मकता बाबत विचार करां तो ठा पड़ै के उण बखत काव्य–विसै, काव्य रूप अर काव्य–सैलियां री विविधता ही। इण काल में जैन साहित्य, लौकिक साहित्य अर चारण साहित्य में अलेखूं रचनाकार हुया। इणी तरै आख्यान काव्य अर संत–काव्य रो निरमाण भी हुयो। चारण साहित्य में वीर, सिणगार अर भक्ति भावना सूं जुड़ियोड़ो साहित्य लिखीज्यो तो संत परम्परा में धारमिक सद्भाव अर परमात्मा रै निरगुण अर सगुण रूप नै लेय'र काव्य री रचना हुयी। अपभ्रंस काल री केई विसेसतावां मध्यकाल री साहित्य चेतना में भी आयी। राजस्थान में नाथ सम्प्रदाय रो प्रभाव तो सरूपोत सूं ई रैयो है। मध्यकाल रै संत साहित्य में केई अैड़ा पंथ दीसै जिणां री भगती–पद्धति माथै नाथ सम्प्रदाय रो परोख प्रभाव लखावै। मुसलमानां रै प्रभाव सरूप लोगां में पूजा–अरचना रो भाव कीं घणो बढ्यो।

मध्यकाल में जिका आख्यान लिख्या उणां रो उदेस लोकजीवण री लोक चेतना अर सांस्क्रतिक भावना नै मजबूत करणी ही। ओ ई कारण है के आं आख्यानां में जिका घटना–परसंग लिया गया, बै बोलचाल री साधारण भासा में लिखीज्या। आं रचनावां रो लोकरूचि री दीठ सूं घणो महत्त्व है।

पन्द्रहवीं सदी में राजस्थानी गुजराती सूं अलग हुय जावै। इण वास्तै ईं काल में राजस्थानी रो साहित्यिक रूप भी हो तो बोलचाल री भासा रो भी। इण काल में काव्य रूप अर सैलियां रै अलावा जिकी विसैगत विविधता ही, उण रै आधार माथै मध्यकाल नै जे सुवरण युग कह्यो जाय तो कोई अतिरंजना नी हुवैली। वीर, सिणगार अर भगती री ऊंचै दरजै री रचनावां री लूंठी परम्परा मध्यकाल में रैयी, जिकी गरबजोग है।

प्रव्रतियां रै माथै मध्यकाल रै साहित्य नै इण मुजब विभाजित कर्यो जा सकै :– 1. चारण काव्य

2. आख्यान काव्य
3. संत काव्य
4. लौकिक काव्य
5. जैन काव्य

**1. चारण काव्य :–** राजस्थानी साहित्य रै आरम्भ काल में चारण काव्य मिलै जिणरो सुर वीर रसात्मक हो क्यूंके उण बखत जुद्धमय स्थितियां ही। पन्द्रहवीं सदी सूं लेय'र 19वीं सदी रो बखत उथळ–पुथळ, अव्यवस्था, जुद्ध इत्याद रो हो। पैलां राजपूत अर मुगलां में जुद्ध, मुगलां रै पतन पछै अंग्रेजी सासन रो विस्तार अर कीं बरसां पछै अंग्रेजां री खिलाफत में गूंजता बगावत रा सुर। ईं राजनीतिक स्थिति रै कारण इण काल में जिको साहित्य लिख्यो गयो उण में देस, धरम अर संस्क्रति री रिच्छा सारू जूझणवाळा

मतवाळा वीरां रै जस रो बखान कर्‌यो गयो है।

चारण काव्य री खास धारावां नै दो भागां में बांट सकां :–

(क) अैतिहासिक वीर रसात्मक काव्य

(ख) पौराणिक धारमिक काव्य

**(क) अैतिहासिक वीर रसात्मक काव्य :–** इण धारा में अैड़ा चारण कवि आवैं जिका आपरै आस्रयदाता री सूरवीरता अर पराक्रम रो बखान कर्‌यो। अै कवि मोकै माथै जुद्ध भोम में जाय'र खुद तलवार भी चलायी है ओ ई कारण है के आं रै काव्य में वीर रस रो प्रभावसाली चित्रण मिलै। अै चारण कवि आपरै राजा रा समकालीन रैया हैं इण वास्तै आं रै काव्य में राजा अर उण रै सासन सम्बन्धी केई इतियासू तथ्य भी मिलै। आं रै काव्य में सिल्पगत विविधता भी ही। ईं काल में वीर रस री उत्तम दरजै री काव्य कृती मिलै जिकां में प्रबंध काव्य, वेलि, वचनिका इत्याद विसेस छंदा रो प्रयोग भी हुयो है।

कालक्रम नै ध्यान में राखतां थकां वीररसात्मक काव्य रै कवियां रो परिचै इण तरै है :–

**गाडण पसाइत :–** मध्यकाल रै चारण कवियां में गाडण पसाइत रो अेक प्रमुख स्थान है। पसाइत री रचनावां में '**राव रिणमल रो रूपक'** अर '**गुण जोधायण'** खास है। '**राव रिणमल रो रूपक'** विविध प्रकार रा 71 छंदा में लिख्योड़ो है जिणमें राव रिणमल रै जस अर कुंभा री मिरतू रो वरणन है। '**गुण जोधायण'** जोधपुर रा संस्थापक राव जोधा री प्रसंसा में लिख्योड़ो काव्य है। इण में भी कुल 75 छंद हैं। गाडण पसाइत री दूजी फुटकर रचनावां में '**कवित्त राव रिणमल चूंडै रै वैर में भाटिया नै मारिया तै समैरा**' '**कवित्त राव रिणमल नागौर रै धणी पैरोज नै मारिया तै समैरा**' अर '**कवित्त राणै मोकल़ मूआं री खबर आयां रा**' इत्याद है। पसाइत लोक चावा कवि हा।

**खिड़िया चानण :–** आपरै बखत रा ठावा अर चावा कवियां में खिड़िया चानण रो महताऊ स्थान है। अै राव राणा मोकल अर राव जोधा रा समकालीन हा। केई आं नै बीकानेर री थरपणा करणवाळा राव बीका रा समकालीन भी मानै। बीकाजी आं नै लाख पसाव भी दियो, अैड़ी बात भी कहीजै। मुक्तक काव्य रै रूप में खिड़िया री '**दूहा राव रिणमल रा**', '**दूहा राव रणधीर रा**' आद रचनावां उपलब्ध हैं। खिड़िया जग्गा भी आपरी रचना **वचनिका** में खिड़िया चानण रै '**दूहा राव रिणमल रा'** रो उल्लेख कर्‌यो है। आ बात ओ प्रमाण है के खिड़िया आपरै बखत में नामी–गिरामी कवि हा।

**सिंढ़ायच चौभुजा :–** वीर रसात्मक काव्य री सिरजणां करण वाळा कवियां में सिंढ़ायच चौभुजा रो आपरो महत्त्व है। आं री रचना रो काल संवत् 1500 रै आसै–पासै है। सिंढ़ायच भी राव रणमल रै बारै में काव्य लिख्यो है।

**पद्मनाभ :–** जालोर रा चौहान अखैराज रो राजदरबारी कवि पद्मनाभ हो। वि.सं. 1512 में '**कान्हड़दे प्रबन्ध'** री रचना पद्मनाभ करी। इण काव्य में जालोर रा सोनगिरा चौहान कान्हड़दे माथै अलाउद्दीन खिलजी आक्रमण करियो अर उण जुद्ध में कान्हड़दे केई वीरां रै साथै वीरगति पाई उण रो प्रभावी चित्रण है। कान्हड़दे प्रबंध च्यार खंडां में विभाजित है अर इण में चौपाई, दूहा, सवैया आद छंदा रो प्रयोग हुयो है। कान्हड़दे प्रबंध सोल़वीं सदी रा काव्यां में महताऊ स्थान राखै। इण काव्य रा सम्पादक प्रो. के.वी.व्यास इण री तुलना '**पृथ्वीराज रासो'** सूं करी है। इण काव्य में उण बखत री सामाजिक, धारमिक, आरथिक अर भूगोल सम्बन्धी परिस्थितियां रो सजीव चित्रण हुयो है। साहित्यिक दीठ सूं प्रसाद सैली में लिख्योड़ो **कान्हड़दे प्रबंध** अेक प्रौढ़ रचना है। इणमें पांच लौकिक सैली रा गीत अर दो गद्यांस भी दिया है। **कान्हड़दे प्रबंध** में कुल 1000 छंद हैं।

**भांडउ व्यास :–** भांडउ व्यास वि.सं. 1538 में रणथंभोर रा नामी अर हठी चौहान वीर हम्मीरदेव रै सम्बन्ध में '**हमीरायण'** काव्य लिख्यो। इण काव्य में हम्मीरदेव री वीरता, पराक्रम, सरणागत रिच्छा रो भाव

इत्याद रो सुन्दर चित्रण करियो है। इण रो कथानक 'कान्हड़दे प्रबंध' सूं मिलतो–जुलतो है। इण में कुल 321 छंद है। काव्य में दूहा, गाहा, चौपाई आद विविध छंदा रो प्रयोग हुयो है।

**वीठू सूजा :–** वीठू सूजा राव बीका अर लूणकरण रो समकालीन कवि हो। राव जैतसी वीठू नै जागीर रै रूप में अेक गांव भी दियो। वीठू 'राव जैतसी रो पाघड़ी छंद' नांव सूं अेक काव्य लिख्यो है, इण में 401 छंद है। इतियास री दीठ सूं ओ घणो महताऊ काव्य है ।

राव जैतसी सूं जुड़ियोड़ा दो दूजा काव्य 'राव जैतसी छंद' अर 'जैतसी रासो' भी मिलै पण आं रै रचनाकार बाबत कोई पुख्ता जाणकारी नी।

**बारहठ आसा :–** इण रो जलम वि.सं. 1563 रै आसै–पासै हुयो। अै राव मालदेव रा विसेस किरपापात्र हा। ख्यातनांव भक्त कवि ईसरदास इणां रा भतीजा हा। आं री कुल 7 रचनावां देखणै में आवै जिणा में 'उमादे भटियाणी रा कवित्त' अर 'बाघजी रा दूहा' घणा चावा हैं। उमादे भटियाणी इतियास में रूठी राणी रै नांव सूं विख्यात है। कैवैं के उमादे रो ब्याव जोधपुर रा राव मालदेव रै साथै हुयो उमादे ब्याव री पैली रात ई मालदेव सूं नाराज हुयगी। क्यूंके उमादे मालदेव नै उण री दासी भारमली सूं प्रेम करतां देख लियो। इण वास्तै वा मालदेव सूं रूसगी अर ता जिदंगी रूठी रैयी। भारमली पछै कोटड़ा रा स्वामी बाघजी रै साथै रैवण लागगी। बारठ आसा री दोनूं रचनावां उमादे अर बाघजी सूं सम्बन्धित है। 'बाघजी रा दूहा' करूण रस सूं अैड़ा भरपूर हैं के उणा नै सुण'र किणी भी सहिरदै व्यक्ति नै रोवणो आज्यावै। अै सोरठा बाघजी री मिरतू रै पछै लिख्या गया हैं आं नै राजस्थानी में पिछोला (मरसिया) कह्या जाय, जिंया–

**बाघा आव बळेह , धर कोटड़ै तू धणी ।**
**जासी फूल झड़ेह , बास न जासी बाघसी ।।**

**बीठू मेहा :–** बीठू मेहा रै रचनाकाल रै बारै में कोई प्रामाणिक तथ्य उपलब्ध नी। डॉ0 हीरालाल माहेश्वरी रै मत में इण रो रचनाकाल सतरवीं सताब्दी रै सरूआत में मान्यो जा सकै है।[1] आं री रचनावां में 'पाबूजी रा छंद', 'गोगाजी रा रसावला', 'करणीजी रा छंद', 'चांदाजी री बेल' आद प्रमुख है। 'पाबूजी रा छंद' में पाबूजी रो वचनद्रढ़ता अर वीरता रो चित्रण है अर आ बीठू मेहा री उत्तम रचना है।

**बारहठ ईसरदास :–** आं रो जलम जोधपुर राज्य रै भाद्रेस गांव में हुयो। आं रै जलम रै बारै में दो मत है। कीं विद्वान आं रो जलम वि.सं. 1595 मानै कीं वि.सं. 1515। डॉ. हीरालाल माहेश्वरी अर डॉ. मोतीलाल मेनारिया रै मत में ईसरदास रो जलम सं. 1595 में मानणो घणो उचित है।[2] ईसरदास भगत कवि हा पण बै वीर रस री कवितावां भी लिखी। चारण कवियों में ईसरदास कवि रै रूप में मानीजै। आं री कुल रचनावां 13 हैं जिंया– 1. हरिरस 2. छोटा हरिरस 3. बाललीला 4. गुण भागवत हंस 5. गरूड़पुराण 6. गुण आगम 7. निंदा स्तुति 8. देवियाण 9. गुण वैराट 10. सभा पर्व 11. हाला झाला रा कुडंलिया 12. राव कैलास अर 13. दाणलीला ।

बारहठ ईसरदास री रच्योड़ी 'हाला झाला रा कुंडलिया' राजस्थानी भासा री वीर रस री स्रेस्ठ रचना मानीजै। इण कृती में झाला रायसिंह अर हाला जसाजी रै बिच्चै हुयोड़ा जुद्ध रो आपरी आंख्यां सूं देख्योड़ै रूप में वरणन हुयो है। इण काव्य में वीर रस रो सजीव चित्रण है। आं काव्य ग्रंथा रै अलावा ईसरदास रा कीं फुटकर गीत अर दूहा भी लिख्योड़ा मिलै जिंया –

**सैल घमोड़ा किम सह्या किम सहिया गजदंत ।**
**कठण पयोधर लागतां, कसमसतो तू कंत ।।**

ईसरदास चमतकारी पुरूस हा। आं रै भगती रै चमतकार री अनेक दंत कथावां आज भी लोगां

रै मूंडा सूं सुणन मिलै। वां रो कैवणो हो के ईसरदास अलौकिक सिद्धि वाळा हा। इण वास्तै लोग बांनै **'ईसरा सो परमेसरा'** भी कैय'र पुकारता।

**दूदा आसिया :–** अै राव सुरताण रा किरपापात्र हा। आं री कीं फुटकर रचनावां मिलै जिका में वीर कल्ला माथै लिख्योड़ा कुंडलिया घणा चावा हुया हैं आं री संख्या 7 है।

**सांदू माला :–** सांदू माला कवि बीकानेर रा राजा रायसिंह रा समकालीन हा। रायसिंह आं नै पुरस्कार भी दिया। सांदू माला बादशाह अकबर, महाराणा प्रताप अर रायसिंह रै पराक्रम री कथा तीन अलग–अलग रचनावां में करी है। सांदू **'झूलणा'** छंद रा विसेस कवि मानीजै। आं री कीं रचनावां नीचै लिखी मुजब हैं :–

1. झूलणा महाराज रायसिंघ जी रा
2. झूलणा दीवांण श्री प्रतापसिंघ जी रा
3. झूलणा अकबर पातसाह जी रा

**दूरसा आढ़ा :–** मध्यकाल रा ख्यातनांव अर चावा कवियां में दुरसा आढ़ा रो नांव सिरै। श्री शंकरदान जेठा भाई रै मत में आं रो जलम वि.सं. 1595 में गांव जैतारण में हुयो अर बठै ई वि.सं. 1708 में सुरगवास भी। इंया कह्यो जावै के दुरसा आढ़ा जद छोटा हा, उण बखत ही आं रै पिताजी रो देहान्त हुयगो तो बगड़ी रा ठाकुर प्रताप सिंह आं रो पालन–पोसण कर्‌यो। दुरसा रा दिल्ली रा बादसाह अकबर सूं चोखा सम्बन्ध हा अर दरबार में भी चोखी प्रतिस्ठा। दुरसा हिन्दू धरम अर हिन्दू संस्क्रति रा घणा उपासक हा। ईं वास्तै हिन्दुवां री गरीब हालत नै देख'र अकबर री कूटनीति माथै व्यंग करता। आं री रचनावां में मेवाड़ रै राणा प्रताप, राव चन्द्रसेन अर राव सुरताण रै देसप्रेम री भावनावां नै ओजस्वी सुर में प्रस्तुत करी है।

दुरसा आढ़ा री प्रमुख रचनावां में '**विरुद छिहतरी**', '**किरतार बावनी**' इत्याद प्रमुख हैं। दुरसा आढ़ा री कीं 125 छोटी–बड़ी कृतियां, डिंगल अर फुटकर पद्य मिलै। आं में '**विरुद छिहतरी**' घणी चर्चित रैयी है। प्रबंध रचनावां झूलणा में '**राव अमरसिंह गजसिंघोत रा**' दुरसा आढ़ा री उत्तम रचना है। इण रो अेक उदाहरण इण भांत हैः–

**लौपै हिन्दू ताज, सगपण रोपै तुरक सूं**
**आरज कुल़ री आज, पूंजी राण प्रतापसी ।।**
**अकबर कूट अजाण, हिया फूट छोड़ै न हठ,**
**पगां न लागण पाण, पिणधर राण प्रतापसी ।।**

**दूदा विसराल :–** दूदा विसराल री लिख्योड़ा रचना '**राव रतनसिंह री बेलि**' है। इण में जैतारण रै सासक रतनसिंह रो मुगलां रै साथै हुयोड़ै जुद्ध रो वरणन है। 72 छंदा रो ओ काव्य वीर रस री उत्तम रचना कही जा सकै। इण में जुद्ध अर ब्याव रै रूपक रो निरवाह हुयो है।

**केसोदास गाडण :–** गाडण सतरवीं सताब्दी रा महान कवि हैं। जोधपुर रा महाराजा गजसिंह रा अै चावा कवि मानीजै। आं री लूंठी रचना '**गजगुण रूपक बध**' महाराज गजसिंह रै केई जुद्धां रै वरणन सूं भरपूर है। जुद्ध वरणन री प्रधानता सूं इणनै जुद्ध काव्य भी कह्यो जा सकै है। 130 छंदा में लिख्योड़ै इण प्रबंध काव्य में वीर रस रो सजीव चित्रण हुयो है। इण काव्य माथै नाथपंथ रो प्रभाव भी दीसै।

**महेसदास राव :–** आं री लिख्योड़ी सात रचनावां में '**बिन्हैरासो**' सगळा सूं बेसी ख्यातिवाळी रचना है। इण में शाहजहां रा तीन विद्रोही शाहजादा रा साही सेना साथै हुयोड़ै जुद्ध रो सजीव वरणन है। कठै–कठै गौड़ वीरां री वीरता भी उजागर हुयी है।

**गिरधर आसिया :–** आं रो 943 छंद रो लिख्योड़ो प्रबंध काव्य '**सगत रासो**' मिलै। इण में महाराणा प्रताप रै छोटै भाई सगतसिंह रै वीरतापूरण कामां रो चित्रण है।

**जग्गा खिड़िया :–** मध्यकालीन राजस्थानी साहित्य री रचनावां में जग्गा खिड़िया री लिख्योड़ी 'वचनिका राठौड़ रतनसिंह महेसदासोत री' ख्यातिनांव रचना (रचनाकाल वि.सं. 1715) है। इणमें रतलाम रै वीर योद्धा रतनसिंह अर साहजादा औरंगजेब रै बिच्चै हुयोड़ै जुद्ध रो सजीव वरणन है। सेवट रतनसिंह जुद्धभूमि में वीरगति पावै। कवि इण रचना में जुद्ध रो कंलात्मक वरणन अत्तो सांतरो कर्‌यो है के कविता रो आनंद आय ज्यावै।

**कुभणकर सांदू :–** सांदू रो वि.सं. 1732 रै अेड़ै–छेड़ै लिख्योड़ो 'रतनरासो' ग्रंथ मिलै। इण रै अलावा सांदू 'जयचंद रासो', 'महाराजा रायसिंह री सतियां रा कवित्त', फुटकर गीत अर दूहा लिख्या।

**रतनू वीरभाण :–** जोधपुर रै महाराजा अभयसिंह अर गुजरात रै शेर बुलन्द खां रै बिच्चै वि. सं. 1787 में अहमदाबाद में जुद्ध हुयो। ईं घटना–परसंग नै लेय'र राजस्थानी में तीन कवियां रा तीन काव्य मिलै। इण में रतनू वीरभाण रो 'राजरूपक' करणीदान रो 'सूरजप्रकास' अर खिड़िया बखता रो 'अहमदाबाद रा कवित्त' नांव सूं लिख्योड़ा काव्य मिलै। 'राजरूपक' अर 'सूरजप्रकास' वीर रस री उत्तम कृतियां है।

**हम्मीरदान रतनू :–** आं री नामी रचना '**देसलजी री वचनिका**' है बिंया आं रै बारै में कह्यो गयो है के आं रा केई विसयां माथै 175 ग्रंथ लिख्योड़ा हैं।

**आढ़ा पहाड़खान :–** आढ़ा '**गोगादे रूपक**' री रचना वि.सं. 1780 अर वि.सं. 1811 रै बिच्चै की। इण में राठौड़ गोगा रो जोइयां सूं जुद्ध कर'र वीरगति पावणै रो वरणन है। इण री कथा बादर ढाढी री रच्योड़ी वीरमायण सूं मिलती–जुलती है।

**गाडण गोपीनाथ :–** अठारवीं सताब्दी रै आरम्भ में गाडण गोपीनाथ '**ग्रंथराज**' री रचना करी जिको बीकानेर रा महाराजा गजसिंह सूं जुड़ियोड़ो है।

**खिड़िया हुकमीचंद :–** अै उन्नीसवीं सदी रा चावा गीतकार हा। आं रा डिंगल गीत घणा चर्चित रैया है। चारणां में आं रै गीतां नै कंठस्थ करणै री परम्परा रैयी है।

**आसिया बांकीदास :–** अै मध्यकाल रा छेला बड़ा कवि है। आं रो जलम जोधपुर रै पंचभद्रा छेत्र रै भाड़ियावास गांव में वि.सं. 1828 में हुयो। 16 बरस री उमर में जोधपुर आयग्या अर काव्य, व्याकरण, इतियास इत्याद री दीक्सा पाय'र उण बखत रा महाराजा मानसिंह जी रा किरपापात्र हुयग्या। बांकीदास संस्क्रत, डिंगल, फारसी अर ब्रज भासा रा विद्वान हा। आं रा 30 ग्रंथ अर कीं फुटकर गीत मिलै। बांकीदास आज डिंगल रा सिरै कवि मानीजै।

बांकीदास री कविता में आधुनिक जीवन री असंगतियां माथै ई तीखो प्रहार दीसै। अंग्रेजी साम्राज्यवाद रै खिलाफ बै देसवासियां नै आ जिकी चुणौती दी है वो '**चेतावनी रो गीत**' खासा चावो रैयो है। वां री कविता रो अेक नमूनो देखो :–

**सूर नै पूछै टीपणो , सुकन न देखै सूर ।**
**मरणां नै मंगल गिणै , समर चढै मुख नूर ।।**

हिन्दी कविता में रास्ट्रीय भावना री सरूआत भारतेन्दु री कविता सूं मानीजै पण अठै आ जाण'र इचरच हुवैलो के बांकीदास तो भोत पैलां हिन्दू–मुसलमानां सूं ऊपर उठ'र रास्ट्रीयता रै भाव नै इण भांत अभिव्यक्ति दीः–

**आयो इंगरेज मुलक रै ऊपर**
**राखो रे किहिक रजपूती, मरदां हिन्दू की मुसलमाण।**

इण तरै बांकीदास रो ओ उद्‌बोधन गीत उण युग री अेक महताऊ अर उल्लेखजोग रचना कहीजसी। डिंगल रै सिरै नांव कवि बांकीदास री रचनावां रो सम्पादन सौभाग्यसिंह शेखावत 'बांकीदास ग्रंथावली' नांव सूं कर्‌यो है। बांकीदास री दूजी पोथ्यां में 'जेहड़जस जड़ाव', 'भुरजाल़ भूषण', 'हमरोट

छतीसी', 'सिद्धराव छतीसी' इत्याद है। बांकीदास नै अंलकारां रो सांतरो ग्यान हो। उणा री कविता री बानगी रो अेक नमूनो :–

**सादूलो बन साहिबो, खाटै पग पग खून ।**
**कायरड़ा इण काम नूं, जंबूक कहै जबून ।।**
**नर कायर आणै नहीं, लूण लिहाज लगार ।**
**धोलै दिन छौड़ै धणी, ऊणी मिलै उण बार ।।**

वीर रस री कवितावां लिखण वाळा दूजा कवियां में संकरदान सामौर, बारहठ लाखा, कल्याणदास मेहडू इत्याद प्रमुख हैं।

**(ख) पौराणिक धारमिक काव्य :–** इण धारा में बै कवि आवै जिका पौराणिक प्रसंगां अर धारमिक भावना नै लेय'र काव्य लिख्यो। इण ढंग रै काव्य में सगळा अवतारां नै लेय'र रचनावां मिलै, पछै भी राम अर क्रस्ण नै लेय'र बेसी कवितावां हैं। इण रै अलावा कीं रचनावां चारणी देवी जिंया आवड़ जी, महमाय, चाळेराय, करणीजी सूं सम्बन्धित तो कीं निरगुण भगती री रचनावां भी मिलै। अठै प्रबंध अर मुक्तक काव्य री कीं महताऊ कृतियां रो परिचै कवियां रै साथै इण भांत दियो जा सकै है :–

**पृथ्वीराज राठौड़ :–** राठौड़ पृथ्वीराज बीकानेर नरेस राव कल्याणमल रा बेटा अर जैतसी रा पोता हा। आं रो जलम वि.सं. 1606 में अर निधन वि.सं. 1657 में हुयो। अै बहुमुखी प्रतिभा रा धणी अर राजस्थानी साहित्य रा स्रेस्ठ कवियां में अेक हैं। आं री ख्याति कवि अर भगत रै रूप में आखै जगत में है। आं नै डिंगल, ब्रज अर संस्क्रत रो गैरो ग्यान हो। प्रिथीराज स्वाभिमानी, खरी कैवण वाळा अर रास्ट्रीय विचारधारा सूं जुड़ियोड़ा हा। प्रिथीराज राठौड़ री नीचै लिखी रचनावां घणमोली अर साहित्यिक दीठ सूं उल्लेखजोग हैं :–

1. वेलि क्रिसन रूकमणी री
2. ठाकुर जी रा दूहा
3. गंगा जी रा दूहा
4. फुटकर दूहा अर गीत

प्रिथीराज राठौड़ री प्रमुख कृती 'वेलि क्रिसन रूकमणी री' है। इण कृती में भगती, सिणगार अर वीर रस रो सुन्दर समन्वय लखावै। 304 छंदा में लिख्योड़ी आ कृती क्रस्ण अर रूकमणी री प्रेमकथा नै लेय'र चालै। दुरसा आढ़ा इण कृती ने डिंगल री सरबस्रेस्ठ रचना मानता थकां पांचवो वेद अर उन्नीसवों पुराण बतायो है। 'वेलि' माथै केई विद्वान टीकावां लिखी जिण सूं इण री लोकप्रियता प्रगट हुवै। इण में कोई संदेह नी के भाव, कला, प्रक्रति चित्रण इत्याद री दीठ सूं आ रचना बेजोड़ है। सिणगार अर प्रेम रो चित्रण मौलिक, मारमिक अर नुंवोपणो लियोड़ो है। इण री भासा साहित्यिक राजस्थानी है अर इण में प्रसिद्ध छंद 'वेलियो गीत' रो प्रयोग हुयो है। अेक उदाहरण देखोः–

**संग सखी , कुल़ वेस समाणी , पेखि कली पदिमणी परि।**
**राजति राजकुअरि राय अंगण , उडियण अम्ब हरि ।।**

**किसनो :–** आं री प्रसिद्ध रचना '**महादेव पारबती री वेलि**' है जिण रै मांय 382 छंद है। इण रै मांय सिव अर पारबती रै साथै हुयोड़ा दो ब्यावां रो वरणन है। वेलि रै रचनाकार रूप में किसनउ (किसनो) नांव मिलै।

**केसोदास गाडण :–** केसोदास वीर रस री रचनावां रै साथै भगती विसै सूं जुड़ियोड़ी रचनावां भी लिखी। 'निसाणी विवेकवार', 'छंद महादेव जी रो' अर 'छंद श्री गोरखनाथ' गाडण री उल्लेखजोग

रचनावां हैं।

**माधोदास दधवाड़िया :–** दधवाड़िया रो जलम वि.सं. 1610 अर 1615 रै बिचै मेड़ता रै कनै बलूंदा गांव में हुयो। अै दधवाड़िया गौत्र रा चारण चूंडा जी रा बेटा हा। कवि होवणै रै साथै–साथै ऊंचै दरजै रा भगत भी हा। आं री प्रसिद्ध कृती 'राम रासो' है जिकी मध्ययुग री महताऊ काव्य कृतियां में अेक गिणीजै। बाल्मीकी री रचना सूं प्रेरित होय'र अै भाव अर भासा री दीठ सूं खासा महताऊ कृती लिखी है। आं री दूजी रचना 'निसाणी गजमोख' भी है।

**सायांजी झूला :–** आं रो जलम ईडर राज्य रा लीलछा गांव में वि.सं. 1632 में हुयो। सांया जी क्रस्ण रा गैरा भगत हा आं री रचनावां क्रस्ण भगती सूं सराबोर है। आं रा दो ग्रंथ मिलै– 'रूकमणी हरण' अर 'नागदमण'। नामदमण सांया जी री प्रौढ़ रचना गिणीजै इण में कालिय मर्दन री कथा है। नागदमण दरसाव वरणन, रूप वरणन अर संवादां री दीठ सूं विसेस रचना मानीजै। आं रो सुरगवास वि.सं. 1703 में हुयग्यो।

**सुरजनदास पूनिया (सं. 1640–1748) :–** आं रो जलम वि.सं. 1640 में हुयो। आं री रचनावां में 'कथा हरिगुण', 'कथा गजमोख' अर 'रामरासो' प्रमुख है। इण में रामरासो में 176 छंद हैं आ वीररस री कृती है अर कथावस्तु री दीठ सूं इण में नुंवोपणो भी है। आं रो सुरगवास वि.सं. 1748 में हुयो।

**कल्याणदास :–** आं री लिख्योड़ी पोथी 'गुण गोविन्द' (रचना काल वि.सं. 1700) है जिणमें राम अर क्रस्ण री लीलावां रो सांतरो अर मनमोवणो वरणन है। साहित्य री द्रस्टि सूं आ रचना घणी महताऊ है।

**बारहठ ईसरदास :–** 'हाला झालां रा कुंडलिया' रा रचनाकार ईसरदास कवि रै साथै भगत भी हा अर वां री भक्ति सम्बन्धी रचनावां में 'हरिरस', 'गुण निंदास्तुति' प्रमुख हैं।

**मुरारीदास बारहठ (सं. 1800–1890) :–** आं री लिख्योड़ी रचना 'गुण विजय ब्याह' मिलै इण रै मांय क्रस्ण अर रूकमणी सूं जुड़ियोड़ी कथा है।

**कृपाराम खिड़िया :–** अै खिड़िया शाखा रा चारण कवि हा। आं रो जलम जोधपुर छेत्र में खराड़ी गांव में हुयो। अै पछै सीकर रा रावराजा देवीसिंह कनै आयग्या अर रावराजा लक्ष्मणसिंह रै बखत तांई बठै रैया। आं नै रावराजा री तरफ सूं जागीर में गांव भी दियो जिको कृपाराम जी री ढ़ाणी रै नांव सूं जाणीजै। राजस्थानी नीति साहित्य में कृपाराम खिड़िया रो नांव सिरै गिणीजै। आं रा नीति सम्बन्धी सोरठा 'राजिया के सोरठे' नांव सूं घणा चावा है अर वै आज जणै–जणै रै कंठा में लोक जीवण रो हिस्सो बण'र सुणीजता रैवै। कृपाराम राजस्थानी नीति सम्बन्धी काव्य में सम्बोधन सैली रा पैला रचनाकार हैं। आं रो राजस्थानी नीति काव्य में मौलिक अर अनूठो योगदान हैं। सोरठा री बानगी देखो –

**मुख ऊपर मीठास, घट मांही खोटा घड़ै ।**
**इसड़ा सूं इखलास, राखीजै नहं राजिया ।।**
**काली घणी कुरूप, कसतूरी कांटा तुलै ।**
**सक्कर बड़ी सरूप, रोड़ा तुलै राजिया ।।**

राजिया कृपाराम रो सेवक हो उणनै सम्बोधन देय'र कृपाराम आपरै सेवक नै अमर कर दियो। आज घणकरा लोग आ मानै के अै सोरठा राजिया रा लिख्योड़ा हैं।

**ओपा आढ़ा :–** अै मध्ययुग रा छेला भगत कवि हैं। आं रो रचनाकाल वि.सं. 1860 सूं 1890 रै बिच्चै मान्यो जावै। आं रा लिख्योड़ा फुटकर गीत ई मिलै। आं गीतां में सरलता अर मारमिकता है।

पौराणिक अर धारमिक काव्य लिखणवाळा रचनाकारां में श्रीधर व्यास री 'दुर्गासप्तसती' , जयसिंह (16वी. सदी) रो 'हरिरासू', अल्लू जी कविया (वि.सं. 1525–1625) रो 'भगतीपरक छंद', बारहठ आसा (वि.सं. 1550–1650) रो 'गुण निरंजण प्राण', चूंडो जी दधवाड़िया (रचनाकाल वि.सं. 1620–1625) री 'निबंधावंध' अर 'गुण चाणक वेलि', सांखला करमसी रूणेचा री 'क्रिसन जी री वेलि', कुशलाभ री

'दुर्गासात्तसी', विट्ठलदास रो 'रूकमणी हरण', महेसदास राव रो 'रूघनाथ चरित', 'नवरस वेलि', मुहता रूघनाथ रो 'रूघरासा', आईदान गाडण रो 'श्री भवानी शंकर रो गुण शिवपुराण', केसरी सिंह जैतावत रो 'पंखी पुराण', जयचंद री 'माताजी री वचनिका' इत्याद रचनावां उल्लेखजोग हैं।

**2. आख्यान काव्य :–** मध्ययुग में आख्यान काव्यां री भी अेक लम्बी परम्परा रैयी है अर अै आख्यान पौराणिक अर धारमिक प्रसंगां माथै आधारित हैं अर आं री प्रस्तुति लोक प्रचलित राग–रागनियां रै माध्यम सूं हुयी है। नाटकीय सैली में लिख्योड़ा अै आख्यान काव्य सामाजिक अर सांस्क्रतिक दीठ सूं धणा महताऊ है अर आं में समाज सुधार अर समाज निरमाण री भावना माथै जोर दियो है। कीं प्रमुख आख्यानां रा रचनाकार इण तरै हैं :–

**डेल्ह जी (वि.सं. 1490–1550) :–** अै अभिमन्यु री कथा नै आधार मान'र '**अहमनी**' नाम सूं 717 छंदा में आख्यान लिख्यो है। इणमें वीर अर करूण रस री प्रधानता है अर इण में युगीन परिवेस अर लोक व्यवहार री चोखी बातां नै भी परोटी है।

**पदम भगत :–** आं रो लिख्योड़ो '**रूकमणी मंगल**' राजस्थान में सगळा सूं बेसी चावो हुयो है अर वो आज लोक जीवन में रच–पच'र उण रो अेक हिस्सो ही हुयगो। इण रो रचना काल वि.सं. 1550 रै आसै–पासै मानीजै।

**मेहोजी :–** अै रामायण नांव सूं रामकथा माथै आधारित आख्यान लिख्यो है अर ओ मध्ययुग रो उत्तम दरजै रो आख्यान है। इण आख्यान रो रचनाकाल वि.सं. 1775 है।

**कैसोजी (वि.सं. 1630–1736) :–** आं रा च्यार आख्यान मिलै – 'कथाभींव दुसासणी', 'कथा सुरगा रोहणी', 'कथा बहसोवनी' अर 'प्रहलाद चरित'। आं में 'प्रहलाद चरित' सगळा सूं घणो महताऊ है। इण में कुल 696 छंद है जिण में वात्सल्य अर करूण भावां रो मारमिक चित्रण हुयो है।

इण युग रा दूजा आख्यानां में सुरजनजी रचित 'कथा उसा पुराण' अर 'प्रहलाद पुराण', रूस्तम जी रचित 'किसन ब्यावलो', सरवण जी रचित 'सीता पुराण' अर परसुराम देवाचार्य रा रच्योड़ा केई आख्यान लिया जा सकै हैं।

**3. संत काव्य :–** राजस्थानी लोक जीवन में सदा सूं ई संता री मानता अर उणां रो प्रभाव रैयो है। आं संता रो धारमिक वातावरण बणावणै में खासा योगदान है। आं संता रै कारण राजस्थानी साहित्य में सांतरी बढ़ोतरी हुयी है। अै संत नी तो घणा पढ्या लिख्या हा अर नी आं में काव्य सिरजण री कोई जागरूता ई ही । क्यूंके आं रो उदेस तो सीधै सरल ढंग सूं आपरी बात रो प्रचार करणो हो । ओ ई कारण है के आं रै काव्य में कलात्मकत्ता रो अभाव है। आं संत कवियां नै दो भागां में बांट्या जा सकै :–

1. सम्प्रदाय विसेस वाळा कवि
2. सम्प्रदाय सूं अलायदा रैवण वाळा कवि

आं में खास सम्प्रदायां रो परिचै इण मुजब है :–

**नाथ सम्प्रदाय :–** ईं सम्प्रदाय रा प्रवर्तक गुरू गोरखनाथ (11वीं सताब्दी रै आसै–पासै) हा। आं री परम्परा में नौ नाथ अर बारा पंथ प्रधान रैया हैं। राजस्थान रै जन–जीवण अर साहित्य माथै नाथ पंथ रो मोटो प्रभाव है। प्रिथीनाथ मध्ययुग (17वी. सताब्दी) रा नामी संत हुया जिकांरी 29 रचनावां मिलै। जोधपुर रा महाराजा मानसिंह नाथां रा भगत हा। बनानाथ, नवलनाथ अर उत्तमनाथ इण सम्प्रदाय रा मानीता कवि हुया हैं। संत बनानाथ री 'अनुभव प्रकास' अर 'परवाना' दो महताऊ कृतियां हैं।

**विश्वनोई सम्प्रदाय :–** इण सम्प्रदाय रा प्रवर्तक जाम्भो जी (वि.सं. 1508–1593) हा। ओ सम्प्रदाय निरगुण नै मानै। इण सम्प्रदाय रै संता री जिकी वाणी मिलै उण री भासा राजस्थानी है। सम्प्रदाय

रै प्रमुख कवियां में ऊदौजी नैण, वील्होजी, केसौजी, सुरजनजी, परमानंद जी, हरखचंद जी इत्याद है।

**जसनाथी सम्प्रदाय :–** इण सम्प्रदाय रा प्रवर्तक जसनाथ जी (वि.सं. 1539–1563) हा। विचार दरसण में ओ सम्प्रदाय विश्वनोई सम्प्रदाय सूं मिलतो–जुलतो है। इण सम्प्रदाय में करमदास, देवोजी, लालनाथ, चोखनाथ इत्याद प्रसिद्ध कवि हुया हैं आं री रचनावां राजस्थानी भासा में मिलै।

**निरंजनी सम्प्रदाय :–** ओ पंथ हरिदास महाराज सूं चाल्योड़ो है। ईं रा अनुयायी निरंजन निराकार री आराधना करे। इण में कीं तो गृहस्थ भी हैं तो की निहंग। इण सम्प्रदाय माथै आगै चाल'र सगुण भगती रो प्रभाव भी पड़्यो। डीडवाना रै नेड़ै निरंजनी सम्प्रदाय रो प्रधान केन्द्र है। हरिदास जी महाराज री वाणी में राजस्थानी रै साथै–साथै ब्रजभासा रा सबद भी मिलै। इण सम्प्रदाय में की अैड़ा संत भी हुया हैं जिका राजस्थानी में भगतीपरक रचनावां भी लिखी हैं।

**दादू पंथ :–** इण पंथ रा प्रवर्तक संत दादूदयाल हा। आं रै जीवन बारै में जिका तथ्य मिलै, वां में थोड़ो मतभेद है पण ओ निस्चै ई कह्यो जा सकै है के आं री तपस्या रो छेत्र राजस्थान ई रैयो अर अै सगळी जगां रमण–भ्रमण करता रैया। छेलै अै नरेणा (फुलेरा रै कनै) रैवणै लाग्या अर बठै ई ब्रह्मलीन हुया। ईं वास्तै नरेणा दादू पंथी साधुओं री प्रधान गद्दी है। दादू पंथी भी आगै चाल'र पांच साखावां में बंटग्या – 1. लालसा 2. नागा 3. उत्तरादी 4. विरक्त अर 5. खाकी। दादू री कविता री भासा राजस्थानी है। दादू पंथ रा दूजा कवियां में बखनाजी, रज्जबजी, सुन्दरदास जी (छोटा), संतदास बारह हजारी, भीखन जी, वाजिंद इत्याद प्रमुख हैं। आं संता री रचनावां राजस्थानी भासा में लिख्योड़ी मिलै। भासा में कठै–कठै राजस्थानी में ब्रज अर खड़ी बोली रो मिस्रण भी दीसै।

**लालदासी सम्प्रदाय :–** लालदासी सम्प्रदाय या लालपंथ रा प्रवर्तक लालदास हा। आं रो जलम अलवर रै नेड़ै धोलीदूप में अेक मेव परिवार में हुयो। आं रै उपदेसा में भगवान री भगती अर उणां सिमरण–कीरतन सूं कमा'र खाणो है। आं री रचनावां में 125 दोहा अर 60 पद हैं। ईं सम्प्रदाय रै दूजै कवियां में हरिदास, डूंगरजी साध, प्राणी साध, भीखनजी साध इत्याद हैं।

**चरणदासी पंथ :–** ईं रा प्रवर्तक चरणदास हैं ओ पंथ कबीर पंथ सूं मिलतो–जुलतो है। इण पंथ में गुरू–चरणां रो आसरो सगळा सूं ऊंचो साधन है। चरणदास सगुण रो विरोध करता रैया अर निराकार परमात्मा री साधना माथै बळ दियो। इण पंथ री दयाबाई अर सहजोबाई री रचनावां भगती परम्परा में आपरी महताऊ ठौड़ राखै। आं रै पदां री भासा राजस्थानी है कठै–कठै भासा में ब्रज अर खड़ी बोली रो प्रभाव भी निजर आवै। ईं पंथ रा दूजा कवियां में जोगजीत जी, रामरूप जी इत्याद हैं पण आं री भासा खड़ी बोली रै नेड़ै है।

**रामसनेही सम्प्रदाय :–** रामसनेही सम्प्रदाय री राजस्थान में च्यार साखा है :–

**रामसनेही सम्प्रदाय (शाहपुरा) :–** इण सम्प्रदाय रा प्रवर्तक रामचरण जी महाराज (वि.सं. 1776–1855) हा। अै परमात्मा नै निरगुण सरूप रा भगत हा अर मूरतीपूजा में विसवास नी करता। आं री वाणी में 36 हजार सिलोक हैं जिको निरगुण भगतीपरक विसै रो विस्वकोस कह्यो जा सकै हैं। इण सम्प्रदाय रै दूजै कवियां में रामजन जी, भगवानदास जी, रामप्रताप जी, दूल्हेराय जी, जगन्नाथ जी इत्याद हैं।

**रामसनेही सम्प्रदाय (रैण, मेड़ता) :–** ईं सम्प्रदाय रा अनुयायी दरियावजी नै आपरो गुरू मानै। आं रो गुरूदुवारो रैण में है। रहण–सहण अर पूजा–उपासना में अै साहपुरा अर खैड़ापै रा रामसनेही सम्प्रदाय सूं मिलता लागै। अै भी परमात्मा नै निरगुण मानै। दरियावजी री 412 साखियां अर 30 पद मिलै। इण सम्प्रदाय रा दूजा कवि पूर्णदास, किसनदास, नानकदास, मनसाराम, हरखाराम इत्याद है ।

**रामसनेही सम्प्रदाय (सींथल , बीकानेर) :–** ईं सम्प्रदाय रा प्रवर्तक हरीराम जी हैं अर सींथल आं रो जलम स्थान है। अै भी निरगुण सम्प्रदाय रा समरथक है। इण सम्प्रदाय रा कवियां में हरिदेवदास जी, नारायणदास जी, पीराराम जी इत्याद प्रमुख कवि हैं।

**रामसनेही सम्प्रदाय (खैड़ापा) :–** इण सम्प्रदाय रा प्रवर्तक रामदास जी महाराज ( वि.सं. 1783–1855 ) हैं जिका सींथल साखा रा प्रवर्तक हरिदास जी रा सिस्य हा अर उणां रै आदेस सूं ई वै आ अेक नुंवी साखा खोळी। आं री वाणी निरगुण है। इण सम्प्रदाय रै दूजा कवियां में दयालुदास, परशुराम, पीथोदास, पूरणदास इत्याद प्रमुख हैं।

मध्ययुग रै दूजै संत–सम्प्रदायां में रसिक सम्प्रदाय (रैवासा), निम्बार्क सम्प्रदाय (सलेमाबाद), गूदड़ पंथ (दांतड़ा, भीलवाड़ा), अलखिया सम्प्रदाय (बीकानेर), आईपंथ (बिलाड़ा) इत्याद हैं आं सम्प्रदाय में जिता भी संत हुया बै राजस्थानी भासा में ई आपरी वाणी नै अभिव्यक्त करता रैया।

**सम्प्रदाय निरपेख संत कवि :–** मध्ययुग में की अैड़ा कवि भी हा जिका रो सम्बन्ध किणी सम्प्रदाय सूं नी हो पण वां री संत वाणी राजस्थानी साहित्य री अनमोल धराहर गिणीजै। सम्प्रदाय सूं बारै रैवणवाळा कवियां रो परिचै इण तरै है :–

**पीपाजी :–** आं री कीं साखियां अर 25 पद मिलै। अै निरगुण भगतीपरक भावनावां है पण आं री भासा ब्रज प्रभावित राजस्थानी हैं।

**काजी महमूद :–** (वि.सं. 1450–1550) आं रा 35 पद मिलै। आं री भासा राजस्थानी मिस्रित खड़ी बोली है।

**मीराबाई :–** भगती री साख बढ़ावणवाळा कवियां में राजस्थान री मीरा रो नांव सिरै अर घणो विख्यात हैं। मीरा रै जलम स्थान, जीवन काल अर व्यक्तित्व रै सम्बन्ध में अलग–अलग राय मिलै। बिंया मीरा रो जलम मेड़तै रै नेड़ै कुड़की गांव में सन् 1504 ईं. में हुयो। मीरा वैस्णव भगत राव दूदा री पोती ही। इण रो ब्याव राणा सांगा रै बड़े बेटै भोजराज रै साथै हुयो पण ब्याव रै सात बरस पछै ई भोजराज रो सुरगवास हुयग्यो जिण सूं मीरा रै जीवन में अेक भीतरी संघर्स पैदा हुयो अर वा इण घटना रै साथै ई लौकिक सम्बन्ध सूं मुगती लेय'र भगवान री भगती में तल्लीन हुयगी अर कैवण लागी 'मेरे तो गिरधर गोपाल दूसरो ना कोई'। मीरा 1558 सूं 1563 ई0 रै बिच्चै देवलोक हुयी।

मीराबाई री लिख्योड़ी पूरी अर अधूरी रचनावां री संख्या ग्यारह है– गीत गोविन्द री टीका, नरसीजी का मायरा, राग सोरठ का पद, मलार रा गोविन्द, सत्यमाभानु रूसण, मीरा की गरबी, रूकमणी मंगल, नरसी मेहता की हुंडी, चरीत (चरित्र), फुटकर पद। आं में फुटकर पद ई मीरा रा प्रामाणिक पद मानीजै। मीरा री भासा राजस्थानी है पण कठै–कठै ब्रज बोली रा सबद भी मिलै। मीरा आपरै प्रिय नै निरगुण अर सगुण दोनूं रूपां में मान्यो। मीरा रै पदां में हठयोग रो प्रभाव भी दीसै। मीरा क्रस्ण री भगत, विद्रोहिणी अर साध्वी ही। मीरा रै साहित्य में अेक सहज भावना अर पीड़ा रो मेल–मिलाप है।

**दीन दरवेस :–** (वि.सं. 1810–1890) मध्ययुग रा सांतरा संत कवियां में दीन दरवेस गिणीजै। आं री रचनावां में **दीनप्रकास**, **ग्रंथ अदलानंद**, **परमार्थ प्रसंग** इत्याद दस रचनाएं हैं। आंठा ग्रंथां री भासा राजस्थानी मिस्रित खड़ी बोळी है।

सम्प्रदाय निरपेख दूजा कवियां में संत ज्ञानीजी, गबरीबाई, संत मावजी, नामदेव, श्री क्रस्णदास इत्याद हैं।

**4. लौकिक काव्य :–** मध्यकाल में प्रेमपरक काव्य री अैड़ी रचनावां मिलै जिणमें केई रचनावां तो अग्यात रचनाकारां री हैं तो कीं रचनाकारां रा नांव भी रचना रै साथै मिलै। इण आधार माथै

दो तरै री रचनावां रो विभाजन इण भांत हुय सकै है :–

(क) ग्यात रचनाकारां री रचनावां

(ख) अग्यात रचनाकारां री रचनावां

**(क) ग्यात रचनाकारां री रचनावां :–** ग्यात रचनाकारां री रचनावां में पाठ री दीठ सूं कोई खास अन्तर नी दिखाई देवै। अै नीचै लिखी हैं :–

**गणपति :–** आं री लिख्योड़ी पोथी 'माधवानल काम कंदला प्रबंध' री रचना है। इण रै मांय माधव अर कामकंदला री कहानी 2500 दूहां में महाकाव्य सैली में लिख्योड़ी है। समाज सास्त्रीय दीठ सूं ओ ग्रंथ खासा महताऊ है। इण रै मांय बारहमासा रै माध्यम सूं बिरह–वरणन कर्‌यो गयो है। इणमें केई जगां समस्यामूलक पहेलियां भी हैं।

आं री लिख्योड़ी रचना 'बुद्धिरासो' (रचनाकाल सोलवीं सताब्दी) है इणमें चम्पावती रै राजकुमार अर वैस्यापुत्री री प्रेमकथा है। अंत में दोनूं प्रेमी–प्रेमिका पति–पत्नी रै रूप में रैवणै लाग ज्यावै। 'बुद्धिरासो' री भासा अपभ्रंस मिस्रित राजस्थानी है।

दूजी प्रेमकथावां में जैन कवि कुशललाभ री रच्योड़ी 'माधवानल कामकंदला चउपई' (रचनाकाल वि.सं. 1616) अर दामोदर री 'माधवानल कथा' (17वीं सताब्दी) प्रमुख है।

**(ख) अग्यात कवियां री रचनावां :–** मध्यकाल में की अैड़ी प्रेमपरक कथावा भी मिलै जिणरै रचनाकारां बाबत प्रामाणिकता रे साथै की नी कैय सका। अै प्रेमाख्यान केई रूपां में मिलै इण रै साथै आं रा केई पाठान्तर भी दीसै। आं में प्रमुख प्रेमाख्यान इण भांत है :–

ढ़ोला मारू रा दूहा :– इण ग्रंथ रै रचनाकार अर रचनाकाल रै बाबत विद्वानां में मतभेद है। जैन कवि कुशललाभ इण प्रेमकथा रा बिखर्‌योड़ा दूहा नै अेकठ करनै 'ढ़ोला मरवण री चौपई' नांव सूं वि.सं. 1617 में प्रस्तुत कर्‌या। इण में कह्यो गयो है के दूहा घणा पुराणां अछई, इण सूं लागै के आ दूहा री रचना वि.सं. 1617 सूं पैला हुयगी ही। डॉ. हीरालाल माहेश्वरी रै मतानुसार इण री रचना वि.सं. 1500 रै आसै–पासै हुयी।[3] 'ढ़ोला मारू रा दूहा' सुद्ध प्रेमाख्यान है जिणमें ढ़ोला अर मारवणी री प्रेम कथा दूहां रै माध्यम सूं कही गई है। 'ढोला मारू रा दूहा' नै जातीय काव्य अर लोक भासा काव्य री संग्या भी दी है। इण काव्य में वियोग सिणगार रो मारमिक चित्रण हुयो है। मारवणी रो वियोग वरणन तो राजस्थानी सिणगार काव्य री अेक उपलब्धि मानीजैली। ई काव्य रा भावपूरण सिणगारू दूहां सूं सरसता अर सजीवता रो अैड़ो रूप प्रगट हुयो है के अै दूहा आज लोक में भी घणा चावा हुयग्या। सुभाविकता इण काव्य री विसेस बात कही जावैली। मारवणी रै वियोग सिणगार रो वरणन कीं दूहा में नीचै लिख्यां मुजब है :–

**पंथी हाथ संदेसड़ई धण बिललंती देह ।**
**पग सूं काढै लीहटी, उर आसुवां भरेह ।।**
**बिज्जुलि़यां नीलज्जियां जल़हर तू ही लज्जि ।**
**सूनी सेज विदेस प्रिय, मधुरै मधुरै गज्जि ।।**

इण तरै '**ढोला मारू रा दूहा**' अेक लोक काव्य है। आथूंणै राजस्थान में आज भी ओ काव्य घणो चावो है। इण सम्बन्ध में कह्यो जा सके है :–

**सोरठियो दूहो भलो, भलि मरवण री बात ।**
**जोबन छाई धण भली, तारां छाई रात ।।**

'ढ़ोला मारू रा दूहा' मूल रूप में दूहा में लिख्योड़ो है आगे चाल'र आ ई सिणगार काव्य परम्परा बिहारी रै काव्य में दूहै रै रूप में प्रगट हुयगी।

**जेठवा रा सोरठा :–** सोरठा रै माध्यम सूं उजळी अर जेठवा री प्रेमकथा रो मारमिक चित्रण मिलै। जातीय बंधन रै कारणै उजळी रो जेठवा सूं ब्याव नी हुय सक्यो इण वास्तै उजळी रो सांचो वियोग घणै मारमिक रूप में सोरठां में प्रगट हुयो है। आं सोरठां रो रचनाकाल वि.सं. 1400–1500 रै बिच्चै मानीजै। दो सोरठा उदाहरण रूप में इण भांत है :–

**जा बिन घड़ी न जाय, जमारो किम जावसी ।**
**बिलखतड़ी वीहाय, जोगण करग्यो जेठवा ।।**
**टोळी सूं टळतांह, हिरणां मन माठा हुवै ।**
**बाल्हा बीछड़तांह, जीणौ किण विध जेठवा ।।**

**नागजी–नागमती :–** नागजी अर नागमती रै प्रेमाख्यान रा 50 दूहा मिलै। नागमती नागजी नै चावती क्यूंके उण रो नागजी सूं गाढ़ो हेत हो। जद नागमती आपरै सासरै जावण लागी तो वा नागजी नै चिता माथै देख'र घणी दुःखी हुयगी अर उण रै मन में विरह रो भाव उपजियो क्यूंके नागजी नागमती रै विरह सूं पीड़ित होय'र आत्महत्या करली। इण बात रो पतो जद नागमती नै लाग्यो तो वा भी खुद चिता में जल'र खुद नै खत्म कर लियो। आज इण प्रेमाख्यान रा जिका दूहा मिलै, वै घणा मारमिक अर पीड़ादायक हैं आं दूहा में नागमती री पुकार भाटै सै हिरदै नै भी हिलाय देवै। देखो–

**नागा नागर बेल, पसरै पण फूलै नहीं ।**
**बालपणै रो मेळ, बिछड़ै पण भूलै नहीं ।।**

**सेणी बीजानंद :–** सेणी बीजानंद भी लोक प्रचलित प्रेमाख्यान हैं। बीजानंद सेणी रै घरां रै सांमी जाय'र वीणा बजावतो जिण सूं दोनुंवा में प्रेम हुयगो पण पछै सेणी रै पिता बीजाणंद रै सांमी अेक सरत राखी के उण नै बखत सिर पूरो करणो बीजाणंद रै वास्तै मुस्किल हो। इण कारण सेणी हिमाळै में खुद नै गळावणै सारू चाली। बीजाणंद नै जद ठा पड्यो तो वो सेणी रै लारै–लारै उण नै हेलो पाड़तो गयो पण सेणी ठैर नी सकी अर आपरा प्राण विसरजित कर दिया। इण कथा सूं जुड़योड़ा 81 दूहा मिलै। इण रो रचना काल वि.सं. 1550 रै अेड़ै–छेड़ै मानीजै। नमूनै रो अेक दूहो देख्यो जा सकै–

**बीझा हूँ बिलखी फिरूं, दवरी दाधी बेल ।**
**बणजारा री आग ज्यूं, गयो धुकंती मेल ।।**

**बीझां सोरठ :–** आ प्रेमकथा गुजरात अर राजस्थान में घणी लोकप्रिय है। इण सूं सम्बन्धित 75 दूहा मिलै। इण रो रचना काल सोलवीं सताब्दी रो है। उदाहरण रै रूप में अेक दूहो –

**बीझा थां कह कारणइ, तोड्यउ नवसर हार ।**
**लोक जांणई मोती चुणई, निम निम करूं जुहार ।।**

**जलाल–बूबना :–** इण प्रेम कथा में जलाल अर बूबना रो प्रेम मिलन अर विरह दरसायो है। इण प्रेमाख्यान रा कोई 100 दूहा मिलै।

इण तरै मध्ययुग में जिका प्रेमाख्यान मिलै, वे दूहा अर सोरठा में लिख्योड़ा हैं।

**5. जैन काव्य :–** जैन काव्य री रचना अेक उदेस रै साथै हुयी। इण काव्य में जिका चरित्र उजागर कर्या गया है वां रै माध्यम सूं पापां सूं मुगती अर धरम सारू रूझाण पैदा करणो आं रो मूल उदेस है। धरम प्रधान होवणै रै कारण अै काव्य जैन धरम रा महापुरसां नै आदर्स रै साथै सामी राखै। मध्ययुग में प्रमुख जैन कवियां रो परिचै इण भांत है :–

**ब्रह्म जिनदास :–** अै विद्वान रै साथै–साथै कवि भी हा। आं रा 50 सूं ऊपर हिन्दी अर राजस्थानी

मिस्रित काव्य मिलै। अै घणकरा 'रास' लिख्या। इणमें 'रामायण' या 'राम सीता रास' सगळा सूं चावी रचना है ।

**छीहल :–** अै 16वीं सदी रै मध्य रा कवि हा। आं री पांच छोटी–छोटी रचनावां मिलै– पंच सहेली गीत, पंथीगीत, उदरगीत, पंचेन्द्रिय बोल अर नाम बावनी। 'पंच सहेली' बोलचाल री राजस्थानी में लिख्योड़ी रचना है।

**कुशललाभ :–** अै चर्चित जैन कवि रह्या हैं। आं री सगळी रचनावां राजस्थानी में हैं। कुशललाभ री रचनावां नै च्यार रूपां में बांट सकां हा :–

1. प्रचलित लोककथावां : माधवानल चौपाई, ढ़ोला मारवणी चौपाई।
2. जैन परम्परा में प्रचलित कथानक : अगड़दत्त रास, पूज्यवाहण गीत।
3. देवी या सगती माथै : दुर्गासात्तसी, भवानी छंद इत्याद।
4. छंद सास्त्रीय ग्रंथ : पिंगल सिरोमणि

इण में '**माधवानल**' अर '**ढोला मारवणी चौपाई**' सरस काव्य है।

**समय सुन्दर :–** सतरवीं सताब्दी रै जैन कवियां में आं रो विसेस स्थान है। संस्क्रत रै अलावा अै राजस्थानी भासा में भी खूब साहित्य रच्यो। आं री रचनावां में 'मृगावती रास', 'नलदमयन्ती चौपाई', 'सीताराम चौपाई' इत्याद प्रमुख है ।

जैन साहित्य रै दूजा कवियां में हेमरतन सूरि, लब्धोदय, जिनहर्ष, धर्मवर्द्धन, दौलत विजय, विनयचन्द्र, जयमल्लजी, भीखणजी इत्याद प्रमुख हैं। आं री सैकड़ु रचनावां मिलै। लब्धोदय री सात प्रबंधात्मक कृतियां है। आं में 'पद्मिनी चरित चौपाई' प्रमुख है। भीखणजी (सं. 1783–1800) अै तेरापंथ (स्वेताम्बर) रा प्रवर्तक हैं। वि.सं. 1817 में अै तेरापंथ री नींव राखी। भीखणजी धरमग्रंथा रै वचंना री सांतरी अर मौलिक व्याख्या करी है। 'भिक्षू ग्रंथ रत्नाकर' नांव सूं आं रो काव्य दो खंडा में छप्योड़ो है।

मध्यकाल में रीति ग्रंथा रै साथै–साथै छंद–अलंकारां री भी रचनावां मिलै। आं रचनावां में 'पिंगल शिरोमणि'(कुशललाभ), 'हरि पिंगल प्रबंध' (सन् 1664), 'पिंगल प्रकाश' (हमीरदान रतनू) इत्याद है। सेवग मनसा राम रो 'रघुनाथ रूपक गीतां रो' इण परम्परा री अेक प्रौढ़ कृती है जिण री रचना सन् 1806 में हुयी। इण में डिंगल, गीत, छंद अर अलंकारां रो सांतरो विवेचन हुयो है।

**गद्य साहित्य :–** राजस्थानी गद्य साहित्य री परम्परा घणी जूनी रैयी है। हिन्दी परिवार री भासावां में गद्य रो उद्भव कालक्रम री दीठ सूं देखां तो राजस्थानी में ई मिलै।[4] विद्वानां रो मानणो है के राजस्थानी में गद्य री उत्पत्ति तेरवीं सताब्दी रै बिच्चै हुयी। संवत् 1330 में '**आराधना**' नांव सूं अेक टिप्पणी मिलै जिकी नै राजस्थानी गद्य रो पैलो नमूनो कह्यो जा सकै है। जैन साहित्य में जैन साधु आपरै धरम रै प्रचार–प्रसार वास्तै धरम कथावां लिखी। गद्य रै विकास में आं धरम कथावां री विसेस भूमिका रैयी। अै कथावां जैन धरम रै ग्रंथां री व्याख्यानां अर उण रा सिद्धान्तां नै समझावण सारू ही। अै व्याख्यावाळी कथावां '**बालावबोध**' रै नांव सूं जाणीजै। प्रो. नरोत्तमदास स्वामी अर डॉ. हीरालाल माहेश्वरी रै मतानुसार गद्य रो प्रौढ़ रूप पन्द्रवीं सदी में मिलै।

मध्ययुग में गद्य रा विविध रूप दीसै जिणमें बालावबोध, टब्बा, कथा ग्रंथ, चरित्र ग्रंथ, प्रश्नोत्तर, पट्टावली, नियम–पत्र, वचनिका, बात, ख्यात इत्याद प्रमुख हैं। गद्य साहित्य नै इण भांत विभाजित कर्‌यो जा सकै है :–

1. धारमिक गद्य
2. अैतिहासिक गद्य
3. ललित गद्य

**1. धारमिक गद्य :–** धारमिक गद्य में जैन रचनाकारां रो विसेस योगदान है। धारमिक गद्य रा रचनाकारां में आचार्य तरूणप्रभ सूरि, सोमसुन्दर सूरि, मेरूसुन्दर, माणक्यचन्द्र सूरि प्रमुख है।

**2. अैतिहासिक गद्य :–** अैतिहासिक गद्य में इतियासू विसयां नै गद्य रै रूप में प्रस्तुत कर्‌या है। आं रा केई रूप मिलै जिंया– ख्यात, बात, विगत, वचनिका, दवावैत इत्याद है वचनिकावां में 'अचलदास खींची री वचनिका' (सिवदास गाडण), 'राठौड़ रतनसी महेसदासोत री वचनिका' (खिड़िया जग्गा), दवावैत में 'नरसिंहदास गौड़ दवावैत' (भाट कालीदास) इत्याद प्रमुख है। ख्यातकारां में मुता नैणसी, बांकीदास अर दयालदास है। आं री लिख्योड़ी ख्यातां रो इतियासू दीठ सूं घणो महत्त्व है।

**3. ललित गद्य :–** राजस्थानी रो बात साहित्य समरिद्ध है। अठै अैतिहासिक, काल्पनिक अर पौराणिक विसयां नै लेय'र खूब बातां लिख्योड़ी है आं रै मांय धरम, नीति, प्रेम, हास्य इत्याद री बातां हैं। राजस्थान में बात कैवण री अेक लाम्बी परम्परा रैयी है अै बातां रोचक, सरस अर मनमोवणी है। आं रो गद्य भी सांतरो अर साहित्यिकता लियोड़ो है। राजस्थानी गद्य साहित्य में की बातां घणी चावी है जिंया– राजा भोज, माघ पंडित अर डोकरी री बात, राजाभोज अर खाफरै चोर री बात, सयणी–चरणी री बात, फोफानंद री बात, ऊमा भटियाणी री बात इत्याद।

इण तरै मध्ययुग में जिको गद्य मिलै उणमें तुकमय गद्य री प्रव्रति रैयी है बिंया कठै–कठै तुक रहित गद्य भी मिलै।

**लोक साहित्य :–** राजस्थानी भासा में लोक साहित्य रो अखूट भण्डार है। लोक साहित्य री मौखिक परम्परा रैयी है। ओ किणी व्यक्ति विसेस रो रच्योड़ो नी बल्कि सम्पूरण समाज या लोक ई इण रो रचनाकार है। मौखिक परम्परा रै रूप में ओ साहित्य पीढ़ी दर पीढ़ी आगै चालतो रैवै। लोक साहित्य रै माध्यम सूं किणी भी जनपद या अंचळ री लोक संस्क्रति, लोक जीवन अर लोक निरमाण रो सुभाविक रूप सांमी आवै। लोक साहित्य रो विभाजन इण भांत कर्‌यो जा सकै है :–

1. लोकगीत
2. पवाड़ा
3. लोक कथावां
4. ख्याल या लोकनाटक
5. लोकोक्ति अर पहेलियां

**1. लोकगीत :–** राजस्थानी लोकगीतां री आपरी दुनियां है आं में लोक भावनावां रो सुभाविक रूप दीसै। राजस्थानी लोकगीतां नै दो भागां में बांट सकां– धारमिक गीत अर मनोरंजनात्मक गीत। धारमिक गीतां में धरम रै विधि–विधान अर क्रियाकलापां रो चित्रण हैं। अैड़ा लोकगीतां में संस्कार गीत, देवी–देवतावां रा गीत अर व्रत सम्बन्धी गीत देख्या जा सकैं। इणी तरै '**हरजस**' अर '**सबद**' भी आं लोकगीतां में लोकवाणी रै रूप में आवै। मनोरंजनात्मक गीत तीज– त्यूंवार, खेल, रितु अर मानव जीवण रा सरस परसंग आवै। आं गणगौर, तीज, दीवाली, होली रा गीत भी सामिल हैं। अलग–अलग अवसरां मायै घर–गिरस्थी, परिवार प्रेम अर आमोद–प्रमोद रा लोकगीत भी समाज में घणा चावा हैं।

**2. पवाड़ा :–** '**पवाड़ा**' सबद संस्क्रत रै प्रवाद सबद सूं बण्यो है। पवाड़ा नै केई विद्वान लोकगाथा भी कैवै। लम्बो कथानक हुवण रै कारण इण नै केई 'झीड़ा' भी कैवै। आं पवाड़ा री आपरी कीं विसेसतावां हुवै, जिंया रचनाकार रो अग्यात हुवणो, प्रामाणिक मूलपाठ नी मिलणो, संगीत अर निरत रो मेल़, मौखिक परम्परा, लम्बो कथानक इत्याद। राजस्थानी पवाड़ा में पाबूजी रा पवाड़ा, बगड़ावत, निहालदे–सुलतान

इत्याद घणा लोकप्रिय हैं। पाबूजी रै पवाड़ा री संख्या 52 मानीजै। इणी ई भांत 'बगड़ावतां रा पवाड़ा' अत्ता लोकप्रिय हैं के भोपा इण लोकगाथा नै भी गावै। रानी लक्ष्मी कुमारी चूडांवत 'देवनारायण की गाथा' नांव सूं बगड़ावतां रै पवाड़ा रो सम्पादन करयो है। 'निहालदे सुलतान रा बावन पवाड़ा' रै नांव सूं प्रसिद्ध है। इण नै जोगी सांरगी माथै गावै। राजस्थानी रा मानीता विद्वान अर आलोचक डॉ0 कन्हैयालाल सहल इण लोक महाकाव्य नै अेक जोगी सूं सुण'र पुस्तक रूप में लिपिबद्ध कर्‌यो है। डॉ0 क्रस्ण बिहारी सहल इण लोक महाकाव्य नै आधार बणाय'र इण माथै सटीक रूप में सोध भी कर्‌या है।

**3. लोक कथावां :–** लोककथा राजस्थानी में बात कहीजै। गद्य रै रूप में ख्यात, विगत, वचनिका इत्याद रूप '**वात**' सूं साव अलायदा हैं। राजस्थानी लोककथावां में वीरता, प्रेम, हास्य, नीति इत्याद रो प्रभावी चित्रण हुयो है। राजस्थानी में वीरता प्रधान लोक कथावां री प्रचुरता है। अैड़ी लोककथावां में 'राव रिणमल री वात', 'राजा नरसिंघ री वात', 'राव चूंडे री वात', 'पाबूजी री वात' घणी चर्चित हैं दूजी लोककथावां में 'ढ़ोला मारू', –जलाल बूबना', 'मूमल–महेन्दर, पोपाबाई री वात', 'बिणजारा–बिणजारी री वात', 'पदमै चारण री वात' इत्याद लोकप्रिय हैं। राजस्थानी लोककथावां रै संदर्भ में डॉ. कन्हैयालाल सहल, डॉ. मनोहर शर्मा, गोविन्द अग्रवाल, लक्ष्मीकुमारी चूंडावत, विजयदान देथा, सौभाग्य सिंह शेखावत, डॉ. कृस्ण बिहारी सहल, रामनिवास शर्मा, भंवर सिंह सामौर इत्याद रो संकलन–सम्पादन घणो महताऊ है।

**4. ख्याल या लोकनाटक :–** राजस्थान में ख्याल या लोकनाटकां रो प्रदर्सण भी बरोबर हुवतो रैयो है। ख्याल रै वास्तै खुलै मंच री जरूरत हुवै जिणरै च्यारू तरफ दरसक बैठ ज्यावैं अर पछै ख्याल सरू हुवै जिको सारी रात चालतो रैवै। ख्याल में काव्य, अभिनय, संगीत अर निरत रो समावेस हुवै। ख्याल मुख्य रूप सूं गावो जावै। बीच–बीच में जिका संवाद आवै, वै गद्य में हुवै। अगरचंद नाहटा रो मानणो है के राजस्थान में लिखित ख्यालां रो प्रचार–प्रसार उन्नीसवीं सदी के मध्य में हुयो या बीसवीं सदी रै आरम्भ में हो सकै।[5]

ख्याल लिखणवाळा लोगां में मोतीराम, पूनमचंद, नानूलाल मीणा, लच्छीराम इत्याद प्रमुख है। अलग–अलग अंचळां री सैली रै आधार माथै आं ख्यालां रा केई नामकरण भी हुया हैं जिंया– शेखावाटी ख्याल, कुचामणी ख्याल, अलीबक्सी ख्याल इत्याद। कीं लोकप्रिय ख्यालां में ढ़ोला मरवण, चकवा बैण, जगदेव कंकाली, नल दमयन्ती, राजा मोरध्वज इत्याद है।

**5. लोकोक्ति अर पहेलियां :–** आपसी बातचीत रै दरम्यान अर लेखन भी लोकोक्ति अर पहेलियां रो प्रयोग हुवतो रैवै। इण सूं भासा में सुन्दरता अर कथन में चमत्कार उपजै। आं राजस्थानी कहावतां में अठै री जनभावना अर लोक संस्क्रति रो सजीव चित्रण हुयो। राजस्थानी कहावतां नै लेय'र प्रो. नरोत्तमदास स्वामी, डॉ. कन्हैयालाल सहल संग्रह अर सम्पादन रो उल्लेखजोग काम कर्‌यो है। डॉ. मनोहर शर्मा कहावतां रै लारै लोक अणभव रै रूप में छिप्योड़ी कथावां नै भी प्रस्तुत करी है। इण विसै में डॉ. कन्हैयालाल सहल रो ग्रंथ 'राजस्थानी कहावते : एक अध्ययन' पहलो अर महताऊ सोध प्रबंध है जिणरै मांय राजस्थानी कहावतां रो आधारभूत अर प्रामाणिक अध्ययन कर्‌यो है। सौभाग्यसिंह शेखावत, महेन्द्र भानावत, शिवसिंह चोयल इत्याद भी बखत सिर राजस्थानी कहावतां माथै सोधपरक लेख लिखता रैया हैं।

**मूल्यांकन :–** मध्यकाल रै राजस्थानी साहित्य माथै विचार करां तो लखावै के इण काल में कथ्य अर सिल्प री विविधता रैयी। अेक तरफ वीरता, भगती अर सिणगार परक साहित्य री रचना हुई तो दूजै कानी गद्य रो विकास अर उण रा भांत–भांत रा नुंवा रूप भी सामी आया। बांकीदास जैड़ा कवि साम्प्रदायिकता सूं ऊपर उठ'र देसप्रेम री भावना सूं काव्य री सिरजणा करता रैया। इण काल रै काव्य में त्याग, बलिदान अर समरपण री भावना रो चित्रण है।

वीर रस रै माथै सिणगार रो तालमेल इण काव्य री विसेसता है। इण काल में सिणगार री ऊंचै दरजै री रचनावां सामी आयी। लौकिक काव्य रै रूप में घणा ई प्रेमाख्यान भी उपलब्ध हुया। 'ढ़ोलामारू रा दूहा' अैड़ो ई सिणगार प्रधान लोकप्रसिद्ध प्रेमाख्यान है।

मध्ययुग री अेक उल्लेखजोग बात आ है के इण काल में पद्य रै साथै–साथै गद्य रो ई विकास हुयो अर ओ हिन्दी परिवार री भासावां में सगळा सूं पैलां राजस्थानी में दिखायी देवै। राजस्थानी में तेरवीं सताब्दी सूं लेय'र आज तांई गद्य री लूंठी परम्परा बरोबर चालै। ललित गद्य रै रूप में राजस्थानी बात साहित्य री विविधता उल्लेखजोग है। इण जुग री महताऊ कृतियां में कान्हड़दे प्रबंध, हम्मीरायण, हाला –झाला री कुंडलिया, विरुद छिहतरी, वचनिका राठौड़ रतनसिंह महेसदासोत री, चेतावणी रा गीत, वेलि क्रिसन रूकमण री, रामरासौ, नागदमण, राजिया रा सोरठा, मीराबाई री पदावली, ढ़ोला मारू रा दूहा, निहालदे सुलतान, बगड़ावत इत्याद हैं। छंद री विविधता आं काव्य रचनावां री विसेसता है।

**सन्दर्भ :–**


1. राजस्थानी भासा और साहित्य , पृ. 112
2. '' '' '' , पृ. 126
3. सांस्क्रतिक राजस्थान : सं. रतनलाल शाह, पृ. 22
4. हिन्दी साहित्य का इतिहास , डॉ. नगेन्द्र , पृ. 273
5. प्राचीन काव्यों की रूप परम्परा, अगरचंद नाहटा, पृ. 141


**अभ्यास सारू सवाल :–**

**वस्तुनिस्ठ सवाल :**

1. कान्हड़दे प्रबंध री रचना कुण करी ?
   (अ) बारहठ आसा (ब) वीठू सूजा
   (स) बारहठ ईसरदास (द) पद्मनाभ ( )
2. गाडण पसाइत री रचना कुणसी है ?
   (अ) हरिरस (ब) राव रिणमल रो रूपक
   (स) गजगुण (द) रतनरासो ( )
3. वेलि क्रिसन रूकमणी रा रचनाकार कुण है ?
   (अ) कल्याणदास (ब) बसंत विलास
   (स) राठौड़ प्रिथीराज (द) केसोदास गाडण ( )
4. 'राजिया रा सोरठा' किण रा लिख्योड़ा हैं ?
   (अ) पद्म भगत (ब) मेहोजी
   (स) कृपाराम खिड़िया (द) मुरारीदान बारहठ ( )
5. 'नागदमण' रो रचनाकार कुण है ?
   (अ) सुरजनदास पूनिया (ब) सांयाजी झूला
   (स) खिड़िया हुकमीचंद (द) गाडण गोपीनाथ ( )
6. 'विरूद छिहतरी' किण री रचना है ?
   (अ) रतनू वीरभाण (ब) जग्गा खिड़िया
   (स) दूदा विसराल (द) दुरसा आढा ( )
7. बारहठ ईसरदास री चर्चित रचना कुणसी है ?

(अ) हाला झाला रा कुंडलिया (ब) बाघजी रा दूहा
(स) वचनिका राठौड़ रतनसिंघ महेसदासोत री
(द) राज रूपक ( )

8. ढोला मारू रा दूहा रो रचनाकाल कुण सो है ?
(अ) 12वीं सताब्दी (ब) अठारवी सताब्दी
(स) संवत् 1617
(द) सं. पन्दरै सौ रै आसपास ( )

**घणा लघुरात्मक सवाल :**

1. 'निहालदे सुलतान' नै किण ढंग रो काव्य मान्यो जावै?
2. राजस्थानी गद्य री पैली पोथी कुणसी है ?
3. समय सुन्दर कुण सै काल रा कवि हा ?
4. मीरा री भासा कुण सी है ?
5. राजस्थानी में ख्याल कद सूं लिखणा सरू हुया ?
6. 'डिंगल कोश' रा रचनाकार बतावो ?
7. निरंजनी सम्प्रदाय कुण चलायो ?
8. 'रूकमणी–मंगल' किण रो लिख्योड़ो है ?

**लघूरात्मक सवाल :**

1. 'रघुनाथ रूपक गीतां रो' किण ढंग रो ग्रंथ है ?
2. 'अचलदास खींची री वचनिका' में कुण सो रस प्रधान है?
3. लोक साहित्य रा कुण–कुण सा भेद है ?
4. 'पवाड़ा' सबद किण सूं बण्यो है ?
5. 'वेलि क्रिसन रूकमणी री' रो प्रधान रस कांई है ?
6. राजस्थानी में गद्य री सरूआत कद सूं मानी जावै ?
7. राजस्थानी लोककथावां रा विसै कांई रैया ?
8. लोकोक्ति कांई हुवै ?

**निबंध रूप में सवाल :**

1. 'वेलि क्रिसन रूकमणी री' कैड़ी रचना है ?
2. रामरासो री विसेसतावां बतावो ?
3. आख्यान काव्य री परम्परा किण ढंग री ही ?
4. बांकीदास री कविता में रास्ट्रीयता री भावना बतावो ?
5. जैन काव्य लिखणै रो कांई उदेस हो ?
6. मध्यकाल रै गद्य–साहित्य बाबत लिखो ?
7. लोक साहित्य री विसेसतावां बतावो ?
8. पवाड़ा रो अरथ अर प्रमुख पवाड़ां रो उल्लेख करो ?

# अध्याय : 4

# आधुनिक काल : (सन् 1850 सूं अजै तांई)

आधुनिक काल रो आरम्भ उन्नीसवीं सताब्दी रै उतराद सूं मान्यो जावै। क्यूंके इण काल खंड सूं रचनात्मक स्तर माथै काव्यगत चेतना में बदलाव उपज्यौ। इण बखत री राजनीतिक, सामाजिक अर आरथिक स्थितियां सूं जिकी नुंवी उथळ–पुथळ हुई, वा साहित्य वास्तै भी नुंवो सन्दर्भ हो। सन् 1857 री क्रान्ति रो सरूप कीं भी मान्यो जावै पण निस्चै ई राजस्थान क्रान्तिकारियां रो द्रस्टिकोण अंग्रेज विरोधी हो इण रो समरथन अठै रा समकालीन कवि भी कर्‌यो। बांकीदास, सूर्यमल्ल मिश्रण, शंकरदान सामौर, बुद्ध जी आसिया, गिरवरदान कविया इत्याद ब्रिटिस सत्ता रै खिलाफ आपरो आक्रोस प्रगट करतां थकां ओजस्वी स्वर रो परिचै दियो। डूंगजी–जवारजी अग्रेजां रै विरूद्ध में जगां–जगां तहलको मचा दियो। आज भोपा–भोपी डूंगजी–जवारजी रा गीत गावै।

इण सूं प्रगट हुवै सन् 1850 रै अेड़ै–छेड़ै जिकी समसामयिक घटनावां अर परिस्थितियां उपजी वै जन–जागरण अर आधुनिकता री प्रक्रिया नै जलम दियो। आधुनिक काल रो विभाजन इण ढंग सूं कियो जा सकै –

1. जागरण काल ( सन् 1850 सूं 1947 तांई )
2. आजादी रै पछै रो काल ( सन् 1947 सूं 1965 तांई )
3. नवलेखन काल ( सन् 1965 सूं अजै तांई )

## जागरण काल : ( सन् 1850 सूं 1947 तांई )

आधुनिक काल री सरूआत सन् 1850 सूं मानीजै। इण वास्तै आ जरूरी है के इण काल रै भीतर जिकी स्थितियां में बदलाव आयो, उण रो अध्ययन कर्‌यो जावै जिण सूं साहित्यिक चेतना नै समझणै अर विस्लेसण करणै में मदद मिल सकै।

**राजनीतिक परिवेस :–** सन् 1857 सै विप्लव रै कारणै इस्ट इंडिया कम्पनी रो प्रभुत्व मिटग्यो अर भारत ब्रिटिस साम्राज्य रो उपनिवेस बणग्यो। सन् 1885 में रास्ट्रीय कांग्रेस री थरपना हुई अर जनसाधारण माथै आं रै विचारां रो प्रभाव पड्‌यो। आगै चाल'र कांग्रेस में नरम अर गरम दो दळ बणग्या। सन् 1903 में दिल्ली दरबार अर सन् 1905 में बंग–भंग री घटनावां सूं राजनीतिक छेत्र में खूब हलचल पैदा हुयी। दूजै कानी भारत रै लोगां में आपरी आजादी लेवण सारू त्याग, बलिदान, संघर्स री भावना बढ़ण लागी। पैलै विस्व जुद्ध (1914 ई.) रै पछै अंग्रेज जन चेतना नै हर तरै सूं कुचलणो सरू कर्‌यो अर पछै गांधीजी असहयोग आंदोलन (सन् 1920–21) री सरूआत करी। अंग्रेजां री दमन नीति रै कारण राजस्थान में क्रान्ति री भावनावां नुंवो मोड़ लेवण लागी। कोटा रा केसरी सिंह बारहठ, जोरावर सिंह, खरवा रा गोपाल सिंह, ब्यावर रा दामोदर प्रसाद राठी अर विजय सिंह पथिक जैड़ा क्रान्तिकारी इण अंग्रेज विरोधी आंदोलन नै घणो सक्रिय कर्‌यो। इण बखत री दो खास घटनावां–बिजोलिया अर बेगू रै किसानां रो आंदोलन उल्लेखजोग है। आं रै माध्यम सूं जागीरदारी प्रथा रै सोसण अर अत्याचार रै खिलाफ आवाज उठाई। जयनारायण व्यास, हीरालाल शास्त्री, माणिकलाल वर्मा, हरिभाऊ उपाध्याय, सागरमल गोपा इत्याद सन्

1930 रै अेड़ै–छेड़ै रा प्रमुख नेता हा जिका गांव–गांव में आजादी री अलख जगाई।

1942 में '**भारत छोड़ो आंदोलन**' आजाद हिंद फौज रो गठन अर पछै 15 अगस्त 1947 नै देस आजाद हुयो।

**सामाजिक अर धारमिक परवेस :–** राजनीतिक हलचलां रै साथै सामाजिक अर धारमिक दीठ सूं भी अैड़ा आंदोलन सरू हुया जिका समाज नै अेक नुवी चेतना दी। ब्रह्म समाज, प्रार्थना समाज, आर्य समाज इत्याद री भूमिका इण द्रस्टि सूं घणी जोरदार रैयी। अै सामाजिक अर धारमिक संगठन सामाजिक कुप्रथावां अर कुरीतियां माथै तीखा प्रहार करता रैया जिण सूं नुंवा नैतिक मूल्यां री थरपना हुयी। राजा राममोहन राय, केसवचन्द्र सेन, दयानंद सरस्वती, विवेकानंद इत्याद सामाजिक छेत्र में चोखा सुधार कर्‌या अर आडम्बर, ढोंग, पाखंड अर कुप्रथावां रो खंडन कर्‌यो। आं रै सुधारवादी द्रस्टिकोण रो समाज रै वातावरण माथै गहरो असर हुयो।

**सांस्क्रतिक परिवेस :–** अंग्रेजां रै अधीन रैवण अर आथूंणी सभ्यता, संस्क्रति अर साहित्य रै संपरक में आवणै सूं आधुनिकता रो संचार होवणो लाजमी हो। अंग्रेजां री नुंवी अरथ व्यवस्था, नुंवी शिक्षा नीति, यातायात रै साधन इत्याद सूं विचारां में बदलाव आयो अर सांस्क्रतिक चेतना रो नुवोपणो प्रगट्‌यो। उधोग धंधा, सांस्क्रतिक चेतना, आथूंणै प्रभाव अर साहित्य रो जन मानस पर धीरै –धीरै गैरो प्रभाव पड़तो गयो।

इण तरै आ बात मैसूस हुवै के सन् 1850 सूं 1947 तांई जिकी राजनीतिक, सामाजिक अर सांस्क्रतिक परिस्थितियां रैयी उण रो असर साहित्य री चेतना माथै पड़णो जरूरी हो। इण सूं साहित्य रै मांय आधुनिकता रै संचार सूं नुवो बोध उपज्यो अर साहित्य आपरी रचनात्मक संवेदना में बदळतो सो निजर आयो। साहित्य रै बदलाव री आ प्रक्रिया सुभाविक है। अबै जागरण काल रै साहित्य माथै इण तरै विचार कर्‌यो जा सकै है :–

**काव्य :–** जागरण री परिस्थिति सूं रास्ट्रीय चेतना, जीवन बोध अर सांमी आवण वाळी चुणौतियां अर आधुनिकता रै संचार सूं काव्य संवेदना में फेरबदल हुयो अर काव्य आपरै परिवेस सूं जुड्‌यो। सूर्यमल्ल मिश्रण अर शंकरदान सामौर इण काल रा दो अैड़ा जागरूक कवि हा जिका सन् 1857 री क्रान्ति रै सन्दर्भ में अेक युग–कवि री भूमिका निभाई। इण काल रै दूजै कवियां री कविता पारम्परिक रैयी। अठै इण काल रै कवियां रो परिचै इण तरै है :–

**सूर्यमल्ल मिश्रण :–** सूर्यमल्ल मिश्रण महान प्रतिभा सम्पन्न कवि अर विद्वान हा। चारण कुल रै मांय आज भी उणां री ख्याति है। अठै आ कैवतां कीं संकोच नी के सूर्यमल्ल मिश्रण जैड़ा कवि केई सताब्दियां पछै पैदा हुवै। सूर्यमल्ल मिश्रण रो जलम वि.सं. 1872 में बूंदी में हुयो। मिश्रण बूंदी रा नरेस महाराव रामसिंह रा राजदरबारी कवि हा। आं री रचनावां में 'वंश भास्कर', 'वीर सतसई', 'बलवद् विलास', 'रामरंजाट', 'छंदोमयुख' इत्याद प्रमुख है।

वंश भास्कर आपरो सब सूं बड़ो अर प्रसिद्ध ग्रंथ है जिणरी रचना सन् 1840 में हुयी। ओ बूंदी राज्य रो पद्‌यमय इतियास है। इण नै महाभारत री तरै विस्वकोसीय अैतिहासिक काव्य री संग्या दी।

सूर्यमल्ल मिश्रण रो दूजो ग्रंथ 'वीर सतसई' है इणमें कुल 288 दूहा हैं अर अै वीर रसात्मक दूहा डिंगल री उपलब्धि मानीजै क्यूं के 'वीर सतसई' डिंगल री अनुपम कृती है। सूर्यमल्ल मिश्रण आं दूहा में राजस्थान रै जीवन मूल्यां अर आदर्स नै अेक नुवो सन्दर्भ दियो है आं ई वजै है के वीरता, त्याग, बलिदान, धरती प्रेम, उदात्त भावना, नारी रो सतीत्व अर वीरत्व इत्याद भावनावां नै घणी प्रभावी अभिव्यक्ति ईं सतसई

में मिली। इण काव्य रै लारै सन् 1857 रै गदर री प्रेरणा है। 'वीर सतसई' भारत रै इतियास री अेक महान घटना नै काव्य रै सन्दर्भ में इण भांत प्रगट करै –

**बीकम बरसां बीतियां गण चौ चंद गुणीस ।**
**बिसहर तिथ गुरू जेठ बदि , समय पलट्टी सीस।।**

**'बलवद् विलास'** तीजो ग्रंथ है इण रै मांय भिणाय रै राजा बलवंत सिंह रै चरित्र रो वरणन है।

इण तरै सूर्यमल्ल मिश्रण आधुनिक काल रा डिंगल सैली रा पैला महान अर छेला कवि हुया। वीर रस रै ऊंचै दरजै रै कवि रै रूप में आं रो राजस्थानी साहित्य में अमर स्थान रैवैलो। आं रो निधन वि.सं. 1920 में हुयो।

**शंकरदान सामौर** (वि.सं. 1881–1935) **:–** अंग्रेजी सासन रै अत्याचारां री जोरदार तीखै सबदां में आलोचना करणवाळा आधुनिक कवियां में शंकरदान सामौर रो नांव सिरै। आपरो जलम चूरू जिलै रै सुजानगढ़ तहसील रै गांव बोबासर में वि.सं. 1881 में हुयो। आम चारण परिवार में जलम्या सामौर री कविता में अंग्रेजां रै खिलाफ आग उगलणै री गैरी ताकत ही। उण बखत राजस्थान में सामौर रै मुकाबलै में कोई दूजो कवि नी हो जिणरी कविता में आग री लपटां हुवै। सामौर री कविता अेक तरफ अंग्रेजां रै सोसण, अत्याचार, भ्रस्टाचार अर अनीति रो विरोध करै, बठै ई दूजै कानी जागीरदारां अर ठाकरां री उदासीनता रो चित्रण भी करै। शंकरदान री आवाज में निडरता अर ओज हो, क्रान्ति रै भाव सूं उमड़ियोड़ी सामौर री कविता तेजमय ही।

शंकरदान सामौर प्रगतिशील विचारधारा रा कवि हा। उण रै काव्य में समाज रै सोसित व्यक्ति री पीड़ावां रो सांचो चित्रण है। सगती सुजस, भागीरथी महिमा, बखत रो बायरो, देस दर्पण, साकेत सतर्क इत्याद शंकरदान री प्रमुख रचनावां हैं।

प्रसाद अर ओज सूं भरयोड़ी सामौर री कविता में सहजता अर लालित्य है। इण सूं लागै के सूर्यमल्ल मिश्रण अर शंकरदान सामौर जागरण काल रा दो विसेस कवि हा जिका आपरै बखत में अंग्रेजां सूं मुगती पावण सारू डंके री चोट कवितावां लिखता रैया।

**परम्परागत काव्य :–** पारम्परिक सैली में रच्योड़ै काव्य रै कवियां रो परिचै इण तरै है :–

**रामनाथ कविया (सन् 1801–1879 ई.) :–** रामनाथ कविया आपरी सीधी सरल अर प्रसादमयी सैली रै कारण आखै राजस्थान रा कवियां में घणा लोकप्रिय रैया हैं। आं री रचनावां में 'पाबूजी रा सोरठा' अर 'द्रोपदी विनय' या 'करूण बहतरी' खास हैं। 'करूण बहतरी' में द्रौपदी रो चीरहरण करणै पछै क्रिस्ण नै द्रौपदी जिकी पुकार करी, उण रो मारमिक चित्रण है। ईं रै अलावा कविया चारणी देवी करणी जी री महिमा अर की खास चरित नायकां नै लेय'र भी कवितावां लिखी। रामनाथ कविया रा सूर्यमल्ल मिश्रण अर शंकरदान सामौर रै देहान्त माथै लिख्योड़ा मरसिया भी मिलै।

**स्वरूपदास (सन् 1801–1863) :–** चारण कुल में जलम्या स्वरूप दास पछै दादू पंथी साधु हुयग्या। आप संस्क्रत, डिंगल, पिंगल इत्याद भासावां रा विद्वान हा। आपरी लिख्योड़ी रचनावां में पांडव यशेन्दु चन्द्रिका, रस–रत्नाकर, पाखंड खंडन वर्णाथ मंजरी, द्रस्टान्त दीपिका, 'वृतिबोध' इत्याद प्रमुख हैं ।

**राव बख्तावर (सन् 1913–1894 ई.) :–** अै टांक साखा रा राव हा अर उदयपुर रा महाराणा स्वरूपसिंह रा दरबारी कवि हा। आं री रचनावां में केहर प्रकास, रसोत्पत्ति, स्वरूप–यश प्रकाश, शंभु–यश प्रकाश इत्याद प्रमुख हैं। 'केहरप्रकास' आं री स्रेस्ठ रचना है।

**समान बाई (सन् 1825–1885 ई.) :–** समानबाई राजस्थानी रा प्रसिद्ध कवि रामनाथ कविया

री सुपुत्री ही। आप भगत कवित्री रै रूप में लोकप्रिय रैयी। आं री रचनावां में ईश महिमा, राधिका शरीरोपमा, श्रीक्रस्णोपमा, पतित पत्रोपमा इत्याद प्रमुख हैं।

**कविया चिमनजी (सन् 1833–1887 ई.) :–** चारण काव्य री द्रस्टि सूं कविया चिमन जी घणा चावा रैया। अै सुयोग्य कवि अर विद्वान हा। आपरी रचनावां में विविधता है। 'सोढायण' आपरी प्रसिद्ध कृती मानीजै। बिंया कुल मिलाय'र आपरी 21 पुस्तकां हैं।

**शिवबक्स पालावत (सन् 1844–1899 ई.) :–** पालावत अलवर नरेस मंगलसिंह रा राजदरबारी कवि हा। '**अलवर की षटऋतु झमाल**' आं री साहित्यिक कृती है जिणमें रितुवां रा सुभाविक चित्रण हैं।

**ऊमरदान लालस (सन् 1851–1903 ई.) :–** ऊमरदान लालस रो जलम जोधपुर जिलै रै ढ़ाढरवाड़ा गांव में हुयो। आप पैलां रामसनेही सम्प्रदाय सूं प्रभावित होय'र सन्यासी हुयगा अर पछै आर्य समाज सूं प्रभावित होय'र पाछा गृहस्थी बणग्या। आपरी भासा सीधी सरल है आप सामाजिक कुप्रथावां अर पांखडां रो जोरदार खंडन कर्‌यो है। ऊमरदान प्रगतिशील विचारां रा जागरूक कवि हा। 'दारू रा दोस' , 'अबार को हाल', 'विभिचार की बुराई', 'अमल रा ओगण', 'तम्बाखू की ताड़णा' इत्याद प्रमुख रचनावां है जिकी घणी लोकप्रिय रैयी है। आपरी कवितावां रो संग्रै 'ऊमर काव्य' नांव सूं छप्यो है।

**महाराज चतुरसिंह (सन् 1879–1929 ई.) :–** महाराज चतुर सिंह साधै सरल हिरदै वाळा कवि हा। आप मेवाड़ में करजाळी रा स्वामी महाराज बाघसिंह रा वंसज हा। आप रो जीवन अेक सैज योगी अर भगत रो हो क्यूंके आपरी धरमपत्नी रै देहान्त हुवण रै पछै आप उदयपुर सहर रै बारै अेक गांव कनै कुटिया बणाय'र रैवता। आपरा लिख्योड़ा 18 ग्रंथ मिलै जिणमें भगवत गीता की गंगाजळी टीका, परमार्थ विचार, योगसूत्र की टीका, अलख पचीसी, चतुर चिंतामणि, अनुभव प्रकास, चतुर प्रकास इत्याद प्रमुख है। आप राजस्थानी अर ब्रज भासा में कवितावां लिखी। भाव प्रवणता, मौलिकता अर सुभाविकता री दीठ सूं आं री कवितावां विसेस महत्त्ववाळी हैं।

**मोड़सिंह महियारिया (सन् 1861 ई.) :–** चारण काव्य रा मानीता कवि रै रूप में महियारिया जाणीजै। अै सूर्यमल्ल मिश्रण री 'वीर सतसई' नै पूरी करणै वास्तै 453 दूहा लिख्या हालांकि आं रा लिख्योड़ा दूहा अर सूर्यमल्ल मिश्रण रै दूहा में प्रतिभा रै आधार माथै भेद हुवणो सुभाविक है।

**हिगळाजदान कविया (सन् 1861–1948 ई.) :–** हिगळाजदान कविया चारण सैली रा प्रभावसाली कवि हा। आं रो जलम जयपुर रै नेड़ै सेवापुरा गांव में हुयो। आपरी रचनावां में 'मृगया मृगेन्द्र', 'प्रत्यय पयोधर', 'साल गिरह शतक', 'मेहाई महिमा', 'दुर्गा बहतरी', 'आखेट अपजस', 'बाणियो रासो' इत्याद महताऊ हैं। आपरी करणीजी अर इन्द्रबाई री स्तुति भी लिख्योड़ी हैं। आप डिंगल रा विद्वान हा।

**केसरी सिंह बारहठ :–** केसरी सिंह बारहठ प्रसिद्ध क्रान्तिकारी अर देसभगत कवि हा। आं रो पूरो परिवार आजादी रै वास्तै बलिदान कर्‌यो। आप मेवाड़ रा महाराणा फतैसिंह नै सम्बोधित कर'र '**चेतावणी रा चूंगट्या**' (13 सोरठै) लिख्या जिका घणा चर्चा जोग रैया। वीर रस रो ओजपूरण वरणन आपरी विसेसता है।

**उदयराज ऊजळ (सन् 1885–1967) :–** उदैराज ऊजळ रो जलम मारवाड़ में उजळा गांव (पोकरण रै नेड़ै) में हुयो। आप चारण समाज रा मानीता विद्वान हा। 'दीपै वारां देस, ज्यांरौ साहित जगमगै' जैड़ी प्रेरणादायक पंगत सूं लोगां रो साहित कांनी ध्यान खीच्यो। आं रै काव्य में राजस्थान री धरती इतियास अर भासा सारू घणो प्रेम है। आपरी रचनावां में धूड़सार, मारवाड़ रा वीर, दूध प्रकाश, मात भासा दोहावली, भानिया रा दूहा, स्वराज शतक, तेज सतक, सर्वोदय सतक, श्रमसतक, सती सतक इत्याद चावी रैयी हैं।

**नाथूसिंह महियारिया (सन् 1891–1973) :–** नाथूसिंह महियारिया पारम्परिक सैली रा कवि रैया हैं। ईसरदास, बांकीदास अर सूर्यमल्ल मिश्रण जैड़ा कविया री वीर परम्परा सूं ओतप्रोत सतसई री परम्परा में अै खुद भी 'वीर सतसई' काव्य लिख्यो। आं री दूजी रचनावां में 'गांधी सतक', 'हाडी सतक', 'चूंडा सतक', 'झालामान सतक', 'वीर सतक', 'कश्मीर सतक' इत्याद प्रमुख हैं। 'वीर सतसई' में जुगधरम नै देखतां थकां त्याग अर वीरत्व रो चित्रण मिलै।

परम्परागत काव्य रा दूजा रचनाकारां में रावल नरेन्द्रसिंह, बालाबक्स पालावत, मुरारि दान, किशनजी, कविराज मोहन सिंह राव, मानकुमारी, गणेशपुरी, प्रतापकुंवरी इत्याद हैं। परम्परागत काव्य आजादी रै पछै भी लिख्यो गयो है। कीं कवि तो आज भी अैड़ो काव्य लिखै।

**आजादी : नुवीं चेतना रो उदै :–** आजादी किणी भी देस रै वास्तै अेक महताऊ मूल्य है। 15 अगस्त 1947 नै आपणो देस आजाद हुयो अर ईं पछै देस रै राजनीतिक, सामाजिक अर धारमिक परिवेस में घणो बदलाव आयो। आजादी रै पछै देस रै जीवण में नुवीं चेतना रो उदै होवणो सुभाविक हो। आजादी रै साथै लोगां री मोकळी कामनावां जुड़ियोड़ी ही। इण रै साथै ई साथै नुवै निरमाण री सुख–सुविधावां री कल्पनावां भी। राजस्थान में भी आजादी रै पछै महताऊ बदलाव आयो। अप्रेल 1949 में राजस्थान संघ री थरपना हुयी अर सामन्ती व्यवस्था रो अन्त हुयो। जन साधारण में इण बदलाव री घणी खुसी ही।

1952 ई. में पैलो आम चुनाव हुयो अर देस रा प्रतिनिधि देस री व्यवस्था री बागडोर संभाळी। राज्यां रो विलीनीकरण, जमींदारी प्रथा रो खात्मो, मजदूरां रै हितां री रिच्छा अर हरिजनां सारू अलेखूं योजनावां री घोसणा– कीं अैड़ा काम हा जिकां सूं लोगां नै आजादी रो अहसास हुयो अर आ आसा बंधी के देस रै मांय कीं नुंवो बदलाव जरूर आसी। पण बदलाव री अै उम्मीदां सन् 1955 ई. तांई आवतां–आवतां गायब हुवण लागी। च्यांरू तरफ भाई–भतीजावाद, सुवारथ भावना, अनाचार, घूंसखोरी इत्याद स्थितियां फैली। 1960 ई. तांई आवतां–आवतां नेहरू युग रो अन्त हुयगो, अैड़ो मैसूस हुयो। 1962 ई. में चीन रो हमलो, 1964 ई. में नेहरू रो निधन, 1965 ई. में भारत अर पाकीस्तान रो जुद्ध, 1971 ई. में बंगला देस री लड़ाई, 1973 ई. में बिहार में छात्रां रो आंदोलन अर 1975 ई. में आपात स्थिति, 1977 ई. में सत्ता रो बदलाव अर 1984 ई. में श्रीमती इंदिरा गांधी री हत्या– अै राजनीति छेत्र री की अैड़ी घटनावां ही जिकी पूरै राजनीतिक परिवेस नै झकझोर दियो।

आरथिक छेत्र में देस रै विकास सारू 1951 ई. में पंचवरसीय योजनावां री सरूआत हुयी। 1959 ई. में पंचायत राज व्यवस्था लागू हुयी अर राज्य रै मांय शिक्षा, चिकित्सा, खेती सिंचाई, यातायात, उधोग धंधा इत्याद नै बढावो दियो जिण सूं राज्य री विकास यात्रा सरू हुयी। पण बेगी ई प्रसासन री आपाधापी, नौकरसाही अर भ्रस्टाचार रो सीधो असर जनता माथै हुवण लाग्यो अर लोगां में आक्रोस अर विरोध री भावनावां भड़की। लोगां रो आजादी सूं मोहभंग हुवण लाग्यो। इण मोहभंग रो सगळा सूं बेसी असर मध्यवरग माथै हुयो। सामाजिक मूल्यां रो विघटन, संयुक्त परिवारां रो टूटणो अर बढ़ती बेरोजगारी री समस्यावां रै कारण समाज री स्थितियां में अत्तो बेगो बदलाव आयो के लोग आजादी नै भूल'र अेक दूजै संघर्स री स्थिति सूं जूझणै लाग्या।

**साहित्यिक परिवेस :–** आजादी रै पछै आयोड़ा बदलाव रो असर जठै राजनीतिक, सामाजिक अर आरथिक स्थितियां माथै पड्यो, बठै ई साहित्य री रचनात्मक चेतना भी उण सूं प्रभावित हुई। सामन्ती व्यवस्था रो टूटणो, रूढीवादी मानसिकता, गांवां रो पिछडोपणो, पंचायत राज व्यवस्था सूं गांवां में फैली गंदी

राजनीति, बेरोजगारी, सहरां री तरफ नौकरी वास्तै दोड़णौ, आयी साल पड़तो काळ अर जनमानस में फैल्योड़ो असंतोस अर आक्रोस जैड़ी स्थितियां रो असर रचनाकार माथै भी पड़्यो अर वो आपरी संवेदनावां नै युग रै परिवेख में अभिव्यक्त करणै लाग्यो। आं स्थितियां सूं राजस्थानी कविता अर विधावां में ईं बदलाव री स्थितियां उजागर होवणै लागी।

आजादी रै आसै–पासै राजस्थानी साहित्य में रचनात्मक लेखन, सोध अर पत्रकारिता रै छेत्र में नुवीं परम्परावां री नींव पड़ी। सूर्यकरण पारीक, प्रो. नरोत्तमदास स्वामी, अगरचंद नाहटा, डॉ. मोतीलाल मेनारिया, डॉ. कन्हैयालाल सहल, डॉ. नारायणसिंह भाटी, सौभाग्यसिंह शेखावत, भंवर सिंह सामौर इत्याद विद्वान राजस्थानी रै प्राचीन साहित्य नै हिन्दी जगत रै सामी राख्यो। सूर्यकरण री 'बोलावण' या 'प्रतिज्ञापूर्ति' (1933) नांव सूं राजस्थानी में अेक अेकांकी संग्रै छप्यो। इण रै पछै राजस्थानी काव्य री महताऊ रचना चन्द्र सिंह री 'बादळी'( 1941) छपी जिकी पारम्परिक सैली सूं हट'र अेक नुवै विसै नै प्रस्तुत कर्‌यो। आ आधुनिक राजस्थारी री पैली कृती ही। इण रै पछै मुकुल री 'सैनाणी'(1944) मंचीय कविता आयी अर इण सूं राजस्थानी रो अेक नुंवो माहौल बण्यो। 1944 में दिनाजपुर में राजस्थानी रो पैलो सम्मेलन हुयो। ईं रै साथै ई साथै राजस्थानी में पत्रिकावां ई छपण लागी। उण बखत री पत्रिकावां में राजस्थानी (1946), राजस्थान भारती (1946), मारवाड़ी (1947) इत्याद ही। आजादी रै पछै तो केई पत्रिकावां निकळी।

सन् 1950 ई. रै पछै राजस्थानी लेखन में नुंवो जोस आयो अर गद्य–पद्य में केई नुंवा रचनाकार उदै हुया। 1953 ई. में रावत सारस्वत री 'मरूवाणी' (जयपुर) अर 1954 ई. में किशोरकल्पना कांत रो 'ओळमो' (रतनगढ़) आपरै बखत री अैड़ी पत्रिकावां ही– जिकां रै माध्यम सूं घणकरा रचनाकार छप'र साहित्य में आपरी साख बढ़ाई। आं दोनूं पत्रिकावां रो इतियासू योगदान है। राजस्थानी साहित्य सारू रचनाकार अर पाठक तैयार करणै में आं री भूमिका घणी सरावण जोग रैयी।

सन् 1960 ई. में अेड़ै–छेड़ै राजस्थानी रै रचनात्मक लेखन में की पैलां सूं बेसी गति आयी अर साहित्य री विविध विधावां में सिरजण हुवण लाग्यो। हिन्दी रै साथै–साथै मंचां माथै भी राजस्थानी कविता लोकप्रिय हुवण लागी। इण बखत राजस्थानी कविता माथै विचार करां तो ओ लखावै के अेकानी मंच सूं प्रभावित होय'र गीत खूब लिख्या गया तो दूजै कानी रचनात्मकता रै मांय रास्ट्रीयता, सिणगारू भाव, प्रगतिसील चेतना, प्रक्रति चित्रण इत्याद प्रव्रत्तियां उभरी। 1965 ई. रै पछै राजस्थानी कविता में कथ्य अर सिल्प री दीठ सूं नुवो बदलाव आयो अर कीं नुवां कवि युगबोध अर आज री संवेदनावां सूं जुड़'र आपरै आसै–पासै रै परिवेस नै साव नुंवी अभिव्यक्ति दी। इण तरै राजस्थानी गद्य अर दूजी विधावां में भी नुंवी संवेदनावां उभरी। अठै पैलां राजस्थानी कविता री प्रव्रत्तियां अर पछै राजस्थानी गद्य री प्रव्रत्तियां माथै विवेचन करस्या।

**काव्यधारा :–** आजादी रै पछै राजस्थानी कविता में कथ्य अर सिल्प री दीठ सूं विविधता अर व्यापकता आयी है। अठै अेकानी सिरजण में परम्परागत सैली भी दीसै तो दूजै कानी समसामयिक परिवेस सारू जागरूकता भी। राजस्थानी कविता री विविध प्रव्रत्तियां रो विवेचन इण तरै कर्‌यो जा सकैः–

1. रास्ट्रीय सांस्क्रतिक धारा
2. व्यक्तिवादी गीत धारा
3. प्रगतिसील धारा
4. प्रक्रति चित्रण
5. हास्य व्यंग्य

6. सम्बोधन काव्य

7. नुंवी कविता

**1. रास्ट्रीय सांस्क्रतिक धारा :–** आजादी सूं पैलां परम्पराऊ काव्य री रचना तो हुवती रैयी पण आजादी रै पछै जिको परिवेस में बदलाव आयो उण रै परिपेख में रास्ट्रीय अर सांस्क्रतिक चेतना सूं भरपूर काव्य धारा रो सिरजण भी हुयो। 1962 ई. में भारत चीन अर 1965 ई. में भारत –पाक जुद्ध रै कारण आखै देस में अेक अैड़ो वातावरण बण्यो के देसभगती अर रास्ट्र–चेतना री नुंवी लहर उपजी अर उण रै सन्दर्भ में कवि भी उणी भांत रो काव्य लिख्यो। आं कवितावां में कवि देस नै सगळा सूं ऊंचो समझता थकां कवितावां लिखी। आं कवितावां में जलम भोम रै सारू त्याग, बलिदान अर सरबस अरपण करणै री भावनावां दीसै। देस सारू आपरै प्राणां रो बलिदान, आ रचनावां री प्रधान प्रव्रति ही। राजस्थानी कवि इण स्थिति रै सन्दर्भ में अेकानी अैड़ा चरित नायक प्रस्तुत कर्‌या, जिका देस रै वास्तै त्याग अर बलिदान करता आया है तो दूजै कानी अैड़ी पद्य कथावां लिखी जिणां रै माध्यम सूं वीर परम्परावां रा भाव उपजै। अैड़ी रचनावां उण बखत घणी प्रेरणादायी रैयी।

कवि आपरै परिवेस सूं जुड़ियोड़ो रैवै पण केई बार मौजूदा बखत री समस्यावां रो समाधान पौराणिक या अैतिहासिक प्रसंगा नै लेय'र उण रै माध्यम सूं भी प्रस्तुत कर सकै। कवि रो ओ बोध संस्क्रति रै मान–मूल्यां नै आज रै युग–सन्दर्भ में व्याख्यायित करै। इक्कीसवीं सताब्दी विग्यान अर तकनीकी प्रगति सूं प्रभावित है। आज रो विचार जगत मानवता रै सांमी केई चुणोतियां राखै। अैड़ी स्थिति में मिनख री अस्मिता नै बचावण सारू सांस्क्रतिक मानव मूल्यां री धरोहर नै बचावणो जरूरी है। राजस्थानी कवि रास्ट्रीयता रै साथै–साथै सांस्क्रतिक संकट नै भी मैसूस कियो इण वास्तै मानवतावादी भावनाओं में ओतप्रोत साहित्य रो सिरजण भी आं रो अेक उदेस रैयो।

रास्ट्रीयता री भावना नै जागरित करणै सारू कवि इतियास में कीं अैड़ा चरित्र लिया जिका भावनावां उपजा सकै अर मिनख रै मांय वीरता, त्याग, कर्त्तव्य निस्ठा अर स्वाभिमान भर सकै। मुकुल री 'सैनाणी', कन्हैयालाल सेठिया री 'पातल़ अर पीथल', मुकुल रो 'कोड़मदे अर हिरोल़', मनोहर शर्मा री 'सुजानसिंह शेखावत', 'बालू जी चांपावत' अर 'मानसिंह झाला, गिरधारी सिंह पड़िहार री 'मेघनाद' अर 'घूड़कोट', करणीदान बारहठ री 'दोवड़ा आंसू' इत्याद प्रमुख हैं। आं कथावां में राजस्थान री संस्क्रति रो प्रेरणादायी सरूप तो त्याग, सूरवीरता, बलिदान, स्वाभिवान इत्याद रो आदर्स रूप प्रस्तुत कियो है।

रास्ट्रीयता रो अेक सुर भारत–चीन जुद्ध रै समय सगळी पत्र–पत्रिकावां में उपज्यो। कवि साम्प्रदायिकता, संकीरणता अर सुवारथ नै त्याग'र देस सारू मर–मिटणै नै ई परम कर्त्तव्य बतायो। अैड़ी रचनावां 'मरूवाणी', 'ओळमो', 'संघशक्ति' इत्याद पत्रिकावां में खूब छपीं। परमवीर पीरूसिंह अर परमवीर सैतान सिंह नै लेय'र फुटकर कवितावां खूब लिखीजी आं में सवाई सिंह धमोरा, मुकुन सिंह, रेवतसिंह भाटी, अजयदान बारहठ, रावल नरेन्द्रसिंह, उदयराज उज्जवल रो नांव लियो जा सकै। अै सगळी रचानावां डिंगल सैली में छंद रै विधान में लिख्योड़ी हैं इण वीर काव्य परम्परा में नारायण सिंह भाटी (परमवीर), हनुवन्त सिंह देवड़ा, बनवारी लाल सुमन इत्याद रो नांव भी लियो जा सकै।

वीर काव्य परम्परा में कीं कविं चरित्रां नै लेय'र आपरी रचनावां लिखी। नारायण सिंह भाटी रो 'दुर्गादास' (1956) मुगत छंद में लिख्योड़ो पैलो प्रौढ़ अर प्रभावसाली काव्य है। इण रै मांय मानव भावना नै साकार करणै सारू आदमी री अस्मिता री लड़ाई लड़णै वाळै चरित्र दुर्गादास नै प्रगट कर्‌यो है। 'दुर्गादास'

रै बहानै कवि अेक अैड़ा मिनख नै प्रगट्यो है जिका सम्पूरण रूप सूं मिनख री भावना नै चरितार्थ कर सकै। कथ्य अर सिल्प री दीठ सूं 'दुर्गादास' अनुपम रचना है। परम्परागत काव्य में बनवारी लाल सुमन रो 'देल्यां रो दिवलो' (1963) महताऊ कृती है जिणमें महाराणा प्रताप रै मानवी रूप नै उजागर कर्‌यो है।

रामेश्वर दयाल श्रीमाली री 'हाडी राणी' (1965) भी मुगत छंद में लिख्योड़ी काव्य रचना है। हणुवन्त सिंह देवड़ा री 'सूरा दीवा देशरा'(1967), मुकुनसिंह री 'सैतान सतसई', 'अमरसिंघ री वेलि' (1965), 'पाबूजी री वेलि'(1964) इत्याद कृतियां भी महान अर प्रेरणादी चरित्र नै प्रस्तुत करै। मुकुनसिंह डिंगल सैली रा प्रौढ़ रचनाकार हैं अर अै डिंगल में केई महताऊ वेलियां री रचना करी हैं। इणी भांत चरित–नायकां नै लेय'र सत्यनारायण अमन री 'शीशदान'(1961), रघुराजसिंह हाडा री 'हरदोल'(1978) रचनावां भी महताऊ हैं आं रचनावां में अैतिहासिक चरित नायकां रै त्याग अर बलिदान री अमर गाथावां नै प्रगटी है।

चरित्र नायकां री इण परम्परा में महात्मा गांधी नै माध्यम बणाय'र भी की काव्य लिख्या गया। आं में गांधी गाथा, गांधी सतक (नाथूसिंह महियारिया), गांधी प्रकास (सं. वेदव्यास ),'बापू' (मनोहर शर्मा) अर सूर्यमल्ल मिश्रण नै आधार बणाय'र प्रेमजी प्रेम 'सूरज' (1978) काव्य लिख्यो।

सांस्क्रतिक चेतना रो सुर भी राजस्थानी सिरजण रो प्रमुख आधार रैयो है अर इण ढंग री रचनावां में कवि सांस्क्रतिक जीवन मूल्यां नै आपरै बखत रा जीवन–मूल्यां रै सन्दर्भ में नुवीं व्याख्या देवतो रैयो है। अैड़ा कवियां में डॉ. नारायण सिंह भाटी, सत्यप्रकाश जोशी, गिरधारी सिंह पड़िहार, महावीर प्रसाद जोशी, मांगीलाल चतुर्वेदी, सुमेर सिंह शेखावत इत्याद प्रमुख हैं। डॉ. मनोहर शर्मा राजस्थानी रा वरिस्ठ रचनाकार हैं उणां री काव्य कृतियां में कूंजा, गोपीगीत, अंतरजामी, अमरजामी, अमरफल इत्याद प्रमुख हैं। आं कवितावां में लोक संस्क्रति अर आध्यात्मिक सांस्क्रतिक रो अैड़ो समन्वय थरप्यो है के मिनख उण री तरफ झुक्या बिना रैय नी सकै। 'गोपीगीत' पौराणिक प्रसंग, 'अमरफल' अर रचनावां में उपनिषदां नै आधार बणाय'र भावनावां नै प्रगटी है।

सत्यप्रकाश जोशी री महताऊ कृती 'राधा' (1960) पौराणिक प्रसंग नै लेय'र मुगत छंद में लिख्योड़ी है। इण में राधा रै पौराणिक प्रणय प्रसंग नै नुंवै रूप में प्रस्तुत कियो है। इण काव्य में कथानक रो मूलभाव अतै सरल अर सीधै रूप में उजागर हुयो है के पूरै काव्य में भावतरंग री तन्मयता दिखायी देवै। प्रेम राधा रो मूल सुर है जिणमें व्यापकता अर उदातत्ता है। प्रेम री प्रतीक राधा दुनियां रै दुःख दरद नै आपरै प्रेम में समेट लेवै और इण वास्तै वा आपरै मीत कान्हा नै जुद्ध न लड़णै रो आग्रह करती थकां जुद्ध सूं पूठो बुला लेवण री बात करै। इण काव्य में राधा रो जुद्ध विरोधी रूख आज रै परिवेख में साव सांचो प्रतीत हुवै, जिंया –

**मन रा मीत कान्हा रै –**
**जग में जै मंडग्यो घमसाण, तो**
**भाई पर भाई करसी वार**
**आपस में लड़सी, मरसी मानखो**
**चुड़ल़ा फौड़ैला काल़ा ओढ**
**अमर सुहागण थारी गोपियां**

इण तरै राधा रै सुर में मानवता री भावना है।

सत्यप्रकाश जोशी री दूजी काव्यकृती 'बोल़ भारमल़ी'(1974) है इणमें भारमली रै अैतिहासिक चरित्र नै आत्मकथात्मक सैली में प्रस्तुत करतां थकां पूरण पूरूस री आधुनिक अभिव्यक्ति है। सामन्ती वातावरण

सूं जुड़ियोड़ै इण काव्य में भारमली रै मनोभावां रो यथारथ चित्रण हुयो है। प्रेम अर सुन्दरता री सरल अनुभूतियां सूं रच्योड़ो ओ काव्य घणो मारमिक तो अेक नुंवी अवधारणां नै प्रगटै। कवि खुद नारी सूं पूछै –

**भोगण दो थारी देह**
**मिटावण दो थांरो रूप**
**अेकाकार कर दो थारी आतमा**
**करदो मुगत आवागमण सूं**
**लुगायां थे जुग नै पूरण पुरूस ।**

सांस्क्रतिक चेतना रा नुंवा आयामां री प्रस्तुति डॉ. नारायण सिंह भाटी री 'मीरा' (1976) काव्य में दीसै। अैतिहासिक चरित्रां री अवतारणां में डॉ. भाटी री मौलिक दीठ रैयी है। मध्यकाल रै सामन्ती समाज में रैवणवाळी मीरा आपरै अन्तरमन रै विरोध नै नारी मुगती रै सन्दर्भ में प्रगट करै। आपरै संघर्स में जूझणै वाळी मीरा पुरूस री सहयोगिनी बण'र पीड़ित स्थितियां सारू चेतावनी देवती कैवै –

**थे कांई देवो बर बर में**
**सतियां री साख**
**थांरी अरधंगी नै सूंपियौ**
**थे सेजा रौ नै चिता रौ ई आध**
**जे वै जूझती जीवण थारे जोड़**
**थे जग रो कोई समर नी हारता ।**

भावबोध अर सिल्प री दीठ सूं 'मीरा' अेक प्रभावशाली काव्य कृती है।

महावीर प्रसाद जोशी क्रस्ण चरित्र नै आधार बणाय'र बिंद्रावन (1978), मथरा (1982), द्वारिका (1985) अर धरमक्षेत्र (1988) महाकाव्यां री रचना करी। आं महाकाव्यां में जोशी जन मानस में रच्योड़ा पौराणिक प्रसंगा नै लेय'र आज रै सन्दर्भ में उणां री सांतरी अभिव्यक्ति दी है। जोशी री आं रचनावां में परम्परागत छंद रो प्रयोग हुयो है।

क्रस्ण काव्य री इण परम्परा में मांगीलाल चतुर्वेदी रा 'क्रस्ण चरित' भी दो खंडा रै मांय विभाजित प्रबंध काव्य है। इतियास अर संस्क्रति री समन्वित चेतना सूं जुड़ियोड़ा काव्यां में श्रीमन्त कुमार व्यास रो रामदूत (1966), कान्हमहर्सि रो मरू मंयक (1961), विश्वनाथ विमलेश री रामकथा (1968), गिरधारी सिंह पड़िहार रो मानखो (1964), करणीदान बारहठ री शकुन्तला (1974), अम्बू शर्मा री अम्बू रामायण इत्याद काव्य दिखायी देवै। श्रीमन्तकुमार 'रामदूत' रै अलावा कैकयी, जानकी, मांडवी, इंदिरा गांधी अर मीरा प्रबंध काव्य लिख्या हैं। अै सगला नारी प्रधान काव्य हैं।

सुमेर सिंह शेखावत रो 'मरू मंगल' कवि रै मुखर चिंतन नै प्रगटै जिणमें सांस्क्रतिक चेतना रै साथै जीवन–मूल्यां नै सांतरै रूप में प्रगट कर्‌यो है। वाल्मीकी अर मैथिलीशरण गुप्त रै काव्य में जिण सांस्क्रतिक चेतना रो सुर अभिव्यक्त हुयो है, वो ही सुर सुमेर सिंह शेखावत रै काव्य री भी अेक खासियत है।

रास्ट्रीय अर सांस्क्रतिक चेतना रा दूजा कवियां में नानूराम संस्कर्ता रो 'लंकाणधणी' अर 'गोपीचंद', सत्यनारायण अमन रो 'शीशदान'(1961), सूर्यशंकर पारीक री 'धरती'(1976), अम्बू शर्मा रो 'यीशु हजारा' अर 'अम्बू रामायण',मुरलीमनोहर बासोतिया री 'वाह भाई शेखावाटी', नारायण सिंह शिवाकर री 'दुर्गादास सतसई'

इत्याद हैं। भानसिंह शेखावत री 'हल्दीघाटी', धोंकल सिंह चरला रो 'मरू महिमा', ताऊ शेखावाटी रो 'हम्मीरकाव्य', रामसिंह सोलंकी रो 'जन नायक प्रताप', उम्मेद सिंह खींदासर रो 'महाराणा री ओळयू' (1959) इत्याद काव्य कृतियां भी उल्लेखजोग है। आधुनिक सैली रै रचनाकारां में रघुराज सिंह हाडा, गजानन वर्मा, शक्तिदान कविया, कल्याण सिंह राजावत, राम सिंह सोलंकी, बस्तीमल सोलंकी, भगवती प्रसाद चौधरी, कल्याण गौतम, बद्रीप्रसाद राकेश, बजरंग लाल पारीक इत्याद हैं।

इण धारा रा प्रमुख कवियां रो परिचै इण तरै हैं :–

**मेघराज मुकुल :–** आजादी सूं पैला कविता लिखणवाळा कवियां में मेघराज मुकुल अैड़ा कवि हैं जिका '**सैनाणी**' जैड़ी वीर प्रसंग माथै लिख्योड़ी कविता सूं आखै देस में चावा हुया। चूरू जिलै रै राजगढ़ में जलम्योड़ा मुकुल री कई पद्य कथावां लिख्योड़ी हैं जिणां रै मांय कोड़मदे, आण री बात, दुरगावती, चंवरी इत्याद हैं। 'सैनाणी री जागी जोत' अर 'किरत्या' मुकुल री प्रकाशित रचनावां हैं। आजादी रै पछै मुकुल री रचनावां में प्रगतिसील विचारां रो रूझाण भी दीसै। मुकुल री भासा में ओज, प्रवाह अर सरलता है।

**डॉ॰ मनोहर शर्मा :–** झुन्झुनू जिलै रै बिसाऊ कस्बे में जलम्योड़ा डॉ. शर्मा राजस्थानी रा मानीता विद्वान, समरथकवि अर लोक साहित्य रा लूंठा जाणकार हैं। कविता रै साथै–साथै आप रो गद्य में भी रचनावां मिलैं। अरावली री आत्मा, गीतकथा, कूंजा, गोपीगीत, अमरफल, अंतरजामी, पंछी, धरती माता, रस धारा, जन नायक, आरज धारा, अबलां गजमोती, धोरां रो संगीत, फूल पांखड़ी इत्याद काव्य रचनावां हैं। डॉ. शर्मा री चेतना बहुमुखी अर रास्ट्रीय, सांस्क्रतिक भाव धारा सूं जुड़ियोड़ी है। आं री रचनावां में बदलतै परिवेस अर युग चेतना रै माकूल जागरूकता भी है। सांस्क्रतिक गरिमा, प्रखर चिंतन, सहज सरल अभिव्यक्ति अर सिल्पगत विविधता आयरी विसेसता है।

**कन्हैयालाल सेठिया :–** आपरो जलम चूरू जिलै रै सुजानगढ़ कस्बै में 1919 ई. में हुयो। सरू में आपरी कविता 'पातल अर पीथल' मंचां माथै घणी लोकप्रिय हुयी। आपरी काव्य कृतियां में मींझर, रमणियै रा सोरठा, कूं–कूं लीलटांस, धरमजलां, धरकूंचा, मायड़ रो हेलो, सबद, सतवाणी, अघोरी काल, हेमाणी, लीकलकोलिया, दीठ इत्याद प्रमुख हैं। सेठियां री काव्य चेतना में सांस्क्रतिक, प्रगतिसील अर आध्यात्मिक बोध रा विविध आयाम हैं। चिन्तनपरक दीठ, लोकजीवन रो प्रभाव अर संवेदनाऊ सिरजण आं रै काव्य री विसेसतावां हैं। सरल भासा रै कारण सेठिया री अेक अलग ओळखाण है।

**डॉ॰ नारायण सिंह भाटी :–** आपरो जलम 1930 ई. में जोधपुर रै मालूंगा गांव में हुयो। भाटी राजस्थानी भासा रा समरथ अर स्रेस्ठ कवि हैं। ओलू, सांझ, दुर्गादास, जीवन धण, परमवीर, कल्प, मीरा, बरसा रा डीगोड़ा डूंगर लांघिया अर मिनख नै समझाणो घणो दोरो है भाटी री प्रमुख काव्य कृतियां है। प्रेम अर सौन्दर्य री संवेदना माथै भाटी रै लिख्योड़ा काव्य में सांस्क्रतिक मूल्यां रो भी जबर चित्रण है। भाटी बिंया रूमानी संवेदना रा कवि हैं आ रूमानियत कदै किणी रै वियोग सिणगार में (ओलू) तो कदै प्रक्रति चित्रण (सांझ) में प्रगट हुवती रैयी है। 'कल्प' में चिंतनपरक गीत हैं।

'**दुर्गादास**' भाटी री ई नी राजस्थानी काव्य री अेक लूंठी उपलब्धि है। जिण मानवीय धरातल माथै भाटी दुर्गादास जैड़ै चरित्र नै प्रस्तुत कियो है उण ऊंचाई तांई भाटी री कोई रचना नी पूगी। सांस्क्रतिक विरासत नै आज रै सन्दर्भ में किण तरै बचाय'र राखी जा सकै है, आ भाटी री केई काव्यकृतियां रो मूल सुर है। इणी भांत 'मीरा' जैड़ा चरित्र में वै मध्ययुग री उण नारी नै प्रस्तुत करी है जिकी सामन्ती वातावरण में सगळी जंजीरा नै छोड़'र नारी मुगती री डगर तय करै। अधूरी कल्पना, प्रतीक, बिम्बविधान अर नुंवा उपमान भाटी रै सिल्प री विसेसता है। सिरजण री गैराई, व्यापकता अर प्रौढ़ता रै कारण भाटी री कविता

आपरी अलग ओळखाण बणावै।

**सत्यप्रकाश जोशी :–** आपरो जलम 22 मई, 1920 ई. नै जोधपुर मे हुयो। सरूआत में जोशी रा गीत घणा चावा हुया। परम्पराऊ काव्य चेतना रै प्रभाव सूं जोशी भी 'ढ़ोलामारू' अर 'उजळी' जिसी पद्य कथावां लिखी। दीवा कांपै क्यूं, लस्कर ना थमै, राधा अर बोल भारमली इत्याद जोशी री प्रमुख कृतियां हैं। रूमानी रूझाण, लोकगीतां री सैली अर चिंतन री सहजता जोशी रै काव्य री विसेसता कहीजै।

'राधा' अर 'बोल भारमली' जोशी री दो विसेस काव्य कृतियां हैं। आगत–अणागत, सोन मिरगला, आहुतियां, जोड़ायत, गांगेय इत्याद कवितावां जोशी रै सोच नै आज रै सन्दर्भ में प्रगटै। लोक जीवन री सरलता, मिठास अर भासा रो गेय रूप जोशी रै काव्य री निजू विसेसतावां हैं।

महावीर प्रसाद जोशी :– आपरो जलम झुन्झुनू जिलै रै डूंडलोद कस्बे में 1914 ई. में हुयो। आप राजस्थानी रा कवि अर विद्वान हा। क्रस्ण परम्परा में आपरा च्यार काव्य व्रिन्दावन, मथरा, द्वारिका अर धरमछेत्र छप्योड़ा हैं। सांस्क्रतिक चेतना रो सहज रूप आपरै काव्य री विसेसता है। आप 'राजस्थानी रामायण' भी लिखी। आपरो काव्य सांस्क्रतिक चित्रण री दीठ सूं सफल है।

**सुमेर सिंह शेखावत :–** आपरो जलम सीकर जिलै रै सरवड़ी गांव में 1935 ई. में हुयो। आं री कविता जातरा में प्रक्रति सूं लेय'र सांस्क्रतिक मूल्यां रो चित्रण है। कविता में कथ्य अर सिल्प री वां री निजू दीठ है। 'मेघमाळ' रितु काव्य परम्परा री महताऊ कृती है तो 'मरू मंगल' इतियास दरसन अर चिंतन री दीठ सूं सफल काव्य है। 'मरू मंगल' री रचनावां में सांस्क्रतिक चेतना अर आस्थावादी सुर है। छंद विधान री कसावट, सबद चयन, गंभीरता अर भासा रो टकसाळी रूप आं रै काव्य री विसेसतावां कही जा सकै।

**2. व्यक्तिवादी गीत धारा :–** गीत राजस्थानी काव्य री लोकप्रिय विद्या रैयी है। मध्यकाल में भी डिंगल गीतां री प्रस्तुति रैयी अर चारण कवि ओजस्वी भासा में आपरा गीत सुणावता रैया। आजादी सूं पैलां तो समाज सुधार अर आजादी सारू जनजागरती ल्यावण वास्तै गीत लिख्या गया अर मंचा माथै खूब सुणाया गया। निजूपणो, भावात्मकता, सुभाविकता अर भासा रो सम्प्रेसण आ गीतां री खासियत ही। प्रायः गीत लयात्मक हुवता अर आं सारू कवियां रा आप–आप रा सुर भी।

गीतां रै पछै राजस्थानी में पद्य कथावां रो प्रचलन हुयो। मुकुल री 'सैनाणी' अर कन्हैयालाल सेठिया री 'पातल–पीथल' कविता सूं कविता री इसी परम्परा ई पड़गी। आजादी रै पछै मंच माथै राजस्थानी गीतां री घणी मांग हुयी।

राजस्थानी गीतकारां री संवदेना जठै लोकजीवन सूं जुड़ियोड़ी ही, बठै लोकगीतां री सैली रो प्रभाव भी आं माथै आयो। राजस्थानी कविता नै मंच माथै लोकप्रिय बणावण में आं गीतकारां रो मोटो योगदान रैयो है।

गीत रो पख मूल रूप में भावना सूं जुड़ियोड़ो हुवै। इण वास्तै उण में निजू सुख–दुःख री अनुभूतियां प्रगटी जावै। व्यक्तिगत भावना सूं उपजियोड़ै गीतां में मन री पीड़ा, वेदना अर संघर्स रो चित्रण सुभाविक है। गीत में भाव री सच्चाई अर तीव्रता सुभाविक है। राजस्थानी में जिको गीत काव्य लिख्यो उणमें प्रेम, सिणगार, प्रक्रति, धरती प्रेम इत्याद रो चित्रण है।

ओजस्वी गीत परम्परा में मेघराज मुकुल अर कन्हैयालाल सेठिया रै पछै सत्यप्रकाश जोशी अर गजानन वर्मा रो उल्लेखजोग स्थान है। जोशी रूमानी मिजाज रा गीतकार हैं। उणां रै गीतां में लोकगीतां रै प्रभाव रो अहसास भी हुवै, कठै–कठै प्रगतिसील सुर भी निजर आवै। लोकगीत अर लोकसंगीत सूं गहरा जुड़ियोड़ा कवियां में गजानन वर्मा रो नांव सिरै। सुरीलो सुर, लोकगीतां री मिठास अर लोकधुनां रै संगीत

रो प्रभाव गजानन वर्मा रै काव्य री प्रमुख विसेसतावां है। 'धरती री धुन', 'सोनो निपजै रेत में', 'बारहमासो' आं रै गीतां रै तीन प्रमुख संग्रै हैं। गजानन वर्मा रै गीत में संवेदनावां रा केई पख हैं जिका मारमिकता रै साथै मन नै भा ज्यावै। 'हल्दी रो रंग सुरंग' अर 'संस्कार गीत' में ब्याव रै मोकै गाया जावण वाळा गीतां रो मारमिक रूप दीसै। 'सोवन थाल़' कविता रो अेक नमूनो :–

**पौ फाटी जद बोल़ण लाग्या**
**पंख पखेरू पीपल़ डाल़**
**छोटी द्योराणी पीसण बैठी**
**बाजर मोठ चिणा री दाल**
**बड़ी जिठाणी जायौ गीगल़ो**
**बाजण लाग्यो सोवन थाल़ ।**

ध्वनिपरक गीत लिखणवाळा में गजानन वर्मा अेकला कवि हैं। 'सटकनल़ी' अर 'धुण रै पिंजारा' वर्मा रा ध्वनिपरक गीत हैं। गीतां रै मांय गजानन वर्मा केई प्रयोग कर्‌या।

राजस्थानी गीतकारां में किशोर कल्पना कांत री अेक अलग पिछाण है। वै आजादी सूं पैलां काव्य सिरजण में लाग्योड़ा हा। वां रै गीतां री संवेदना व्यापक अर प्रभावी है। भावात्मक स्थितियां रै साथै आपरै चिंतन री गहराई नै जोड़'र गीत लिखणा, किशोर कल्पना कांत री विसेसता है।

कल्याण सिंह राजावत रै गीतां में सिणगार अर प्रक्रति री प्रधानता है। राजस्थान रा चावा गीतकारां में राजावत री ठावी ठौड़ है। राजावत मूल़ रूप में रूमानी मिजाज रा कवि है पण प्रक्रति अर खेत–खल़ै सूं जुड़ियोड़ी वां री संवेदना प्रगतिसील भी है। 'रामतिया मत तोड़', 'आ जमीन आपणी' अर 'कुण कुणनै समझावां' आपरा प्रमुख गीत संग्रै है।

रघुराज सिंह हाडा अर लक्ष्मणसिंह रसवंत भी चावा गीतकार हैं। रघुराज सिंह हाड़ौती रा प्रमुख गीतकार हैं। 'फूल केसूला फूल' अर 'अण बाच्या आखर' आं रा दो गीत संग्रै हैं। रसवंत रा गीत सिणगार परक हैं।

मोहम्मद सदीक रै गीतां री संवेदना आज रै जीवन री विसगतियां जुड़ियोड़ी है। 'जूझती जूण'(1982) अर 'अंतस तास'(1980) आं रा चावा गीत संग्रै है।

सीताराम महर्सि रै गीतां में भाव री गंभीरता अर चिंतनपरक दीठ रैयी है। 'मछली मन म्हारो', 'मांटी री मुल़क', 'प्रीत पीड़ रो पाल़', 'मेल दी अडाणै चीत', 'रिमझोल', 'बोल इकतारो' इत्याद आपरा गीत संग्रै है। मदन गोपाल शर्मा (गोखां ऊभी गोरड़ी) रै गीतां में सिणगार री मादकता है। आज रै गीतकारां में भागीरथ सिंह भाग्य रै गीतां में विसयगत नवीनता अर सिल्प री ताजगी है। 'दरददिसावर' अर 'गीतां पैली घूघरी' आं रा दो संग्रै हैं।

राजस्थानी रा दूजा गीतकारां में नारायण सिंह भाटी, गणेशीलाल व्यास उस्ताद, रेवतदान कल्पित, सुमनेश जोशी, गिरधारी सिंह पड़िहार, मनुज देवापत, केशव पथिक, भीम पांडया, बद्रीदान गाडण (बिथा कलस, झूमको), दुर्गादान गौड़, मुकुट मणिराज, अमर सिंह राजपुरोहित, वीरेन्द्र लखावत, ओंकार पारीक, श्याम सुन्दर भारती, धनंजय वर्मा, कान्हदान कल्पित, रामगोपाल शर्मा नवल, आशा शर्मा, शक्तिदान कविया, ओम पुरोहित इत्याद हैं।

गीत रै साथै राजस्थानी में गजल भी घणी लिखीजी हैं अर मंचा माथै चावी भी हुयी। गजल

लिखणवाळा कवियां में सत्येन जोशी (बंतल), सांवर दइया (आ सदी मिजली मरै), रामेश्वर दयाल श्रीमाली (गुनैगार गजल), शंकरलाल स्वामी (गजल रो गजरो), कुन्दन सिंह सजल, प्रदीप शर्मा, प्रेमजी प्रेम इत्याद हैं।

मोहन आलोक राजस्थानी काव्य में नुवा प्रयोगां रै वास्तै घणा जाणीजै। आप 'तुक्तक' रै रूप में 'डांखळा' लिख्या जिका घणा चावा हुया। अै 'डांखळा' तीखै व्यंग्य सूं भरियोड़ा है। अंग्रेजी में जिको लिमरिक है उणनै ई राजस्थानी में 'डांखलो' बणा दियो। इंया ई अंग्रेजी में सोनेट लिख्या है और राजस्थानी में मोहन आलोक भी सोनेट (सौ सोनेट) लिख्या है। राजस्थानी में 'डांखला' लिखणवाळा दूजा कवियां में विद्यासागर शर्मा, बजरंग सारस्वत, रामस्वरूप किसान, गणपति, सम्पत सरल इत्याद हैं।

इण गीतधारा रां प्रमुख गीतकारां रो परिचै इण तरै हैंः–

किशोरकल्पना कांत :– आपरो जलम चूरू जिलै रै रतनगढ़ कस्बे में 1930 ई. में हुयो। 'ओळमो' जैड़ी साहित्यिक पत्रिका रै माध्यम सूं आप जिकी सेवा करी, वा अैतिहासिक महत्त्व री है। आप राजस्थानी रा वरिस्ठ गीतकार हैं। आं रै गीतां में मानव मन री संवेदनावां रै अछूतै रूप रै साथै आध्यात्मिक चिंतन भी समायोड़ो है। 'मानखो हेलो मारै' आपरो पैलो गीत संग्रै हो। दूजी पोथ्यां में 'कूख पड्यै री पीड़', 'तार बजा', 'देखै जिसी चितारै' इत्याद गीत संग्रै है। आपरै गीतां में गैराई, प्रौढ़ता अर चिंतनात्मकता है। अेक गीत रो नमूनो इण भांत :–

**इण जनम में फूल–फल है कमळ भर तळाब है**
**इण जनम में सूल, सुगंध पुसप रो बणाव है**
**इण जनम में हरख,निरख , परख रो बजार है**
**इण जनम में जिण री निजर, चाँद रो पड़ाव है**
**आतमा अमर सजन, जग नै जनम सार रे**
**असोक मती हार रे ।**

**कल्याण सिंह राजावत :–** आपरो जलम नागौर जिलै रै चितावा गांव में सन् 1939 ई. में हुयो। मंच रा चावा अर लूंठा गीतकार। प्रेम अर सिणगार रै भावां री मौलिक प्रस्तुति आं रै गीतां रो अछूतो पख है। 'रामतिया मत तोड़', 'आ जमीन आपणी' अर 'कुण कुणनै समझावां' आं रा तीन संग्रै है। 'आयो तो हुवैलो','रूप तिजोरी', 'बेलड़ी इत्याद कवितावां घणी चावी हुयी।

**रघुराज सिंह हाडा :–** आपरो जलम झालावाड़ जिलै रै चमलासा गांव में 1933 ई. में हुयो। आप हाड़ौती अंचल रा वरिस्ठ गीतकार हैं। राजस्थानी गीतकारां में आपरो ठावो स्थान हैं। 'घूघरा','अण बाच्या आखर', 'हरदोल', 'आमल खीवरा' अर 'फूल केसूला फूल' आपरा प्रमुख गीत संग्रै हैं।

**3. प्रगतिवादी धारा :–** राजस्थानी काव्य में प्रगतिसील चेतना रो उदै अंग्रेजी सासन काल सूं ई हुयग्यो। देस री जनता माथै हुवणवाळा अत्याचार, अनाचार अर सोसण रै वास्तै महात्मा गांधी अर दूजा समाज सुधारक भी आवाज उठावता रैया। राजस्थान में सामन्ती परिवेस में दबियोड़ी जनता रै दुःख –दरद नै उण बखत रा राजनेता अर कीं रचनाकार भी मैसूस करी। इण रो ई ओ परिणाम हो के अेक तरफ अंग्रेजी सासन रो विरोध हुयो तो दूजै कानी सामन्ती अत्याचारां रै खिलाफ आवाज उठाई। मूल रूप में जिकी राजनीतिक चेतना ही, वा ई आगै चाल'र प्रगतिसील काव्य री आधारभोम बणी। जन कवि उस्ताद, रेवतदान

चारण, सुमनेश जोशी, मनुज देपावत इत्याद इण काव्य धारा रा प्रमुख कवि हा।

आजादी रै पछै सामाजिक अर राजनीतिक परिस्थितियां में जिकी पूंजीवादी अर सामन्ती मनोवरती उपजी, उण रो अै कवि जोरदार विरोध कर्‌यो। आं री कवितावां में अन्याय, सोसण अर अत्याचार सारू आक्रोस अर विरोध रो भाव है, बठै ई किसान अर मजदूर में जागरती ल्यावण री भावना भी।

गणेशीलाल व्यास, सुमनेश जोशी, कन्हैयालाल सेठिया, रेवतदान चारण, मेघराज मुकुल, किशोरकल्पना कांत, गजानन वर्मा, मनुज देपावत, भीम पांडिया, वेद व्यास, मोहम्मद सदीक, दुर्गादान गौड़, लक्ष्मणदान कविया इत्याद अैड़ा कवि हैं जिंका रै काव्य में प्रगतिसील भावना रो सुन्दर रूप दीसै।

प्रगतिसीलता रो सुर राजस्थानी री नुंवी कविता में भी उजागर हुयो। आज रै मिनख री स्थितियां सारू नुंवा कवि आपरी जागरूकता रो परिचै देवता उण रै संघर्स री हिमायत करी। अैड़ा कवियां में तेजसिंह जोधा, नंद भारद्वाज, राजेन्द्र बोहरा, पारस अरोड़ा, चन्द्रप्रकास देवल, श्याम महर्सि, आई दान सिंह भाटी, चेतन स्वामी इत्याद प्रमुख हैं।

प्रगतिसील काव्य चेतना रा प्रमुख कवि इण भांत हैं:–

**गणेशीलाल व्यास उस्ताद :–** साम्यवादी विचारधारा रा सर्मथक उस्ताद रो जलम जोधपुर में 1904 ई. में हुयो। अै क्रान्तिकारी हा अर आजादी सूं पैलां केई बार जेल़ भी गया। 'जनकवि उस्ताद' रै नांव सूं आं री कवितावां छपती रैयी। उस्ताद नृत्यगीत, रूपक गीत इत्याद भी लिख्या हैं। जन नायक जयनारायण व्यास रै साथै आप जन–आंदोलनां में बरोबर भाग लेवता।

उस्ताद री सिरजण संवेदना रा केई पख हैं। वां री कविता उद्‌बोधनात्मक, इतियासू चेतना सूं भरपूर अर सामाजिक जन जागरण री भावना नै समेट्‌योड़ी है। आं री कविता में जागरती, विद्रोह अर व्यंग्य री तीखी मार हैं। सामन्ती व्यवस्था में बदळाव ल्यावण सारू उस्ताद लोगां नै इण ढंग सूं प्रेरित कर्‌या –

**थे गिणती में घणा भायला, हाकै सूं क्यूं डरपो**
**गिणती रा तिणखा है चुगलो, बाढेती ले झड्‌पो**
**थे धरो धमक नै धोल साथी, कर दो बीटां नै गोल़**
**बंदा मैनत री जै बोल ।**

इणी भांत 'जाग रणबंका सिपाही', 'माथा देणा पड़सी मुलक नै मोट्‌यारां', 'परण्या डरै मती' इत्याद उद्‌बोधन सूं भरियोड़ी कवितावां हैं।

उस्ताद मुंहफट हा इण वास्तै वां नै कैवता जेज नी लागती। वै जिको मैसूस करता, उणनै तुरन्त कैय देवता, जिंया–

**भूल करी जन नायक भारी , चरै गधेड़ा केसर क्यारी ।**

इण सूं आगै उस्ताद जुझारू व्यक्तित्व रा धणी हा। आधुनिक राजस्थानी काव्य में उस्ताद री कविता रो सुर सगळा सूं आगै हो।

**रेवतदान चारण :–** आपरो जलम जोधपुर जिलै रै मथाणिया गांव में 1924 ई. में हुयो। प्रगतिसील चेतना री दीठ सूं रेवतदान चारण रो काव्य घणो महताऊ है। उस्ताद रो सुर जठै जन जागरण में गूंज्यों तो रेवतदान चारण रो सुर कवि–सम्मेलनां में। आप मंच रा चावा–ठावा अर लूंठा कवि हा। 'चेत मानखो' आपरी रचनावां रो संग्रै है। आपरी कविता में पूंजीवादी अर सामन्ती व्यवस्था माथै तीखो व्यंग्य है। आजादी सूं पैलां लिख्योड़ी कवितावां में किसान विद्रोह री झलक है। 'इंकलाब री आंधी', 'चेत मानखा',

'माटी थनै बोलणो पड़सी' इत्याद आपरी घणी चावी कवितावां रैयी हैं। किसान नै चेतावतां लिख्योड़ी कविता रो अेक नमूनो –

**मांग्या खेत मिलै नी करसा, मोल चुकाणो पड़सी**
**मोत्यां मूंगी इण धरती रो, कोल निभाणो पड़सी**
**सामी धरती जे कोई आयो, जोर जताणो पड़सी**
**खेत खंड़तां हल़ जे रोक्यो, हाथ कटाणो पड़सी**
**लोई बिना रंग नी आवै धरती पड़गी धोळी**
**कितरा दिन तक सबर करैला, माटी हंसने बोली**
**रे बंदा चेत मानखा**
**जमानो चेतण रो आयो ।**

रेवतदान चारण री कविता में ओज अर व्यंग्य है।

**गजानन वर्मा :–** आपरो जलम चूरू जिलै रै रतनगढ़ कस्बे में 1927 ई. में हुयो। आप राजस्थानी रा चावा गीतकार हैं अर मंचा माथै घणी लोकप्रियता अर्जित करी। 'धरती री धुन', 'सोनो निपजै रेत में', 'बारहमासा' इत्याद आपरा कविता संग्रै है। आं रै गीतां में गांव रै जीवन रो मनमोहक चित्रण है बठै ई प्रगतिसील सुर रो प्रभाव भी है। 'धरती अब पसवाड़ो फेरे', 'पूरब में लाल सूरज उग आयो', 'अड़वो खेत रूखाल़ै' इत्याद कवितावां प्रगतिसील विचार सूं जुड़ियोड़ी है।

**4. प्रकति चित्रण :–** आजादी सूं पैलां भी राजस्थानी कविता में प्रक्रति रो चित्रण बरोबर हुवतो रैयो है क्यूंके मिनख अर प्रक्रति रो सम्बन्ध सरू सूं है। प्रक्रति रो सुद्ध चित्रण राजस्थानी में आधुनिक युग री ई देन है। इण दीठ सूं चन्द्र सिंह री 'बादळी'(1942) राजस्थानी सुतंतर प्रक्रति चित्रण री पैली कृती है। ई रै पछै चन्द्रसिंह री 'लू' कृती भी विसुद्ध प्रक्रति काव्य है। परम्पराऊ छंद रो प्रयोग, प्रसाद गुणवाल़ी सैली अर सहज अभिव्यक्ति 'लू' री खासियत कही जावैली। इण रै पछै तो राजस्थानी में नानूराम संस्कर्ता, डॉ. मनोहर शर्मा, नारायण सिंह भाटी, सुमेर सिंह शेखावत, उदयवीर शर्मा, कल्याण सिंह राजावत, लक्ष्मणदान कविया, कान सिंह भाटी इत्याद कवियां प्रक्रति रा सुतंतर काव्य लिख्या। काव्य में प्रक्रति रै आलम्बन अर उद्दीपन रूप में तो चित्रण सगळा ई कवि कियो पण कन्हैयालाल सेठिया, डॉ. मनोहर शर्मा, किशोरकल्पना कांत, सुमनेश जोशी, रेवतदान चारण, सत्यप्रकाश जोशी, महावीर प्रसाद जोशी, सूर्यशंकर पारीक इत्याद प्रमुख हैं। डॉ. मनोहर शर्मा रो प्रक्रति काव्य 'रस धारा' प्रक्रति अर आध्यात्मिक चिंतन सूं मिल्योड़ो सरस काव्य है। पूरी रचना प्रसाद सैली में लिख्योड़ी है। इणी भांत आं री दूजी कृती '**गजमोती**' भी प्रक्रति चित्रण –रहस्यात्मक भावना नै उजागर करै।

सूर्यशंकर पारीक रो '**धरती**' (1992) महाकाव्य सुद्ध प्रक्रति चित्रण री सबळी अर सरस रचना है।

लक्ष्मणदान कविया री '**रूंख सतसई**' (1991) भी प्रक्रति रै चित्रण री दीठ सूं महताऊ है। इण में भांत–भांत रै रूंखां रो वरणन, रूंखां री महिमा, भारत री सांस्क्रतिक परम्परावां रो वरणन हुयो है। सतसई प्रक्रति–चित्रण री परम्परा में महताऊ काव्य कृती गिणीजैली। कल्याण सिंह राजावत री '**परभाती**' प्रक्रति चित्रण री लोकरंग में रच्योड़ी घणमोली रचना है। मानवीकरण रै प्रयोग सूं काव्य में सरलता अर लोकरंजना प्रगट हुवै है।

आधुनिक जीवन री जटिलतम संवेदनावां नै प्रगट करणै रै वास्तै राजस्थानी नुंवी कविता में प्रक्रति

रै सन्दर्भ में नुंवो द्रस्टिकोण दिखाई देवै। अठै न तो प्रकृति सारू भावनात्मक द्रस्टि है अर नी प्रकृति माथै कोई भावनात्मक आरोपण। नुंवा कवियां में मणि मधुकर, नंद भारद्वाज, गोरधन सिंह शेखावत, पारस अरोड़ा, भगवती लाल व्यास, चन्द्रप्रकाश देवल, अर्जुनदेव चारण, सांवर दइया, कुंदन माली, मालचंद तिवाड़ी, श्याम महर्षि, रवि पुरोहित इत्याद हैं।

प्रकृति काव्य रा प्रमुख रचनाकारां रो परिचै इण भांत हैं :–

**चन्द्रसिंह :–** आपरो जलम श्रीगंगानगर जिलै रै बिरकाली गांव में सावण सुकला पूरणिमा वि.स. 1969 ई. में हुयो। राजस्थान री प्रकृति सूं गहरो लगाव राखण रै कारण आप राजस्थानी काव्य नै 'बादळी' अर 'लू' जैड़ी महताऊ कृतियां दी। 'बादळी' रचना रो अैतिहासिक महत्त्व है क्यूंके इण काव्य रै पछै राजस्थानी कविता में प्रकृति चित्रण री अेक न्यारी निरवाळी परम्परा सरू हुयी।

'**बादळी**' काव्य में प्रकृति रै बदळते रूप रै साथै मानवी भावनावां रो इण भांत चित्रण कर्‌यो है :–

**पहरै बदळै बादळी, बदळ पहर बदलाय ।**
**सूरज साजन नै सखी, आसी कुण सो दाय ।।**

**'बादळी'** राजस्थानी जीवण में सुख रो संचार करणवाळी है। ओ ई वजै है के गरमी रै पछै लोग बादळी री उडीक करणै लाग जावै–

**आयी घणी उडीकता, मरूधर कोड करै ।**
**पान फूल सै सूकिया, कांई भेंट धरै ।।**
**सोनै सूरज ऊगियो, दीठी बादळियां ।**
**मरूधर लेवै बारणा, भर–भर आंखड़ियां ।।**

इणी भांत 'लू' काव्य में गरमी रै मौसम में चालणवाळी लूआं री प्रचण्डता रो यथारथ चित्रण कर्‌यो है। आं दोनूं काव्यां रै माध्यम सूं प्रकृति चित्रण रै साथै–साथै लोकजीवण री भावनात्मक अर सांस्कृतिक चेतना रो भी वरणन हुयो है। चन्द्र सिंह प्रकृति रा कुसल चितेरा हैं आं री भासा में लालित्य है।

**नानूराम संस्कर्ता :–** आं री लिख्योड़ी प्रकृति काव्य री रचनावां में 'कलायण'(1949) अर 'दसदेव'(1955) प्रमुख हैं । प्रकृति रै साथै–साथै लौकिक परिवेस रो सांतरो चित्रण आं रै प्रकृति काव्यां में है। आ कवि री मोवणी रचना है। अै 'प्रकृति सइकड़ो' नांव सूं प्रकृति चित्रण रा सौ छंद भी लिख्या हैं।

**नारायण सिंह भाटी :–** भाटी री 'सांझ' (1954) प्रकृति काव्य री लूंठी अर प्रौढ़ रचना है। छायावादी संवेदना, बिम्ब विधान, मौलिक कल्पना इत्याद भाटी रै काव्य री विसेसतावां कही जावैळी। '**सांझ**' इणी भावबोध री रचना हुवण खातर बादळी री परम्परा में अेक अनुपम कृती कहीजसी। इण पोथी में कुल 115 पद्य हैं, अठै भी प्रकृति अर परिवेस रो गहरो सम्बन्ध कवि री खासियत है। मिनख री जिकी भावनावां प्रकृति सूं जुड़'र मोहक बणगी, उणां रा आत्मीय चित्रण इणमें है। मानवीकरण अलंकार रो खूब प्रयोग हुयो है। भाटी री दूजी कवितावां में भी जगां–जगां प्रकृति रो चित्रण मिलै जिणमें छायावादी सैली रो प्रभाव साफ दीसै।

**सुमेर सिंह शेखावत :–** आपरी 'मेघमाळ' (1964) रितु परम्परा में सरस अर सजीव काव्य है। बरसा रितु में जठै प्रकृति आपरो मनमोवणो रूप दिखावै, बठै ई प्रकृति रै इण सरूप नै देख'र केई तरै री भावनावां जागै। 'मेघमाळ' छंद में रच्योड़ो काव्य है अर इण में बयण सगाई छंद रो प्रयोग हुयो है। छायावादी

सैली रो रूप भी काव्य में है– चित्रात्मकता, मानवीकरण, लाक्षणिकता, सबद सिल्प इत्याद बातां मेघमाळ में है। कवि रै दूजै काव्य 'मरू–मंगल' में भी प्रक्रति अर संस्क्रति रो सांतरो चित्रण हुयो है। 'मेघमाल़' सूं अेक उदाहरण देखोः–

**लुक लुक लरजै, उड़ उड़ लपकै**
**लूमा झूमा लोर ।**
**भर–भर रीतै – फेर भरीजै, गल–गल**
**निखरै गौर ।**
**झर–झर झरै झकोरा, प्राण पपैया पुळकै**
**मोर बढ़ै मन मोरा ।**

**उदयवीर शर्मा :–** आपरो जलम झुन्झुनू जिलै रै बिसाऊ कस्बै में वि.सं. 1988 में हुयो। आप बहुमुखी प्रतिभा रा रचनाकार हैं। आपरी प्रक्रति काव्य रचनावां में 'डांफी' अर 'सूंटो' प्रमुख हैं।

'**सूंटो**' काव्य में कवि जठै प्रक्रति रो सुन्दर चित्रण करै, बठै ई 'सूंटो' विनासकारी सरूप रै कारण उण नै क्रान्ति रो दरसण मान लेवै। इण दीठ सूं काव्य में अेक विचारधारा प्रगट हुवै। कवि सामाजिक विसमता, वर्ग संघर्स अर विद्रोही भावना नै केई तरै सूं प्रगट करै। गरीबी रो चित्रण करता थकां कवि केवै –

**खून पसीनो कर दिन तोडै, ल्याणो–खाणो नित रो काम**
**बां ढूंढा में क्यूं सिर फोड़ै, दया दिखा क्यूं तो मन नै थाम**
**रोटी पोता बठै न जाये, बेला नै तू टाल़**
**करम चांदडा देख गरीबी, बणी रोटियां गैरं काल़ ।।**

उदयवीर शर्मा री 'डांफी' (1973) में सियाल़ै में बैवणवाळी तीखी सीत लहर रो चित्रण कर्यो है। 'डांफी' अर 'सूंटो' दोनूं प्रक्रति रा अैड़ा रूप हैं जिकां सूं आखो मिनख समाज जुड़ियोड़ो अर प्रभावित है। सीधी सरल भासा, प्रक्रति रै माध्यम सूं प्रगतिसील विचार री अभिव्यक्ति अर मानवीय चेतना रो नुंवो आयाम– अै उदयवीर शर्मा रै काव्य री विसेसतावां हैं।

दूजै कवियां में कन्हैयालाल सेठिया रै कविता संग्रै–'कूं क', 'अघोरी काल़', 'सतवाणी', 'लीलटांस' अर 'मींझर' में प्रक्रति रा सुन्दर चित्रण हैं। डॉ. मनोहर शर्मा रै काव्य 'रसधारा' अर 'गजमोती' में प्रक्रति रो परम्पराऊ चित्रण हैं। कल्याण सिंह राजावत री 'परभाती'(1979) में उसा काल रो सुन्दर चित्रण है। प्रक्रति रो प्रतीकात्मक चित्रण रेवतदान चारण, मेघराज मुकुल, गजानन वर्मा इत्याद कवियां री कवितावां में भी जगां–जगां निजर आवै।

**5. हास्य–व्यंग्य कविता :–** हास्य अर व्यंग्य दोनूं मिल्योड़ा रैवै । आं रै बिच्चै संतुलन होवणो जरूरी है। जे कोई रचना सुद्ध हास्य री हुवैली तो फगत मनोरंजन मात्र कहीजसी। इण वास्तै हास्य रै साथै–साथै उण में व्यंग्य भी होवणो चाइजै जिण सूं रचना में तीखोपणो आ ज्यावै। राजस्थानी में सरू में जिकी कवितावां लिखी, वां में सुधारवादी चेतना होवणै सूं विसगतियां अर कुप्रथावां माथै व्यंग्य हो। इस्या कवियां में ऊमरदान लालस रो नांव अग्रणी है। लालस री कवितावां रो सुर व्यंग्यात्मक हो।

आजादी सूं पैलां साम्राज्यवाद, आरथिक सोसण, अत्याचार इत्याद रै खिलाफ राजनीतिक जाग्रती ल्यावणी ही, इण वजै सूं जिकी कवितावां लिखीजी, वां में आक्रोस घणो अर व्यंग्य कम हो। आजादी पछै

देस री व्यवस्था में जैड़ो भ्रस्टाचार, काळाबाजारी अर नैतिक मूल्यां रो पतन हुयो, वां नै आधार बणाय'र व्यंग्य कवितावां लिखीजी। आं कवियां में गणेशीलाल व्यास उस्ताद, रेवतदान चारण, गजानन वर्मा इत्याद प्रमुख हैं।

गणेशीलाल व्यास उस्ताद री कवितावां में राजनीतिक स्थितियां सारू तीखो आक्रोस अर गहरो व्यंग्य है। 'म्है आया अकल बताबा नै', 'आजादी रो उतारो', 'नेतावां री निसरमाई', 'भूल करी जन नायक भारी' इत्याद कवितावां में तीखो व्यंग्य है। इणी भांत प्रगतिसील विचारां रा सर्मथक उस्ताद सामाजिक रूढ़ियां अर अंधविस्वासां माथै भी तीखा प्रहार करता रैया। रेवतदान चारण अर गजानन वर्मा री कवितावां में पूंजीवादी मनगत अर सोसण रै खिलाफ व्यंग्य है।

राजस्थानी कविता में हास्य–व्यंग्य री चावी स्थिति कवि सम्मेलनां रै माध्यम सूं मिली। इस्या कवियां में विश्वनाथ शर्मा विमलेश, बुद्धिप्रकाश पारीक, नागराज शर्मा, अन्नराम सुदामा, ताऊ शेखावाटी, सम्पत सरल, मनोहर लाल गोयल इत्याद रा नांव प्रमुख हैं। अै कवि समसामयिक जीवण, सामाजिक असंगति, मंहगाई, बेरोजगारी, समाजवाद, काळ इत्याद स्थितियां माथै व्यंग्य करता रैया है।

विश्वनाथ शर्मा विमलेश रो हास्य–व्यंग्य कवियां में सिरै नांव। आं री व्यंग्य कवितावां रो विसै सामाजिक अर राजनीतिक रैयो है। 'बिरमाजी रो बर', 'नयी साल रो कलेण्डर', 'बीनणी उघाड़ै मूंडै आई', 'चुणाव भासण', 'परिवार नियोजन' इत्याद कवितावां मंच माथै घणी चावी रैयी है। आं री व्यंग्य कवितावां रा कई संग्रै छप्या हैं जिणमें 'सतपकवानी', 'छेड़खानी', 'कुचरणी', 'टसकोळी', 'नौरस हास्य', 'खरी मसखरी' इत्याद प्रमुख हैं। आं री भासा ठेठ शेखावाटी अर सबद–चयन व्यंग्यात्मक हैं।

व्यंग्य कवियां में बुद्धिप्रकाश पारीक भी घणा चावा कवि हैं जिका री कवितावां में राजनीतिक अर सामाजिक स्थितियां सारू तीखो व्यंग्य है। आं रै हास्य व्यंग्य संग्रै में 'सबड़का', 'चूंटक्या', 'तिरसा', 'कलदार', 'इन्दर सूं इन्टरव्यू' इत्याद हैं। भासा में ठेठ ढूढ़ाड़ी रो मुहावरो अर सबद चयन सूं हास्य व्यंग्य री स्थिति उपजै।

हास्य व्यंग्य कवियां में नागराज शर्मा रो महताऊ स्थान है। ठेठ शेखावाटी बोली में लिख्योड़ी नागराज री कवितावां सामाजिक असंगतियां अर राजनीतिक स्थितियां माथै तीखो प्रहार करै। 'थारो के ल्यां हा' नागराज शर्मा री कवितावां रो संग्रै है।

सबदां रा ठेठ मूल़ रूप में पकड़'र उणां रै माध्यम सूं हास्य व्यंग्य री ताकत पैदा करणो मोहन माधुरी री कवितावां री विसेसता है। रामगढ़ शेखावाटी में जाया जलम्या मोहन माधुरी रो अेक कविता संग्रै 'दड़ाछंट' नांव सूं छप्यो है। अन्नाराम सुदामा री कवितावां में भी कठै–कठै व्यंग्य रो रूप दिखाई देवै। 'पिरोल़ में कुत्ती ब्याई' सुदामा रो हास्य–व्यंग्य कवितावां रो संग्रै है।

हास्य व्यंग्य रा सिल्प तुकान्त अर अैतुकान्त दोनू मिलै। अठीनै व्यंग्य कवितावां में पैरोड़ी, डांखल़ा (तुक्तक) इत्याद रा प्रयोग भी हुया हैं। मुरलीधर व्यास, बुद्धिप्रकाश पारीक इत्याद पैरोड़ी लिखी हैं तो मोहन आलोक रा 'डांखल़ा' रै माध्यम सूं हास्य–व्यंग्य कविता रो सिल्प रै रूप में नुवो प्रयोग दीसै। हास्य व्यंग्य कवियां में ताऊ शेखावाटी, करणीदान बारहठ, त्रिलोक गोयल, भंवर बैरागी, सम्पत सरल, भगवती प्रसाद चौधरी, हरफूल सिंह रसिक, रामनिरंजन ठिमाऊ इत्याद रा नांव लिया जा सकै।

1965 ई. रै पछै राजस्थानी री नुंवी कविता में भी व्यंग्य री ठावी स्थिति उपजी है। आं कवितावां में मौजूदा जीवन री विसंगतियां, मूल्यहीनता, निरासा, अनास्था अर कुंठा इत्याद पर तीखो व्यंग्य है। आं कवियां में मणि मधुकर, तेज सिंह जोधा, गोरधन सिंह शेखावत, पारस अरोड़ा, नंद भारद्वाज, प्रेमजी प्रेम,

सांवर दइया, भगवती लाल व्यास, ओंकार श्री इत्याद हैं। आजादी रै पछै गांव में आयोड़ै बदलाव नै तेजसिंह जोधा आपरी कविता 'इै गांव में कठै ई कीं व्हैगो' में तीखै व्यंग्य साथै उभार्‌यो है।

**6. सम्बोधन काव्य :–** लोक काव्य रै रूप में 'ढ़ोला मारू रा दूहा' (वि.सं. 1530) घणा महताऊ हैं। मूल रूप में देख्यो जावै तो ओ काव्य प्रेम कथा अर सम्बोधन काव्य रै सिरजण रो प्रेरणा स्रोत है। बिंया सम्पूरण सम्बोधन काव्य में 'जेठवै रा सोरठा' आवै। आं रै पछै लाखणसी चारण (वि.सं. 1530) रा लिख्या 'ईलिया रा सोरठा', 'बाघजी रा दूहा' (वि.सं. 1563), दुरसा आढ़ा रा 'विरुद छिहतरी' अर पृथ्वीराज राठौड़ रा 'भागीरथी रा दूहा' सम्बोधन काव्य में ई आवै। आं पछै रामनाथ कविया रा 'पाबूजी रा सोरठा', 'करूणा बावनी', सांदू रायसिंह रा 'मोतिया रा दूहा' इत्याद हैं। आं में कृपाराम खिड़िया (वि. सं. 1800–1890) रा लिख्योड़ा 'राजिया रा सोरठा' सगळा सूं सिरै अर घणा चावा हुया। 'राजिया रा सोरठा' रै पछै सम्बोधन काव्य री लूंठी परम्परा सरू हुयी जिकी वि.सं. 1530 में 'ईलिया रा सोरठा' रै पछै किसनिया, राजिया, रामला, नोपला, मगनिया, मोतिया, फूसिया, छोटिया, नानिया, हीरिया, मानिया, चकरिया, सांवरा, बावलो इत्याद रै रूप में सम्बोधन काव्य रै रूप में बधती गयी।

इणी परम्परा में आज भी सम्बोधन रूप में कीं काव्य लिख्या गया हैं जिणमें मनोहर शर्मा (रामजी रा सोरठा), डॉ. उदयवीर शर्मा (मौलकै रा सोरठा), ताऊ शेखावाटी (बावला रा सोरठा), महावीर प्रसाद जोशी (दूदिया रा सोरठा), बस्तीमल सोलंकी (बस्तिया रा सोरठा), रामजीलाल कल्याणी (राघव सैकड़ो), अस्त अली मलकाण (आमना रा सोरठा) इत्याद प्रमुख हैं।

**7. नुंवी कविता :–** परम्पराऊ राजस्थानी कविता में कथ्य री दीठ सूं 1965 ई. रै आसै–पासै बदलाव री स्थितियां साफ निजर आवण लागी। ईं बदलाव रै पाछै बदलती संवेदना अर स्थितियां रो गहरो दबाव हो। 1960 ई. पछै राजनीतिक स्तर माथै भ्रस्टाचार, भाई–भतीजावाद, गुटबंदी, नौकरसाही, प्रान्तीयता रो भाव इत्याद हो तो सामाजिक छेत्र में गरीबी, बेरोजगारी, बिखरता मूल्य, टूटता मानवी सम्बन्ध, अराजकता, अव्यवस्था अर भटकाव री स्थिति ही। ईं परिवेस सूं जिकी अस्थिरता, असंतुलन अर निरासा सूं परिपूरण स्थितियां बणी, वां रो प्रभाव युवा रचनाकारां री संवेदना माथै पड़्यो अर रचनात्मक चेतना री स्थिति बदळी। नुंवो कथ्य अर आपरै परिवेस सूं जुड़ाव री ईमानदारी आ कवितावां रो मोटो आधार हो। इयां मैसूस हुयो के कविता अबै कल्पना सूं दूर होय'र सांचै यथारथवादी अर प्रामाणिक अणभव नै लेय'र नुंवा सन्दर्भा नै अभिव्यक्ति देवै।

आजादी रै पछै नानूराम संस्कर्ता रो 'समय रो बायरो' (1953) अर नारायण सिंह भाटी रो 'दुर्गादास' (1956) मुक्त छंद रै मांय लिख्योड़ी कवितावां में सिल्पगत नुंवोपणो हुवतां थकां भी मौजूदा जीवण रो यथारथ उणां में नी। राजस्थानी नुंवी कविता 1960 ई. रै अेड़ै–छेड़ै लिखणी सरू हुयी अर 1971 ई. में जद डॉ. तेजसिंह जोधा री 'राजस्थानी कविता–अेक' (त्रैमासिक पत्रिका) छप'र आई तो राजस्थानी नुवीं कविता बाबत लोगां रो ध्यान गयो। सरू में नुंवी कविता गलै नी उतरी इण वास्तै विरोध भी सुभाविक हो, पण विरोध रो मतलब ई कीं नुवैपणां सूं हो। आ बात साफ है के राजस्थानी नुंवी कवितावां री संवेदना परम्पराऊ कविता सूं साव अलग ही। ईं पत्रिका में पांच कवि– गोरधन सिंह शेखावत, पारस अरोड़ा, मणि मधुकर, ओंकार पारीक अर खुद तेजसिंह जोधा री टाळवी नुवीं कवितावां ही।

इण पत्रिका रै सम्पादकीय री तीखी प्रतिक्रिया हुयी पण राजस्थानी नुंवी कविता खुद नै स्थापित करणै में सफल हुई।

'राजस्थानी–अेक' रै सम्पादकीय में नुंवी कविता रै कथ्य अर सिल्प नै आज रै सन्दर्भ में दरसायो

है। नुंवो कवि जीवण सारू आपरी आस्था प्रगटै अर जीवण री चुणोतियां रा मुकाबलो करतां थकां आज री परिस्थितियां माथै जूझै। नुंवो कवि नी किणी विचार सूं बंध्योड़ो है तो नी उण रा किणी भांत रा आग्रह ही। वो जीवण नै जीवण रै रूप में यथारथ रूप में देखै–परखै अर इण रै पछै उण रो व्यापक मानवीय द्रस्टिकोण है।

आज राजस्थानी भासा री नुंवी कविता समकालीन भारतीय भासा रै जोड़ में किणी तरै सूं कम नी। युगबोध, अनुभूति री सच्चाई अर सिल्पगत ताजगी, प्रयोग अर नुंवै मुहावरे में उण रो विगसाव घणो महताऊ है। राजस्थानी में हाइकू भी लिख्या गया है तो लाम्बी कवितावां भी। गोरधन सिंह शेखावत (किरकर), सांवर दइया (हाइकू), ओंकार पारीक (नैनी कवितावां) इत्याद छोटी कवितावां रा केई प्रयोग कर्‌या तो तेजसिंह जोधा (ईं गांव में कठै ई कीं व्हैगो है, म्हारा बाप), गोरधन सिंह शेखावत (खुद सूं खुद री बातां), नंद भारद्वाज (अंधार पख), पारस अरोड़ा (बधापो) इत्याद लाम्बी कवितावां भी लिखी।

आजादी रै पछै जिको बदल़ाव आयो उण में गांव री जिदंगी रा अणभव भी काव्य संवेदना रा महताऊ बिदुं रैया हैं आजादी रै पछै ग्रामीण चेतना रो रूप टूटतो–बिखरतो गयो, गंदी राजनीति सूं आपस में लड़ाई–झगड़ा, मारपीट अर दुसमणी रो इस्यो वातावरण बण्यो के लोग गांवां सूं सैहरा कानी भागण लाग्या। तेजसिंह जोधा, गोरधन सिंह शेखावत, नंद भारद्वाज, मणि मधुकर, रामेश्वर दयाल श्रीमाली, हरमन चौहान, सांवर दइया, पुरूसोत्तम छंगाणी इत्याद कवियां री कवितावां में लोकजीवण रै इण बदल़ाव नै यथारथ रूप में प्रगट्‌यो है।

राजस्थानी कविता में नुंवा कवियां रो सोच नुंवी राजस्थानी कविता नै खूब आगै बढ़ायो है ओ ई कारण है के आज राजस्थानी नुंवी कविता भारतीय समकालीन साहित्य री कवितावां रै मुकाबल़ै में आपरा पग जमाय राख्या हैं। कीं कवियां री संवेदन स्थितियां माथै इण भांत विचार कर्‌यो जा सकै हैं :–

**तेज सिंह जोधा :–** (जलम 7 जुलाई 1950 ई. ) राजस्थानी नुंवी कविता रा आगीवाण कवि मानीजै। जोधा कवितावां कम लिखी पण कथ्य अर सिल्प सूं नुवी कविता री ओळखाण बणावण में आं री कवितावां धणी महताऊ हैं। आप 'राजस्थानी–अेक', 'दीठ' इत्याद पत्रिकावां रा कीं अंक भी निकाल्या। 'ओळू री ओळ्यां' आपरी पैली काव्य कृती है। 'कठै इै कीं व्हैगो', 'म्हारा बाप' अर 'दीठाव रै बेजा मांय' आपरी घणी चर्चित कवितावां रैयी है। आं कवितावां रो मुहावरो अैड़ो हो के हिन्दी रा कीं कवि भी आं सूं प्रेरित होय'र कवितावां लिखी।

**मणि मधुकर** (जलम सितम्बर 1942 ई.) **:–** राजस्थानी रा नुंवा कवियां में आपरी सन्दर्भगत अर युगबोध री संवेदनावां सूं आपरी साख कायम करी। सिल्प रो चमत्कार मणि री खासियत रैयी है। 'काळो घोड़ो', 'नरकवाड़ो', 'सोजती गेट' इत्याद आं री चर्चित कविता रैयी। 'पगफेरो' आपरी कवितावां रो पैलो संग्रै है।

**गोरधन सिंह शेखावत :–** (जलम 10 अप्रेल 1941) राजस्थानी रा प्रमुख नुंवा कवि है । 'किरकर' (1971 ई.) अर 'पनजी मारू' (1988 ई.) नांव सूं आपरा दो कविता संग्रै छप्योड़ा है। 'पनजी मारू', 'काळ','म्हारो गांव', 'प्रीत' आपरी सांतरी कवितावां है। परिवेस री जटिलतम स्थितियां अर अणभव संवेदन नै आप केई बिम्बां अर प्रतीकां रै माध्यम सूं व्यक्त कर्‌यो है।

**पारस अरोड़ा :–** (जलम 1937) आधुनिक संवेदनावां नै अभिव्यक्त करणवाळा समरथ कवि हैं। आं री कवितावां में सहरी जीवण रो परिवेस है। 'झळ' आं रो पैलो कविता संग्रै है।

**नंद भारद्वाज :–(**जलम 9 अगस्त 1948) प्रगतिसील द्रस्टिकोण अर गांव री स्थितियां सूं नेड़ाऊ

रूप में जुड़ियोड़ा कवि हैं। 'अंधार पख' नांव सूं आं रो अेक कविता संग्रै छप्योड़ो है।

**चन्द्रप्रकाश देवल :–** लोकजीवण री सहजता सूं आज रै मिनख री समस्यावां नै आपरी कविता में उजागर करी है। आपरी कवितावां में ताजगी अर सहजता है। 'पागी', 'कावड़', 'मारग' 'तोपनामा' अर 'राग बिजोग' आपरा कविता संग्रै हैं। आं री कविता आधुनिक जीवन परिवेस नै प्रगटै।

**सांवर दइया** (जलम 10 अक्टूम्बर 1948) **:–** आं री कवितावां में आज रै मानखै री अबखायां रो यथारथ चित्रण है। उणां री सोच स्थितियां री चेतना नै अेड़ै संवेदन साथै सामी ल्यावणी जिणसूं वै आपरी रचनात्मकता नै आयाम दे सकै। वां रै कविता संग्रै में 'मनगत', 'काल़ अर आज रै बिच्चै', 'आखर री औकात', 'आखर री आंख सूं' अर 'हुवै रंग हजार' प्रमुख हैं।

**मालचंद तिवाड़ी :–** (जलम 19 मार्च 1958) नुंवा कवियां में आपरी अलग ओळखाण राखै। आं री कवितावां समकालीन यथारथ नै आपरै निजू रचाव सूं उजागर करती अेक अैड़ै विरोध नै प्रगटै जिको कविता रा पग मजबूत करै। तिवाड़ी री कवितावां कथ्य अर सिल्प में ताजगी लियोड़ी है। 'उतर्‌यो है आभो' आं रो पैलो अर चर्चित कविता संग्रै है। इण में प्रेम अर दारसनिक भावनावां रो निजू स्तर माथै अबोट बिंबा अर प्रतीकां रै माध्यम सूं चित्रण हुयो हैं।

**ओंकार पारीक :–** (26 मार्च 1934) आं री कवितावां में आज रै विसंगतियां रो चित्रण है। '**छिणबोध**' री अनुभूति रै रूप में पारीक री 'नैनी कवितावां' महताऊ हैं।

इण में कोई संदेह नी के आधुनिक राजस्थानी कविता में नुंवी कविता बोध रै धरातल़ माथै दूजी विधावां में अग्रणी रैयी है। आज नुंवी कविता में सगळा सूं बेसी रचनाकार हैं जिका कविता भी लिखै तो केई नुंवा प्रयोग भी करै। आं नुंवा कवियां में कन्हैयालाल सेठिया (लीलटांस, लीक लकोल़िया), भगवती लाल व्यास (अणहद नाद, सबद राग अर अगनी मंतर), अर्जुनदेव चारण (रिंदरोई), मोहन आलोक (ग–गीत), श्याम महर्षि (अड़वो), हरीश भादाणी, आईदान सिंह भाटी (हंसतोड़ा होठा रो सांच), वासु आचार्य (सीर रो घर), मीठेश निर्मोही (आपै ओल़ै दोल़ै), रामेश्वर दयाल श्रीमाली (म्हारो गांव), अन्नाराम सुदामा (पिरोल में कुत्ती ब्याई), प्रेमजी प्रेम, बाबूलाल शर्मा (हिंवलास,सबद साख), रामस्वरूप किसान (हिवड़ै उपजी पीड़), पुरूषोत्तम छंगाणी (सांसा रो सूत, बिचाल़ै), सत्येन जोशी, हरमन चौहान, चेतन स्वामी, रामस्वरूप परेश, कृष्णगोपाल शर्मा, (चेतन री धूणी), लक्ष्मणदान कविया, ज्योतिपुंज, नीरज दइया (साख, देसूंटा), सत्यदेव सवितेन्द्र, रवि पुरोहित (चंमगूंगा), लक्ष्मीनारायण रंगा, हर्सदान हर्स, विनोद सोमानी हंस (मिनख), हरीश भादाणी, चैन सिंह परिहार, बी.एल. माली, श्याम सुन्दर भारती, कुंदन माली (जग रो लेखो, सागर पांखी) ,श्रीगोपाल जैन (काल रो चतुर्भुज), सत्यनारायण इन्दौरिया (बिक बीच बजारां), शंकरसिंह राजपुरोहित, चन्द्रशेखर अरोड़ा, ओम पुरोहित कागद, मोहन मंडेला, एस.आर. टेलर (पांगल़ी पीड़ रा आखर), अतुल कनक, रमेश मयंक, तारालक्ष्मण गहलोत इत्याद हैं। भगवतीलाल व्यास रा तीन कविता संग्रै छप्या हैं '**सबद राग**', '**अहणदनाद**' अर '**अगनी मंतर**'। आं री कवितावां में आज रै मिनख री स्थितियां रो यथारथ युग बोध रै संदर्भ में प्रगट कर्‌यो है। कवितावां में प्रौढ़ता अर सिल्प री आपरी बणगट है। आं री कवितावां समकालीन मिनख री चिंतांवां सूं भरियोड़ी आस्थावादी है।

ज्योतिपुंज री कवितावां (बोल डूंगरी ढ़ब ढ़बूक) में संवेदना रा अछूता बिम्ब अर प्रभावी अभिव्यक्ति है। बाबूलाल शर्मा रा दो कविता संग्रै 'हिवंलास' अर 'सबद साख' छप्या हैं। आं कवितावां में कथ्य रो नुंवोपणो अर सम्प्रेसणीयता है। वासु आचार्य रा भी अबार–अबार दो कविता संग्रै 'सीर रो घर' अर 'सूको तालाब' प्रकासित हुया हैं। इंया ई नीरज दइया रो 'साख', रवि पुरोहित रो 'चमगूंगो', आईंदान सिंह भाटी

रो 'हंसतोड़ा होठां रो सांच', बी.एल.माली रो 'हेली', अतुल कनक रो 'आवो बात करां' इत्याद संग्रै समकालीन कवितावां रा सांतरा संग्रै हैं।

**मूल्यांकन :–** आधुनिक कविता रै अध्ययन सूं साफ लखावै के आधुनिक काल में जठै परम्पराऊ सिरजण हुयो, बठै 1857 ई. री क्रान्ति रै पछै कीं अैड़ा कवि आया जिका युग कवि रै रूप में आपरी भूमिका निभाई। आजादी रै पछै स्थितियां में बदल़ाव आयो तो काव्य–संवेदन में बदल़ाव आवणो जरूरी हो। इण कारण कविता री धारा में केई प्रव्रतियां उपजी। रास्ट्रीय, सांस्क्रतिक अर व्यक्तिगत गीत प्रधान, प्रक्रति, हास्य व्यंग्य अर नुवीं कविता रै रूप में कविता रा रंग निखर्‌या। 1960 ई. रै पछै कविता री संवेदना समकालीन यथारथ सूं जुड़'र मानवी मूल्यां नै नुंवी दीठ सूं अभिव्यक्ति दी। अठै सूं राजस्थानी में नुवी कविता रो उदै हुवै अर आज राजस्थानी री नुवीं कविता किणी भी समकालीन भासा री कविता सूं लारै नी। 'दुर्गादास', 'मीरा' (नारायण सिंह भाटी), 'बोल भारमली' ( सत्यप्रकाश जोशी), 'लीलटांस' (कन्हैयालाल सेठिया) इत्याद अनुपम काव्य कृतियां है। इंया ई प्रक्रति काव्य री दीठ सूं 'बादळी', 'लू' (चन्द्रसिंह), 'सांझ' (नारायण सिंह भाटी), 'मेघमाळ' (सुमेर सिंह शेखावत), 'सूंटो' (उदयवीर शर्मा) इत्याद महताऊ रचनावां गिणीजै।

प्रगतिवादी काव्य री दीठ सूं गणेशीलाल व्यास, रेवतदान चारण (उछाल़ो), गजानन वर्मा, मनुज देपावत री कवितावां जन–चेतना नै प्रभावित करणवाळी स्थितियां नै उजागर करी। राजस्थानी री नुंवी कविता रा संग्रै अजै कम निकल़्या है पछै भी 'पगफेरो' (मणि मधुकर),'अंधार पख' (नंद भारद्वाज), 'पागी' (चन्द्रप्रकाश देवल़), 'पनजी मारू' (गोरधन सिंह शेखावत), 'झळ' (पारस अरोड़ा), 'रिंदरोई' (अर्जुनदेव चारण) 'उतरयो है आभो' (मालचंद तिवाड़ी) , 'काल अर आज रै बिच्चै' (सांवर दइया), 'तोपनामा' अर 'राग–विजोग' (चन्द्रप्रकाश देवल), 'अणहदनाद' (भगवती लाल व्यास), 'म्हारी कवितावां' (प्रेम जी प्रेम), 'म्हारो गांव' (रामेश्वर लाल श्रीमाली), 'सीर रो घर' (वासु आचार्य), 'सागर पांखी' (कुंदन माली) इत्याद कविता संग्रै महताऊ हैं। फुटकर रूप में लिख्योड़ी केई कविता री अेकली रचना भी नुंवी कविता री जातरा रो महताऊ हिस्सो है।

**गद्य साहित्य :–** राजस्थानी रो गद्य साहित्य घणो जूनो अर समरिध है। राजस्थानी में गद्य साहित्य री उत्पत्ति 13–14वीं सताब्दी रै मांय हुई अर 16–17वीं सताब्दी में वो आपरी उन्नत अवस्था में पूगग्यो। प्राचीन गद्य नै नीचै लिख्यै रूप में बांट सकां हां :–

1. धारमिक गद्य
2. अैतिहासिक गद्य
3. कलात्मक गद्य
4. अन्य रूप

**1. धारमिक गद्य :–** धारमिक गद्य रै विकास में जैन साधुवां रो घणो योगदान रैयो है। अै आपरै धरम रै प्रचारू अैड़ो साहित्य लिख्यो है। औ साहित्य मौलिक कम अर धारमिक ग्रंथा री टीका रै रूप में है। अै टीकावां दो रूपां में मिलै– बालावबोध अर टब्बा। बालावबोध सीधी सरल अर सुबोध टीका हुवै। इण रै मांय री व्याख्या रै साथ जैन धरम रै सिद्धान्ता नै समझावण सारू केई कथावां रो सहारो लियो गयो हैं।

टब्बा बालावबोध सूं छोटो हुवै। इण में मूल़ सबद रो अरथ ऊपर–नीचै, आसै–पासै लिख्यो जावै। आचार्य तरूणप्रभ सूरि का सडावश्यक बालावबोध' (वि.सं. 1411) राजस्थानी गद्य री पैली प्रौढ़

कृती मानी जावै।

धारमिक साहित्य दो सैलियां में मिलै– अेक जैन सैली अर दूजी जैन सैली सूं अलग।

**2. अैतिहासिक गद्य :–** धारमिक गद्य रै साथै अैतिहासिक गद्य री सरूआत हुयी। अैतिहासिक गद्य में ख्यात, वात, वंसावली,पदावली, पीढ़ियावली, विगत, हकीकत, हाल इत्याद मिलै। ख्यात में राजावां रो वंसानुक्रम मिलै। आज भी राजस्थान रै इतियास रै सन्दर्भ में मुहणोत नैणसी, आसिया बांकीदास अर दयालदास री ख्यात प्रसिद्ध हैं।

अैतिहासिक गद्य दो सैलियां में लिख्यो गयो है– जैन सैली अर चारण सैली। जैन सैली री भासा सीधी सरल अर चारण सैली री मंजियोड़ी है।

**3. कलात्मक गद्य :–** कलात्मक गद्य रो राजस्थानी साहित्य में आपरो महत्त्व है। कलात्मक गद्य मुख्य रूप सूं वचनिका, सिलोका, वर्णक अर वात रूप में मिलै। वचनिका गद्य–पद्य मिश्रित है। आदर्स वचनिका में आधो गद्य अर वो भी तुकान्त हुवै। राजस्थानी साहित्य जिकी महताऊ वचनिका लिखीजी उण में 'अचलदास खींची री वचनिका' (सिवदास गाडण) अर 'वचनिका राठौड़ रतनसिंघ महेसदासोत री' है।

कलात्मक गद्य दवावैत में भी मिलै। दवावैत में भाट मालीदास री लिखी 'नरसिंहदास की दवावैत' घणी चोखी है। इणी भांत कलात्मक गद्य रो अेक रूप 'सिलोका' भी है। राजस्थानी में वात साहित्य रो अखूट भण्डार है इण रै मांय भी गद्य–पद्य रो रूप दीसै। बात री आपरी सैली है।

**4. अन्य रूप :–** गद्य रै दूजा रूपां में सिलोलेख, पट्टा–परवानां हैं।

**आधुनिक काल रो गद्य साहित्य :–** राजस्थानी रो जूनो गद्य साहित्य तो लूंठो रैयो है पण उण री तुलना में आधुनिक काल में गद्य री सगळी विधावां में सांतरो रचनात्मक साहित्य लिख्यो गयो। आधुनिक गद्य री प्रमुख विधावां में उपन्यास, कहानी, नाटक, एकांकी, निबंध, समालोचना इत्याद है। आं गद्य विधावां रो विकास इण तरै देख्यो जा सकै है :–

**उपन्यास :–** राजस्थानी भासा में पैलो उपन्यास शिवचंद भरतिया रो लिख्योड़ो 'कनक सुन्दर' (1903) उपलब्ध हुवै, इण रै वास्तै लेखक गुजराती में प्रचलित 'नवल कथा' सबद रो प्रयोग कियो है। इण उपन्यास री कथा पारिवारिक है।

'**कनक सुन्दर**' रै पछै श्रीनारायण अग्रवाल रो 'चाचा' (1925) राजस्थानी रो दूजो उपन्यास है। ओ सामाजिक उपन्यास है अर इण में 'वृद्ध विवाह' री समस्या नै प्रगट करी है।

अै दोनूं उपन्यास पैला उपन्यास है आं रो उदेस समाज सुधार री भावना है कथ्य अर सिल्प घणी प्रौढ़ता नी।

आं दो उपन्यासां रै पछै अेक लम्बो अंतराल रैयो अर आजादी रै पछै 1956 ई. में श्रीलाल नथमल जोशी रो '**आभै पटकी**' उपन्यास छप्यो। इण उपन्यास में विधवा विवाह री समस्या उठायी गयी है। ओ भी अेक समाज सुधार रै द्रस्टिकोण सूं लिख्योड़ो सामाजिक उपन्यास है। सेवट समस्या रो समाधान आदर्स रूप में हुयो है। श्रीलाल नथमल जोशी रो दूजो उपन्यास 'धोरां रो धणी' (1968 ई.) अर तीजो 'अेक बीनणी रो बींद' (1973 ई.) है। 'धोरां रो धणी' इटली निवासी डॉ. टेसीटरी रै जीवन माथै आधारित है। आं दोनूं उपन्यासां में भी उपन्यासकार रो द्रस्टिकोण आदर्सवादी रैयो है।

राजस्थानी उपन्यास छेत्र में इण रै पछै अन्नाराम सुदामा रो ठावो अर लूंठो नांव लियो जा सकै है। आं री कथाचेतना आपरै परिवेस सूं जुड़'र समस्यावां नै आदर्सवादी रूझान माथै प्रस्तुत करै। आं रै उपन्यासां में 'मैकती काया मुलकती धरती' (1966), 'आंधी और आस्था' (1974), 'मेवै रा रूंख' (1977), 'डाकीजता मानवी' अर 'घर संसार' (दो भाग) है। 'मैकती काया अर मुलकती धरती' में आत्मकथात्मक सैली

में सुथारी नानी री पीड़ नै प्रगट करी हैं। 'आंधी अर आस्था' उपन्यास में अकाल़ सूं जूझता मिनख री यथारथ कहाणी है तो 'मेवै रो रूख' आपातकाल री स्थितियां नै लेय'र लिख्योड़ो उपन्यास है। अन्नाराम सुदामा रै उपन्यास री विसै वस्तु प्रेमचंद री संवेदना सूं गैरी प्रभावित है इण वास्तै आदर्स, सोसण, गरीब मिनख री दयनीय स्थिति रो मानवीय धरातल माथै चित्रण कर्‌यो गयो है। भासा अर सिल्प री दीठ सूं सुदामा रा उपन्यास राजस्थानी उपन्यासां में ठावी ठौड़ राखै। उपन्यास लेखण रै वास्तै जिको वस्तु विधान अेक ठावै उपन्यासकार कन्नै हुवणो चाइजै, वो अन्नाराम सुदामा कनै है।

यादवेन्द्र शर्मा चन्द्र 'हूँ गोरी किण पीव री' (1970) अर 'जोग–संजोग' (1973) उपन्यास लिख्या। अै दोनूं उपन्यास सामाजिक हैं। 'हूँ गोरी किण पीव री' में अेक आकस्मिक घटना संजोग रै माध्यम सूं पुनर विवाह री समस्या उठाई है– तो 'जोग–संजोग' महानगरीय जीवन री झल़क प्रस्तुत करै।

छत्रपतिसिंह रो 'तिरसकूं' (1974) अनिस्चै अर निरणय रै अभाव में भटकतै नायक(पवन) री संघर्सपूरण कहानी है। उपन्यास में क्रान्ति री बजाय रोमांस रो चित्रण घणो है।

सत्येन जोशी 'कंवलपूजा'(1974) उपन्यास लिख्यो जिको राजस्थानी भासा रो पैलो अैतिहासिक उपन्यास है। इण रै मांय तन्नोट राजा विजयराज अर महमूद गजनवी रै बिच्चै हुयोड़ै जुद्ध रो वरणन है। आंचलिकता रै कारण उपन्यास में ताजगी अर नुंवोपणो है।

विजयदान देथा रा दो उपन्यास 'तीडौराव' (1966) अर 'मां रो बदल़ो' छप्या हैं। दोनूं उपन्यास व्यंग्य सैली में लोककथा रै जरिए समाज री स्थितियां माथै तीखो प्रहार करै। 'तीडौराव' अेक प्रतीक पात्र है जिको अयोग्य हुवतां थकां भी आपरी तिकड़म सूं आगै पूग ज्यावै। 'मां रो बदल़ो' उपन्यास में सामन्ती व्यवस्था माथै व्यंग्य है।

रामनिवास शर्मा रो 'काल–भैरवी' (1976) अर 'मांझल़' रात गांवा में फैल्योड़ै तंत्र–मंत्र, अंधविश्वास इत्याद रो मनोवैग्यानिक चित्रण करै। उपन्यास में गांव रै लोगां रो भोलोपणो अर अग्यानता नै दरसायो है, ओ मनोवैग्यानिक उपन्यास है।

बी.एल. माली रा 'मिनख रा खोज' अर 'अबोल़ी' नांव सूं दो उपन्यास छप्योड़ा हैं। दोनूं उपन्यास आज री समस्यावां नै लेय'र चालैं। 'मिनख रा खोज' उपन्यास में जातिगत बंधनां सूं अलग हटणै री पीड़ा रो तो 'अबोल़ी' में जीवन री अेकरसता रो चित्रण करियो है जठै अेक नारी आपरी तड़फन अर व्यथा–कथा नै बतावती रैवै।

पारस अरोड़ा रै उपन्यास 'खुलती गांठा' (1977) आधुनिक जीवन री समस्यावां नै लेय'र लिख्योड़ो है। इण रै मांय अैड़ी प्रेम कथा है जिकी गैर जातिय विवाह रो समाधान ढूढ़ै।

गोरधनसिंह शेखावत रो 'अेक फौजी शहीद'(2000) करगिल रै जुद्ध में देस सारू आपरै जीवण नै अरपित करणवाळै फौजी सिपाही री सूरवीरता, त्याग अर सहादत री सांची घटना है। फौजी जीवण माथै लिख्योड़ो राजस्थानी भासा में ओ पैलो उपन्यास है।

नंद भारद्वाज रो उपन्यास 'साम्ही खुलतो मारग' (2001) रेगिस्तानी इलाकै रै मिनख री संघर्स गाथा नै यथारथ रूप में अभिव्यक्त करै। आजादी तो आपां नै मिली पण इण रो कोई असर आपां रै जीवण में हुयो, इण रो सांतरो चित्रण इण उपन्यास में है।

आं उपन्यासां रै अलावा राजस्थानी में शान्ति भारद्वाज राकेश रो 'उड़जा रै सूवा' अैड़ी ई मारमिक अर करूण कहानी है। जिणमें औरत आपरै हकां वास्तै जुल्मां सूं लड़ै। उपन्यासकार रो सिल्प नुंवो अर प्रभावित करणवाळो है। अब्दुल वहीद रो 'घराणो' उपन्यास नुंवै कथानक नै लेय'र सांतरी

भासा सैली में लिख्योड़ो है। ई में जलमतांई कन्याबध री कुप्रथा रो चित्रण है। देवकिसन राजपुरोहित आज रा ठावा उपन्यासकार हैं। आं रा समाज अर परिवार सूं जुड़ियोड़ा कथानकां नै लेय'र केई उपन्यास छप्योड़ा हैं, जिणमें 'कलंक', 'धाड़वी', 'कपूत', 'जंजाल़', 'दातार' अर 'सूरज' घणा महताऊ हैं। राजस्थानी भासा में लघु उपन्यास भी केई लिख्या गया जिका कीं तो 'हरावल़', 'ओळमो', 'लाडेसर', 'रास्ट्रपूजा हेलो', 'जागती जोत' इत्याद में छप्या। आं उपन्यासां में सीताराम महर्षि रा दो उपन्यास 'कुण समझै चंवरी का बोल' अर 'लालड़ी अेकर फेरू गमगी', डॉ. नृसिंह राजपुरोहित रो 'भगवान महावीर', दीनदयाल कुंदन रो 'गुंवारपाठो', रामदत्त सांकृत्य रो 'आभलदे', भूरसिंह राठौड़ रो 'राती घाटी', प्रेमजी प्रेम रो 'सेली छांव खिज्यूर की', किशोरकल्पना कांत रो 'धाड़वी', मालचंद तिवाड़ी रो 'भोल़ावण', करणीदान बारहठ रो 'मंत्री री बेटी', ओमदत्त जोशी रो 'पाणी पीजै छाण' अर नवनीत पांडे रो 'माटीजूण' प्रमुख हैं।

अठै जे राजस्थानी उपन्यासां री विकास यात्रा माथै विचार करां तो लखावै के 'कनक सुन्दर' सूं लेय'र अजै तांई रै उपन्यासां में केई तरै री प्रव्रत्तियां दीसै जिंया– सामाजिक, अैतिहासिक, राजनीतिक अर पौराणिक। आं उपन्यासां में केई अैड़ा उपन्यास है जिणमें आदर्सवाद, घटनात्मक संयोग, वरणात्मकता अर समस्यावां रो सतही चित्रण भी हुयो है। अैड़ा उपन्यास घटना प्रधान होवणै सूं रोचक तो जरूर हैं लेकिन उणां रै मांय ठोस कथ्य रो अभाव है। गांवां रै जीवण रो चित्रण करता थकां कठै–कठै आंचलिकता रो दरसाव भी उल्लेखजोग है।

सिल्प री दीठ सूं देखां तो 'आभै पटकी', 'मैकती काया मुल़कती धरती', 'आंधी अर आस्था', 'हूँ गोरी किण पीव री', 'तिरसकूं', उपन्यासां में परम्पराऊ सिल्प है। संयोग, घटनात्मकता अर वरणन सैली रै कारण अै उपन्यास प्रेमचंद रै युग री संवेदना सूं घणा जुड़ियोड़ा है। आं उपन्यासां में आत्मकथात्मक सैली (मैकती काया, मुल़कती धरती), प्रतीक सैली (तीडौराव) इत्याद रो रूप भी दीसै। अन्नाराम सुदामा री भासा में गहरी व्यंजना, सहजता अर प्रवाह है। विजयदान देथा री भासा में मंजावट है। नंद भारद्वाज री सैली आज रै यथारथ नै सही अभिव्यक्ति देवणवाळी है।

प्रमुख उपन्यासकारां रो परिचै इण तरै है :–

**यादवेन्द्र शर्मा चन्द्र :–** आपरो जलम 13 अगस्त 1932 ई. में बीकानेर में हुयो। आप राजस्थानी रा मानीता कथाकार हैं। आप कहाणी, नाटक अर उपन्यास लिख्यां है। 'हूँ गोरी किण पीव री' अर 'जोग–संजोग' अब तांई छप्योड़ा दो उपन्यास है।

**अन्नाराम सुदामा :–** आपरो जलम उदयरामसर (बीकानेर) में हुयो। आप बहुमुखी प्रतिभा रा रचनाकार हैं। 'मैकती काया मुल़कती धरती', 'मेवै रा रूंख' अर 'घर–संसार' आं रा छप्योड़ा उपन्यास हैं। राजस्थान रै उपन्यासकारां में अन्नाराम सुदामा री आपरी उपन्यास कला अर जिदंगी रै लारै आपरो सोच रैयो है। यथारथ रै साथै–साथै आदर्स री झलक दिखाया बिना आं रो वस्तुविधान पूरो नी हुवै। आं रै उपन्यासां में लोकजीवन रो गैराई सूं चित्रण हुयो है। प्रगतिसील विचारां रा हिमायती अन्नाराम सुदामा री भासा सीधी–सरल अर व्यंजनात्मक है।

**विजयदान देथा :–** आपरो जलम बोरूंदा (जोधपुर) में 1926 ई. में हुयो। आपरा दो उपन्यास 'मां रो बदल़ो' अर 'तीड़ौराव' छप्योड़ा हैं जिणमें लोककथावां नै आधार बणा'र समाज व्यवस्था माथै तीखो व्यंग्य करियो है। आं रै लोक उपन्यास में लोककथा रा सगळा तत्त्व अर लोक परिवेस मौजूद है।

**कहाणी :–** राजस्थानी में वात साहित्य रो तो अखूट भण्डार है अर उण री अेक आपरी परम्परा

रैयी है जिकी आज भी लोकजीवन में दीसै लेकिन कहाणी तो आधुनिक साहित्य री विधा है। राजस्थानी में जिंया उपन्यास अर नाटक रै रूप में पैला लेखक शिवचन्द भरतिया मान्या जावै बिंया ही राजस्थानी नै पैली कहाणी भी शिवचन्द भरतिया री 'विश्रान्त प्रवास' सन् 1904 में कलकत्तै सूं छपणवाळी मासिक पत्र 'वैश्योपकारक' में छपी। इण रै पछै गुलाबचंद नागौरी री 'बड़ी तीज', 'बड़ी बेटी की विकरी' अर 'बहू की खरीद' इत्याद कहाण्या अलीगढ़ सूं प्रकासित 'माहेश्वरी' पत्रिका में छपी। नागौरी रै पछै शिवनारायण तोसनीवाल री 'विद्यापरदेवतम्' अर 'स्त्री शिक्षण को ओनामो' मासिक नासिक सूं प्रकासित पंचराज में छपी। प्रवासी रचनाकारां री आं कहाण्या में आदर्सवाद अर समाज सुधार री भावना ही।

आं रै पछै बीस बरस तांई राजस्थानी में कोई कहाणी नी छपी। सन् 1935 ई. रै आसै–पासै फेरू कहाणी लेखण री सरूआत हुयी, जिणमें मुरलीधर व्यास ,श्रीचंदराय माथुर इत्याद प्रमुख हैं। मुरलीधर व्यास रो पैलो कहाणी संग्रै 'बरसगांठ' (1956) प्रकासित हुयो। बिंया इण सूं पैला व्यास री केई कहाण्या छप चुकी ही। व्यास रै पछै कहाणी लिखणवाळा में नानूराम संस्कर्ता, नृसिंह राजपुरोहित, बैजनाथ पंवार, श्रीलाल नथमल जोशी, डॉ. मनोहर शर्मा, अन्नाराम सुदामा, दामोदर शर्मा, करणीदान बारहठ, रामेश्वरदयाल श्रीमाली ,मूलचंद प्राणेश ,दीनदयाल ओझा, श्रीमंतकुमार व्यास, रामनिवास शर्मा इत्याद हैं। आं कहाणीकारां रो प्रव्रतिगत रूप में विभाजन नी कर सकां क्यूंके आं रै लेखन में किणी अेक प्रव्रति री प्रधानती नी।

कथ्य अर सिल्प री दीठ सूं जिको बदल़ाव राजस्थानी कहाणी में आयो उण री झल़क सन् 1970 ई. रै पछै लिख्योड़ी कहाण्यां में निजर आवै। इण सूं पैलां तो कहाण्यां घटना–प्रधान, आदर्सवादी अर परम्परागत सिल्प नै लेय'र चालणवाळी ही।

मुरलीधर व्यास अर वां रै पछै रा कहाणीकारां री मूल़ दीठ सामाजिक चेतना सूं जुड़ियोडी रैयी। इण वास्तै आं री कहाण्यां में समाज सुधार अर आदर्सवादी भावना री प्रधान ही। व्यास री कहाण्यां री विसै वस्तु सहरी जीवण सूं जुड़ियोड़ी है पछै भी वां री कहाण्यां में समाज सुधार अर सामाजिक कुप्रथावां माथै तीखौ व्यंग्य है जिंया वां री 'ब्याव', 'बलमै रो मोल़', अर 'नरमेघ या समाज रो नीरा' कहाण्यां देखी जा सकै है। आं कहाण्यां में चरित या वातावरण प्रधान नी होय'र समस्यावां रा तयसुदा समाधान पाठकां रै सामी राखीज्या हैं। कहाण्यां री भासा सीधी–सरल है।

नानूराम संस्कर्ता रा 'ग्योही'(1957), 'दसदोख' (1966) अर 'धर री रेल' (1970) नांव सूं तीन कहाणी संग्रै छप्योड़ा हैं। आं री कहाण्यां आंचलिक जीवण री परम्परा, लोकविस्वास, सुख–दुःख अर सामाजिक बुराइयां रो चित्रण करै। आं कहाण्या रा सिल्प परम्परागत है अर आं में आदर्स, मनोरंजन, उपदेस अर वरणन री प्रधानता है।

नृसिंह राजपुरोहित राजस्थानी रा कहानीकारां में आपरी ठावी ठौड़ राखै। ग्रामीण जीवण रै बदल़तै सन्दर्भा नै नृसिंह राजपुरोहित गहरी संवेदना रै साथै अभिव्यक्त कर्‌या हैं। 'रातबासो' (1961), 'अमर चूनड़ी' (1969), 'मऊ चाली माल वै' (1973), 'परभातियो तारो' इत्याद आं रा प्रमुख छप्योड़ा कहाणी संग्रै हैं। आजादी रै पछै बदल़तै सामाजिक मूल्य, भ्रस्ट राजनीतिक स्थितियां, रिस्वतखोरी, भ्रस्टाचार, काल़ अर समाज री पीड़ादायक स्थितियां रो चित्रण आं री कहाण्यां में हुयो है। नृसिंह राजपुरोहित री कहाण्यां में आज री विसंगतियां अर निम्नवरग रै जीवण चेतना रो ईमानदारी सूं प्रगट करयोड़ो यथारथ है। 'रातबासो', 'उत्तर भीखा म्हारी बारी', 'गिरजड़ा', 'भारत भाग्य विधाता', 'कुअै भांग पड़ी' इत्याद नृसिंह राजपुरोहित री साव यथारथकारी कहाण्यां हैं। आं कहाण्यां में सिल्पगत नुंवोपणो भी लखावै। 'अधूरा सपना' आपरो खास कहाणी संग्रै है।

ग्रामीण जीवण री मांयळी अर अबखायां अर सहरी प्रभाव रै अनुभूति रै धरातल़ माथै प्रगट करणवाळा कहाणीकार है बैजनाथ पंवार। पंवार रा तीन कहाणी संग्रै 'लाडेसर' (1970), 'नैणा खूट्यो नीर' अर 'ओळखाण' छप्योड़ा हैं। पंवार री कहाण्यां आदर्स कानी उन्मुख हुयोड़ी यथारथवादी कहाण्यां हैं। आं में 'लाडेसर', 'इनामी भाभी', 'नैणा खूटयो नीर' प्रमुख हैं।

आदर्सवाद सूं ई प्रेरित श्रीलाल नथमल जोशी री कहाण्यां सहरी जीवन सूं जुड़ियोड़ी समस्यावां नै प्रगटै। आं री कीं कहाण्यां मनौवैग्यानिक भी हैं जिकी पति–पत्नी रै आपसी सम्बन्धा री उलझनां नै मनोविग्यान रै सन्दर्भ में सुलझावै। 'मोलायोड़ी लाडी' में अनमेल ब्याव री तो 'परण्योड़ी कंवारी' में पति–पत्नी रै सम्बन्धा रा नुंवा आयाम दीसै।

डॉ. मनोहर शर्मा री कहाण्यां में सामाजिक समस्यावां नै उजागर करी है आं री कहाण्यां में आदर्सवाद अर यथारथवाद है। 'कन्यादान' (1971) नांव सूं आं रो कहाणी संग्रै छप्योड़ो है जिण में सेठ–साहूकारां री उदारता, आपसी सद्भाव अर निम्नवरग रा लोगां री पीड़ावां रो सांचो चित्रण है। 'कन्यादान', 'फतियै रो ब्याव', 'खांजी' इत्याद आं री रोचक कहाण्यां हैं।

नृसिंहपुरोहित रै पछै राजस्थानी कहाण्यां में आपरी न्यारी ओळखाण बणावणवाळा कहाणीकारां में अन्नाराम रो विसेस मुकाम है। अन्नाराम सुदामा आस्थावादी रचनाकार हैं अर युग यथारथ रै लारै वां निजू सोच अर अेक ऊंडी दीठ रैयी है। 'आंधै नै आंख्यां', 'गलत इलाज' अर 'माया रो रंग' आपरा छप्योड़ा कहाणी संग्रै है। आं री कहाण्यां ग्रामीण परिवेस सूं जुड़ियोड़ी अर उण री मांयली स्थिति नै सावळ ढंग सूं अभिव्यक्ति देवणवाळी है। आं रा पात्र जीवट रा हैं, बै जुझारू बण'र स्थितियां सूं संघर्स जरूर करैं पण वां रै बोध अर चिंतन री अेक सीमा जरूर है। सुदामा री कहाण्यां में केई जगां काव्यात्मकता अर विचार बोध रै कारण सिल्पगत सिथिलता भी आयी है। 'ढ़लै डूंगर : फटै चट्टान', 'सुलतान नेकी रो सम्राट', 'आंधै नै आंख्यां' इत्याद सुदामा री कीं प्रमुख कहाण्यां हैं।

करणीदान बारहठ आपरी कहाण्यां में ग्रामीण परिवेस रै बदल़ते रूप नै प्रगट कर्‌यो। 'आदमी रो सींग' अर 'माटी री महक' आं रा चर्चित कहाणी संग्रै है जिणमें परिवार अर समाज री समस्यावां रो वरणन है। आजादी रै पछै सामन्ती व्यवस्था टूटी तो राजनीति रो गंदो प्रभाव गांवां रै माथै पड़्यो, इण रो चित्रण आं री कहाण्यां में हैं। 'दोजख', 'चिमनी रो च्यानणो', 'मौत री गांठ' इत्याद इण री प्रतिनिधि रचनावां है।

दामोदर प्रसाद शर्मा री कहाण्यां री संवेदना ग्रामीण अर सहरी जीवन सूं जुड़ियोड़ी है। मानव मन री मांयली स्थितियां नै उजागर करणै में दामोदर शर्मा अेक समर्थ कहाणीकार हैं। 'प्रेतात्मा री प्रीत' नांव सूं आं रो अेक संग्रै छप्योड़ो है। 'चितराम', 'प्रेतात्मा री प्रीत', 'हमजोल़ी' इत्याद आं री महताऊ कहाण्यां है।

मूलचंद प्राणेश री कहाण्यां में जीवण रै यथारथ परिवेस रो चित्रण है। प्राणेश आपरी कहाण्यां में परिवारां री आरथिक तंगी ,मजबूरी अर मन री दोगाचींती रो सांतरो वरणन कर्‌यो है। 'उकल़ता आंतरा : सील़ा सास' (1973) अर 'चस्मदीठ गवाह' प्राणेश रा दो कहाणी संग्रै हैं।

विजयदान देथा मूलतः लोक कथाकार हैं। उणां री लोककथावां रा केई संग्रै निकल़्या हैं। 'अलेखू हिटलर' कहाणी संग्रै आं रो मौलिक कहाणी संग्रै है पण इण रै ढांचा में लोककथावां रा तत्त्व जरूर छिप्योड़ा हैं। आं री मौलिक कहाण्यां रो सिल्प भी कथा सैली सूं प्रभावित है। देथा प्रगतिसील विचार सूं जुड़ियोड़ा हैं।

आजादी रै पछै आरथिक दबावां रै कारण गांवां में भी अेक साथै रैवणियां परिवार भी धीरै–धीरै टूटण लाग्या तो परिवार रै रिस्तां में भी कीं फरक आयो। पति–पत्नी रै सम्बन्धा में भी केई तरै री जटिलतावां

आयी तो मानवी रिस्ता टूटण लाग्या। आ अेक अैड़ी संवेदना ही जिण रै प्रभाव सूं आज भी गांव या सहर अछूतो नी। ईं आपसी सम्बन्धा रै बदल़ाव नै कीं कहाणीकार आपरी रचनात्मक संवेदन रो विसै बणायो, इणमें यादवेन्द्र शर्मा चन्द्र, रामनिवास शर्मा, रामेश्वर दयाल श्रीमाली इत्याद कीं अैड़ी कहाण्यां लिखी। आपसी सम्बन्धा रै बदल़ाव में रामनिवास शर्मा री 'सुहागण–भागण' अर यादवेन्द्र शर्मा चन्द्र री 'बाप अर बेटी' महताऊ हैं। आज मिनख मसीन री दांई चक्कर काटै जिण सूं वो साव जड़ या फगत जंत्र बणग्यो है। इण रो चित्रण रामनिवास शर्मा री 'लैम्प पोस्ट' अर 'आतमबोध' तथा रामेश्वर दयाल श्रीमाली री 'सळवटां' कहाण्यां में दीसै। श्रीमाली री कहाण्यां दलितवरग री पीड़ा, विवशता अर दीनता नै प्रगट करै। 'खाजरू', 'जसोदा' इत्याद श्रीमाली री चर्चित कहाण्यां हैं। 'सळवटां' नांव सूं आं रो कहाणी संग्रै भी छप्यो है।

राजस्थान में आई साल अकाल़ पड़तो रैवै अर अकाल़ री भीसण स्थिति सूं अठै रो जन जीवण, पसु धन इत्याद प्रभावित हुया बिना नी रैय सकै। अकाल़ रै कारण गांववाळा नै भी रोजगार री तलास में गांव सूं बारै जावणो पड़ै। आं स्थितियां रो परिवार माथै केई प्रभाव पड़ै। मुरलीधर व्यास (मेहमायो), नृसिंह राजपुरोहित (गांव री हथाई, सिणगारी), बैजनाथ पंवार (धापी भूवा), श्रीमंतकुमार व्यास, रघुनाथ सिंह (अकाल़ ऊपर तो काल़) इत्याद चोखी कहाण्यां लिखी हैं। बद्रीदान गाडण री कहाण्या परिवारू संवेदना सूं जुड़ियोड़ी हैं आं रो अेक कहाणी संग्रै 'आंबै री डाल़ सरवर री पाल़' छप्यो है।

आदर्सवादी, आदर्स कानी उन्मुख हुयोड़ी यथारथवादी कहाण्यां इत्याद में सामाजिक समस्यावां री प्रधानता रैयी है। स्त्री–पुरूस रै सम्बन्धां नै लेय'र केई कहाण्यां लिख्योड़ी हैं। परिवार री अणसुलझी स्थितियां सूं जुड़ियोड़ी मनोवैग्यानिक कहाण्यां भी आज री स्थितियां नै प्रगटै। इण दीठ सूं नृसिंह राजपुरोहित, रामेश्वर दयाल श्रीमाली, रामनिवास शर्मा इत्याद री कहाण्यां उल्लेखजोग हैं।

अैतिहासिक कथानकां नै लेय'र भी लोककथा सैली में केई कहाण्यां लिखीजी। आं कहाण्यां में राजस्थान री संस्क्रति अर मान–मूल्यां रो चित्रण है। लक्ष्मीकुमारी चूंडावत री 'मांझल रात', 'मूमल़', 'गिर ऊंचा', 'ऊंचा गढ़ा', 'कै रै चकवा बात' इत्याद कहाणी संग्रै, इतियासू सन्दर्भा सूं भरपूर हैं। इणीज भांत अैतिहासिक कहाण्यां लिखणवाळा में लक्ष्मी कुमारी चूंडावत, सौभाग्य सिंह शेखावत, बृजमोहन जावलिया इत्याद हैं। इणी तरै पौराणिक अर धारमिक प्रसंगा रै आधार माथै भी राजस्थानी में कहाण्यां लिखीजी हैं।

आजादी रै पछै सामाजिक, धारमिक अर राजनीतिक स्तर माथै जिको बदल़ाव आयो उण री सही अभिव्यक्ति राजस्थानी कहाण्यां में सन् 1970 ई. रै पछै ई हुयी। राजस्थानी नुंवी कविता में संवेदनात्मक बदल़ाव मौजूदा युग बोध रै सन्दर्भ में अत्तो प्रभावसाली रूप में आयो के अेकर राजस्थानी कविता नै लेय'र चोखी चर्चा हुयी। आज राजस्थानी कहाणी भी संवेदना रै स्तर माथै दिनोदिन आगै बढती जाय रैयी है। बिंया राजस्थानी में आज भी कीं रचनाकार आपरै पुराणै सिल्प बोध नै लेय'र कहाण्यां लिखै, पण अैड़ा लोग कम हैं। आज राजस्थानी रा कहाणीकार कथा चेतना रै परम्पराऊ रूप सूं हट'र यथारथवादी कहाण्यां लिख रैया हैं। अै कहाण्यां आज रै परिवेस सूं उपज्योड़ी अर नुंवै कथ्य नै प्रगट करणै वाल़ी हैं। इस्या नुंवा कहाणीकारां में सांवर दइया, मालचंद तिवाड़ी, चन्द्रप्रकाश देवल, नंद भारद्वाज, मोहन आलोक, भंवरलाल सुथार भ्रमर,, यादवेन्द्र शर्मा चन्द्र, देवकिसन राजपुरोहित (बिरजूड़ी रो तप अर मोसर बंद), बी. एल. माल़ी, हरमन चौहान, विनोद सोमानी हंस, मनोहर सिंह राठौड़, रामस्वरूप परेश, मदन सैनी, भरत ओल़ा, आनंद कौर जोशी, डॉ. चांद कौर जोशी, मीठेश निर्मोही, चेतन स्वामी, माधोसिंह इन्दा, बुलाकी शर्मा, पुरूषोत्तम छंगाणी, सत्यनारायण इन्दोरिया, सुखदा कच्छावा, संदीप धामू, पुस्पलता कश्यप, अमोलकचंद जांगिड़, सत्यनारायण जोशी, प्रमोद शर्मा भंवर व्यास,अशोक जोशी क्रान्ता इत्याद हैं।

नुंवी पीढ़ी रा कहाणीकारां में सांवर दइया पारिवारीक यथारथ अर नुवीं संवेदनावां सूं जुड़ियोड़ी सांतरी कहाण्यां लिखी जिणमें– 'असवाड़ै–पसवाड़ै', 'धरती कद तांई घूमैली', 'अेक दुनिया म्हारी', 'पोथी जिसी पोथी' (1996) इत्याद हैं। राजस्थानी में वै नुंवी संवेदना सूं कहाणी लिखणवाळा नुवी पीढ़ी रा पैला कहाणीकार हैं। दइया आपरी कहाण्यां में सिल्प रा घणा प्रयोग कर्या। संवाद सैली नै अपणाय'र दइया री लगै–टगै दस कहाण्यां हैं। सरू में आं री कहाणी 'गली जिसी गली' घणी चावी हुयी। अस्सी रै दसक में कहाणी लेखन री सरूआत सूं दइया बेगा ई आपरी ठावी ठौड़ बणाई। संवेदना अर सिल्प रो नुंवोपणो दइया री खास विसेसता है। 'हालत' दइया री संवाद सैली में लिख्योड़ी उत्तम कहाणी है दूजी कहाण्यां में 'गली बणता घर', 'सुकड़ीजता आंगणा', 'जुड्या कट्या', 'ओजू बंसत' इत्याद प्रमुख हैं। अै सगळी कहाण्यां यथारथवादी हैं। 'अेक दुनिया म्हारी' आं रो खास संग्रै है।

यादवेन्द्र शर्मा चन्द्र राजस्थानी रा ठावा कहाणीकार हैं अर वै बरसां सूं कहाण्यां लिख रैया हैं। आं री कहाण्यां में पारिवारीक जिदंगी री केई अबरवायां रो सांतरो वरणन है। आपरी कहाण्यां राजस्थानी लोक जीवन नै दरसावती अर मानखै रै मांयली परतां नै खोलणै वाळी हैं। 'जमारो' आं रो खास कहाणी संग्रै है।

नुवीं पीढ़ी रै कहाणीकारां में मालचंद तिवाड़ी रो नांव सिरै। वै अब तांई लगभग दो दरजन कहाण्यां लिखी हैं। 'धडंद' अर 'सेलिब्रेसन' (1998) उणां रा दो कथा संग्रै है। आं री कहाण्यां री संवेदना साव अछूती अर मिनख रै अंतरमन री उण स्थितियां नै प्रगटै जिण रै मांय आज मिनख खो रैयो है। सिल्प री ताजगी अर कथ्य नै प्रभावसाली ढंग सूं प्रगट कर्णो मालचंद तिवाड़ी री कहाण्यां री आपरी विसेसता है। आं री कहाण्यां समकालीन भारतीय भासा री किणी भी कहाण्यां साथै राखीज सकै। 'नाजायज', 'नींद', 'सेलिब्रेसन', 'कीमियां रो बाप', 'मेद भाई साहब' इत्याद कहाण्यां आपरी अलग पिछाण राखै।

भंवरलाल भ्रमर री कहाण्यां रा तीन कथा संग्रै छप्योड़ा हैं– 'तगादो', 'अमूजो कद तांई' अर 'सातूं सुख' (1997) आं री कहाण्यां में आम आदमी री पीड़ा, अभाव अर घुटन रो चित्रण है अर अै कहाण्यां सीधी–सरल हैं।

बी.एल. माली अशांत री कहाण्यां समय–सत्य नै आपरी दीठ सूं प्रगटै। आं रा दो कहाणी संग्रै 'किली किली कटको' अर 'राई राई रेत' छप्योड़ा है। 'काजल री हत्या', 'चिगल्योड़ा हाथ', 'भिखारी', 'गुदड़ी रो दरद' इत्याद आं री चर्चित कहाण्यां हैं। अशांत री कहाण्यां में परम्परा अर व्यवस्था रो विरोध है। आं री भासा सीधी सरल अर सिल्प री सांतरी बणगट है।

मनोहर सिंह राठौड़ री कहाण्यां में आसै–पासै री स्थितियां सूं उठायोड़ा पात्रां रै माध्यम सूं अैड़ी स्थिति नै यथारथ रूप में प्रगटी है जिकी मानवी संवेदना सूं घणी भरियोड़ी है। आं रा तीन कहाणी संग्रै 'रोशनी रा जीव' (1983) , 'खिड़की' (1989) अर 'गढ़ रो दरवाजो' (1997) छप्योड़ा हैं। द्रोपदी, बळद, 'रोशनी रा जीव' अर 'गढ़ रो दरवाजो' आं री चर्चित कहाण्यां रैयी हैं।

रामस्वरूप परेश री कहाण्यां मध्यमवरग रै समाजू यथारथ नै गैराई सूं अभिव्यक्त करै। आं री कहाण्यां में मानवी स्थितियां रा पीड़ादायक सन्दर्भ मिलै। 'उडीक', 'आंधी रो अैनाण' इत्याद आं री महताऊ कहाण्यां हैं।

युवा कहाणीकारां में भरत ओला री कहाण्यां रो अेक अलग मुहावरो है । आं रो अेक कथा संग्रै 'जीव री जात' (1998) छप्योड़ो है। ओला री कहाण्यां रै मांय कथ्य री प्रधानता है। आपरै सीधै सरल सिल्प में बंध्योड़ी अै कहाण्यां आपरी संवेदना में घणी ऊंडी हैं अर आज रै जीवन यथारथ सूं जुड़ियोड़ी

है। 'पर', 'सरणाटो', 'ब्याजड़ियो', 'दूजो नरक' इत्याद आं री चर्चित कहाण्यां हैं।

रामस्वरूप किसान री कहाण्यां आज रै यथारथ नै सामी ल्यावै। आपरो अेक कहाणी संग्रै 'हाडाखोड़ी' (2002) छप्योड़ो है जिणमें ग्रामीण जन जीवन री अबखायां आज रै परिवेख में अभिव्यक्त हुई है। आं री कहाण्यां में गांव रा विविध चितराम प्रगट हुवै। गांव रो सीधो सरल जीवन कत्तो उलझियोड़ो है, जटिल है– आं रो प्रमाण किसान री कहाण्यां में मिलै। 'दलाल' किसान री अेक चर्चित कहाणी है जिकै नै 1997 रो कथा पुरस्कार ई मिल्यो।

मदन सैनी अैड़ा कहाणीकार है जिणां री सीधी सरल कहाण्यां रा कथानक आपरै मांग अण दीठ ताकत नै छिपायोड़ी है। आपरो अेक कहाणी संग्रै 'फुरसत' (1997) छप्योड़ो है। 'दया', 'जोड़ायत', 'सोनै रो सूरज', 'फुरसत' इत्याद आपरी चर्चित कहाण्यां है।

अमोलक चंद जांगिड़ री कहाण्यां में कथ्य री नवीनता अर सिल्प री ताजगी है। जांगिड़ री कहाण्यां में शेखावाटी अंचल रो घणो प्रभाव है। आपरा दो कहाणी संग्रै 'शेखावाटी री आंचलिक कहाण्यां' अर 'मधुवन री राधा' नांव सूं छप्योड़ा हैं। 'जमूरो' आं री चर्चित कहाणी है। बुलाकी शर्मा रो 'हिलोरो'(1994) पैलो कहाणी संग्रै है जिणमें दफ्तरी जिदंगी री पीड़ा, कुंठा, हतासा इत्याद रो यथारथ चित्रण हैं।

आं कहाणीकारां रै अलावां दूजा केई कहाणीकार है जिका सुतंतर रूप सूं कहाण्यां लिखी हैं तो केई रा कहाणी संग्रै ई छप्या हैं आं में मदन केवलिया, चन्द्रप्रकाश देवल, नंद भारद्वाज, विनोद सोमानी(चुपी अर तीस), कृस्ण कल्पित, मोहन आलोक, मीठेश निर्मोही (अमावस, अेकम अर चांद), हनुमान पारीक, आंनद कौर व्यास, पुस्पलता कश्यप (धरमंजलां : धर कूंचा), प्रेमजी प्रेम, माधव नागदा, चेतन स्वामी, शिवराज छंगाणी, दीनदयाल ओझा, चांद कौर जोशी, सोनाराम विश्नोई, सत्यनारायण इन्दौरिया (उतार–चढ़ाव), प्रहलाद श्रीमाली, माधो सिंह इन्दा (पाडै वाळो पूंछ), पुरूषोत्तम छंगाणी (बिचाळै), बुलाकी शर्मा इत्याद हैं।

राजस्थानी में लघुकथावां भी खूब लिखीजी है इणमें डॉ. मनोहर शर्मा, डॉ. उदयवीर शर्मा, अमोलकचंद जांगिड़, लक्ष्मीनारायण रंगा, देवकिसन राजपुरोहित, दुर्गेश, रामस्वरूप किसान, भंवरलाल भ्रमर, नीरज दइया, कमल रंगा इत्याद प्रमुख है। इण तरै राजस्थानी कहाणी कथ्य अर सिल्प में नुंवोपणो लेय'र आगै अेक भरोसै रै साथ बध रैयी है।

**नाटक :–** राजस्थानी नाटक री सरूआत शिवचन्द्र भरतिया रै नाटक 'केसर विलास' (1900) सूं मानीजै। ओ पैलो नाटक हो। इण में सुधारवादी द्रस्टिकोण नै लेय'र नाटककार समाज री असंगतियां नै प्रगटी है। ई रै पछै शिवचन्द्र भरतिया रो 'फाटका जंजाल' अर 'बुढ़ापा री सगाई' छप्यो जिणमें सामाजिक बुराइयां रो प्रस्तुतिकरण हो। समाज सुधार री इण सरूआत में आगै चाल'र भगवती प्रसाद दारूका रो 'बाल विवाह नाटक', 'मारवाड़ी मोसर' अर 'सगाई जंजाल', बालकृस्ण लाहौरी रो 'कन्या बिक्री' अर नारायणदास अग्रवाल रो 'बाल ब्याव को फार्स' उल्लेखजोग है। आं सगळा नाटकां में समाज सुधार री भावना, आदर्सवाद, उपदेस री प्रधानता अर समाजू कुप्रथावां रो चित्रण रैयो है। नाटक रंगमंच वास्तै लिख्या जावै अर उणां री सफलता री कसौटी भी रंगमंच ई हुवै। आं नाटकां में भरतिया रै 'केसर विलास' नै रंगमंच माथै जरूर सफलता मिली।

सामाजिक नाटकां री इण परम्परा में मदन मोहन सिद्ध रा 'जयपुर की ज्योणार' (1928) नाटक रंगमंच री दीठ सूं घणो चावो हुयो। ओ दो खंडा में छप्योड़ो है।

इण रै पछै 1929 ई. में कोलकात्ता में ठाकुर दत्त दाधीच रो 'माहेश्वरी पंचायत रो वायस्कोप' नाटक छप्यो। इण री भासा जैसलमेरी है। इण पछै राजस्थानी नाटकां रै लेखन में अेक लाम्बो बखत खाली रैयो

अर गीतकार भरत व्यास रा दो नाटक 'रंगीलो मारवाड़' (1947) अर 'ढोला मरवण' (1949) छप्या। अै दोनू नाटक रंगमंच पर अणूती लोकप्रियता हासिल करी अर पछै आं पर फिल्म भी बणीजी। आं नाटकां माथै पारसी थियेटर रो प्रभाव है।

सूर्यकरण पारीक जिका राजस्थानी रा लूंठा विद्वान अर सम्पादक हा, उणां रो अेक नाटक 'मीरा' (1989) छप्यो है पण ई रो रचनाकाल 1930 ई. सूं 1936 ई. रै बिच्चै होवणो चाइजै।

भरत व्यास रै पछै राजस्थानी में फेरू समाज सुधारवादी भावना सूं प्रेरित होय'र जमनाप्रसाद पचोरिया रो 'नयी बीनणी' (1962) नाटक छप्यो जिण में कम पढ़ी लिखी नारी अर अनमेळ ब्याव री समस्या रो वरणन है।

आज्ञाचंद भण्डारी रो अैतिहासिक नाटक 'पन्नाधाय' (1963) छप्यो। ईं रै मांय स्वामीभगत पन्नाधाय रो चरित्र प्रस्तुत कर्‌यो। इण सूं पैला राजस्थानी रा अैतिहासिक नाटक में श्रीनारायण अग्रवाल रो 'महाराणा प्रताप' नाटक छप चुक्यो हो अर ओ राजस्थानी रो पैलो अैतिहासिक नाटक कह्यो जा सकै है। ई रै पछै महाराणा प्रताप रै चरित्र नै आधार बणाय'र गिरधारी लाल शास्त्री रो मेवाड़ी भासा में 'प्रणवीर प्रताप' नांव सूं नाटक छप्यो।

ईं पछै आधुनिक नाटकां रो दौर सरू हुयो। कहाणीकार यादवेन्द्र शर्मा चन्द्र रो 'तास रो घर' (1973) अर बद्रीप्रसाद पंचोली 'पाणी पैली पाळ' (1973) नाटक छप्यो। चन्द्र रो नाटक आधुनिक जीवन री संवेदना नै लेय'र चालै। ईं रै मांय सहरी जिदंगी री केई विसंगतियां आज रै परिवेस में रखीजी है। बद्रीप्रसाद पंचोली महाभारत रै कथानक माथै आपरै नाटक री रचना करी है। ईं पछै सत्यनारायण अमन रो 'गुवाड़ में जायोडी' अर कथाकार अन्नाराम सुदामा रो 'बधती अंवलाई' अर अर्जुनदेव चारण रा 'आज रा दोय नाटक' अर 'बोलम्हारी मछली इत्तो पाणी' (1984) छप्या। 'बधती अंवलाई' में अन्नाराम सुदामा गांवां री समस्यावां नै व्यंग्यात्मक रूप में प्रस्तुत करता थकां अेक आदर्स राख्यो। अर्जुनदेव चारण रा दोय नाटकां में अेक 'संकरियो' अर अेक 'गवाड़ी' है अर्जुनदेव रा दोनूं नाटक रंगमंच माथै घणा सफल हुया। आं नाटकां में अेक विचार समाज रै सामै आज री परिस्थितियां मुजब राखीज्यो है।

लक्ष्मीनारायण रंगा रो 'बैरूपिया' अर 'नागा आदमी', रामकृस्ण महेन्द्र रो 'म्हारै तो गिरधर गोपाल' भी राजस्थानी रा महताऊ नाटक है। राजनीतिक स्थितियां रै सन्दर्भ में बी.एल. माली अंशात रो 'बोलता आखर' (1981) नाटक छप्यो है। नाटक में राजनीतिक स्थितियां माथै तीखो व्यंग्य है पण नाटक रंगमंच रै अनुकूल नी।

गोरधन सिंह शेखावत रा दो नाटक 'तीस मारखां' (1988) अर 'बस्तीराम' (1989) छप्या हैं। 'तीसमारखां' में आजादी रै पछै गांवां री जिदंगी में आयोड़ी गुंडागरदी रो यथारथ चित्रण व्यंग्य सैली में है तो 'बस्तीराम' नाटक हरिजन समस्या नै आज रै परिपेख में सामाजिक समस्यावां सूं जोड़'र प्रगट करी है। दोनूं नाटक मंच सारू लिख्योड़ा हैं। 'बस्तीराम' लोकनाटक सैली रो पैलो नाटक है।

आज रै नाटककारां में अर्जुनदेव चारण रो नांव सिरै। रंगमंच री दीठ सूं आं रा नाटक घणा चावा ई नी हुया बल्कि अखिल भारतीय स्तर माथै होवणैवाळै नाटक आयोजन प्रतियोगिता में भी पैलो दरजो अर्जित करियो। अर्जुनदेव नाटककार रै साथै नाट्य निरदेसक भी है। आं रा नाटकां में 'धरमजुद्ध' अर 'जातरा' , घणा चावा हुया है। राजस्थानी नाटक नै रंगमंच री दीठ सूं अेक नुंवोपणो अर अेक सांतरी विचार लखाण रै कारण अर्जुनदेव ठावा नाटककार रै रूप में आपरी ओळखाण बणा चुक्या हैं। नाटक रै सारू समरपित अर्जुनदेव ई विधा में आधुनिक रंगमंच सूं राजस्थानी नाटकां नै जोड़'र घणो सरावण जोग

काम कर रैया हैं।

निर्मोही व्यास भी चावा नाटककार हैं अर आं रा नाटक भी रंगमंच माथै घणा लोकप्रिय हुया हैं। इंया ई निर्मोही व्यास रो 'सांवतो', हनुमान पारीक रो 'चोखो–भूंडो दिन' अर राघव प्रकास रो 'तीसरो मचाण' चर्चित रैयो है। हनुमान पारीक रै 'चोखो दिन : भूंडो दिन' आज री संवेदना नै लेय'र चालै। निर्मोही व्यास रो 'प्रणवीर पाबूजी' अर 'भीखो ढ़ोली' भी रंगमंच माथै घणा चावा हुया हैं।

कुमार गणेश रा पांच नाटक छप्या है, अै खुद नाटककार रै अलावा नाटक निर्देसक अर अभिनेता भी है। राजस्थानी में आं रा पांच नाटक है। आपरा नाटक मंचीय है अर आधुनिक मंच नै ध्यान में राख'र लिखीज्या हैं। आज रै नाटकां में कुमार गणेश री अेक ठावी ठौड़ है आप नुक्कड़ नाटक भी लिख्या है। 'अजगर री लीक', 'उग्योड़ो अंधार कूड़ नी बोलै' अर 'एक ही शिवानी'। 'अजगर री लीक' आज रै आंतकवाद सूं जुड़ियोड़ी समस्या रो सजीव चित्रण करै। 'उग्योड़ो अंधार कूड़ नी बोलै' में अेक रिटायर मिनख री मनोदसा रो चित्रण है। 'एक ही शिवानी' में नारी मनगत रो मनोवैग्यानिक वरणन हैं।

ज्योतिपुंज रो 'कंकू कबंध' (1998) , कल्ला जी राठौड़ माथै लिख्योड़ो बागड़ी बोली रो सांतरो नाटक है। इणमें वीर कल्ला जी री सूरापण, देसभगती अर त्याग रो चित्रण हैं।

राजस्थानी नाटकां में आज भी संभावना है के रंगमंच नै ध्यान राख'र सांतरा नाटक लिख्या जावै। जयन्त निर्वाण, भगवती लाल व्यास, डॉ. रामकृस्ण महेन्द्र, निर्मोही व्यास, अब्दुल वहीद कमल (तू जाणी क जाणी), हरीश भादाणी, अशोक जोशी, अन्नाराम सुदामा, बी.एल. माली इत्याद आज भी नाटक लिख रैया हैं।

**अेकांकी :–** राजस्थानी में अेकांकी लिखणै री सरूआत सन् 1930 ई. रै आसै–पासै हुयी। सन् 1930 में शोभाचंद जम्मड़ रो 'वृद्ध विवाह विदूषण' अेकांकी छप्यो अर ओ राजस्थानी रो पैलो अेकांकी मानीजै। राजस्थानी अेकांकी में जम्मड़ रो महताऊ योगदान है। इण रै पछै श्रीनाथ मोदी रो 'गोमा जाट' अेकांकी छप्यो। इण री रचना सैली परम्पराऊ ही। सन् 1933 ई. में सूर्यकरण पारीक रो 'बोलावण' अेकांकी प्रकासित हुयो। ओ आधुनिक सैली में लिख्योड़ो अेकांकी है।

'बोलावण' रै पछै अेकांकी छेत्र में केई बरसा तांई अेकांकी नी लिख्या गया अर सन् 1954 ई. में गोविन्द लाल माथुर रै सात अेकांक्यां रो संग्रै 'सतरंगणी' छप्यो। आं रा अेकांकी सामाजिक अर पारिवारीक समस्यावां नै लेय'र लिख्या गया हैं। 'लालची मां–बाप' इण संकलन रो सांतरो अेकांकी है। ईं रै पछै माथुर रो दूजो अेकांकी संग्रै 'पंचायत राज' (1963) छप्यो।

अेकांकी विधा रो बिगसाव उण बखत री पत्र–पत्रिकावां रै माध्यम सूं हुयो। इण में 'मरूवाणी', 'ओळमो', 'राजस्थान वीर', 'हरावल' अर आज री 'जागती जोत', 'बिणजारो', 'राजस्थली', 'माणक' इत्याद पत्रिकावां री महती भूमिका रैयी है। श्रीमंतकुमार व्यास रो अेकांकी संग्रै 'मुंशीजी री डायरी' छप्यो जिणमें चार हास्य अेकांकी हैं। गोविन्द माथुर रै पछै राजस्थानी अेकांकी लिखणवाळा रचनाकारां में डॉ. मनोहर शर्मा, लक्ष्मीकुमारी चूंडावत, गणपतिचन्द्र भण्डारी, रामदत्त सांकृत्य, आज्ञाचंद भण्डारी, श्रीलाल नथमल जोशी, बैजनाथ पंवार, रावत सारस्वत, नारायण दत्त श्रीमाली, दामोदर प्रसाद शर्मा, त्रिलोक गोयल, मालचंद तिवाड़ी, नागराज शर्मा, रामनिरंजन शर्मा ठिमाऊ, भंवर भादानी, लक्ष्मीनारायण रंगा इत्याद हैं।

राजस्थानी अेकांकी री विसै वस्तु माथै विचार करां तो लागै के उण में विविधता है। राजस्थानी में अैतिहासिक, सामाजिक अर हास्य–व्यंग्य अेकांकी लिख्या गया है। सामाजिक अेकांकियां में आदर्सवाद सूं लेय'र यथारथवाद तांई री प्रव्रति दीसै। सामाजिक समस्यावां नै लेय'र लिखणवाळा आं अेकांकीकारां में

गोविन्द माथुर, निरंजननाथ आचार्य, नारायणदत्त श्रीमाली, दामोदर प्रसाद शर्मा, नागराज शर्मा इत्याद रा अेकांकी लिया जा सकै। गोविन्द माथुर रा अेकांकी समस्यामूलक हैं। उणां रा अेकांकी 'सतरंगिणी' नांव सूं दो खंडा में छप्योड़ा हैं। आं में 'लालची मां–बाप', 'डाक्टर रो ब्याव', 'बाल विधवा' इत्याद प्रमुख हैं। इणी तरै 'छिंया तावड़ो' (नारायण दत्त श्रीमाली), 'तोप रो लाइसेन्स' (दामोदर प्रसाद शर्मा), 'रगत अेक मिनख रो' (सुरेन्द्र अंचल) इत्याद सामाजिक समस्यावां सूं जुड़ियोड़ा हैं।

अैतिहासिक अेकांकी लक्ष्मीकुमारी चूंडावत, डॉ. मनोहर शर्मा, आज्ञाचंद भण्डारी, रामदत्त सांस्कृत्य इत्याद रा हैं जिका में राजस्थान रै जीवन मूल्यां रै साथै त्याग, वीरता अर परम्परा रो सांतरो चित्रण है। लक्ष्मीकुमारी चूंडावत रै अेकांकी 'सामधरमा माजी' में राजपूत नारी री वीरता, आज्ञाचंद भण्डारी रै 'देस रै वास्तै' अेकांकी में मां री कठोरता, डॉ. मनोहर शर्मा 'रै अेकांकी कवि रो कलंक', 'उमादे', 'राजदंड' इत्याद में सामन्ती समाज री कमजोरियां रो चित्रण है।

राजस्थानी भासा में हास्य–व्यंग्य अेकांकी भी खूब लिख्योड़ा है। अैड़ा अेकांकीकारां में मालचंद कील, श्रीमंतकुमार व्यास, गोविन्द माथुर, नागराज शर्मा, रामनिरंजन शर्मा ठिमाऊ इत्याद हैं। मालचंद कील रो 'कुमलो फौज में' (1967) अर राजस्थानी हास्य अेकांकी छप्योड़ा है। हास्य अेकांकियां में श्रीमंत कुमार व्यास रा 'गादडी री पूंछ', 'पोपाबाई रो साळो', अर 'मासी सूं मसखरी' हैं। गोविन्द माथुर रै हास्य व्यंग्य अेकांकियां में 'अेकता री मिसाल', 'दायजो मूंगो पड़गो' अर 'रक्सक बणगा भक्सक' प्रमुख हैं।

राजस्थानी हास्य–व्यंग्य अेकांकी विधा में नागराज शर्मा रा अेकांकी घणा चावा हुया हैं। आं रा दो अेकांकी संग्रै 'इब तो चेतो' अर 'राम मिलाई जोड़ी' छप्योड़ा है। ई रै अलावा पत्र–पत्रिकावां में आं रा अेकांकी बरोबर छपता रैवै। नागराज शर्मा रै अेकांकियां री विसेसता आ है के अेकांकियां में सामाजिक अर पारिवारीक समस्यावां रो समाधान प्रस्तुत करीज्यो है। अै अेकांकी रंगमंच माथै घणा सफल हुया है। रामनिरंजन शर्मा ठिमाऊ रो अेक व्यंग्य अेकांकी संग्रै 'ताई गांव री दाई' छप्यो है।

दूजा अेकांकियां में 'आपरो खास आदमी' (बैजनाथ पंवार), 'सम्पादक री मौत' (रावत सारस्वत), 'तोप रो लाइसेन्स' (दामोदर प्रसाद शर्मा) इत्याद हैं। आज भी राजस्थानी अेकांकी खूब लिख्या जा रैया हैं। आ जरूर है के दूजी विधावां री तुलना में अेकांकियां रो विगसाव कम है।

निबंध :– राजस्थानी भासा में निबंध भी बखतसिर लिख्या गया है। निबंध री सरूआत शिवचन्द्र भरतिया री राजस्थानी कृतियां (कनक सुन्दर, फाटका जंजाल इत्याद) री भूमिका में देखी जा सकै। ई रै पछै 'मारवाड़ी हितकारक', 'पंचराज' इत्याद पत्रिकावां में भावात्मक अर हास्य–व्यंग्य सैली में निबंध छप्या। आं निबंधा में व्रजलाल बियाणी रा 'मोगरा कली', 'गुलाब कली', 'बड़ी फजर को दीवो' इत्याद भावात्मक सैली रा चोखा निबंध हैं। ई रै पछै राजस्थानी में जिकी पत्रिकावां जिंया जागती जोत, माणक, गोरबंद, राजस्थली इत्याद ही तो आं में भी निबंध छप्या। निबंध लेखन री नियमित सरूआत 'मरूवाणी' अर 'ओळमो' जैड़ी साहित्यिक पत्रिकावां सूं हुवै। आं पत्रिकावां रै माध्यम सूं राजस्थानी में वरणात्मक, विचारात्मक, विवेचनात्मक अर हास्य–व्यंग्य सैली में निबंध लिख्या गया। आं निबंधा में कठै अैतिहासिक आधार है तो कठै सांस्क्रतिक धरातल री उदादत्ता– आं निबंधा में कठै–कठै हास्य–व्यंग्य सैली भी निजर आवै।

राजस्थानी निबंधकारां में लक्ष्मीकुमारी चूंडावत, सौभाग्य सिंह शेखावत, डॉ. मनोहर शर्मा, जहूंर खां मेहर, अन्नाराम सुदामा, रावत सारस्वत, सूर्यशंकर पारीक, बी.एल. माली, कृस्ण गोपाल शर्मा, डॉ. किरण नाहटा, डॉ. कल्याण सिंह शेखावत, डॉ. गोविन्द सिंह राठौड़, श्रीमंतकुमार व्यास, भंवर सिंह सामौर इत्याद हैं। चूंडावत रा 'मेवाड़ी फागण' अर 'मेवाड़ी दीवाळी' निबंधां में राजस्थान रै सांस्क्रतिक गौरव री झलक दीसै।

'रोहिड़ै रा फूल' (1973) डॉ. मनोहर शर्मा रै व्यंग्यात्मक निबंधां रो संग्रै है। रावत सारस्वत री 'थोथी बातां' अर कृस्णगोपाल शर्मा रा 'अैनक', 'चोल़ो', 'आरजू पुराण' चोखा निबंध है। आं रै निबंधा में घणो निजूपणो है। सुमेर सिंह शेखावत रो निबंध संग्रै 'माणक मोती' (1988) राजस्थानी भासा, साहित्य अर संस्क्रति रै केई पहलुआ नै मौलिक चिंतन सूं उजागर करै। सुमेर सिंह शेखावत ललित निबंध भी लिख्या है। आं री भासा रो आपरो मुहावरो अर कथण री निजू सैली है।

सौभाग्य सिंह शेखावत रा निबंध राजस्थानी साहित्य संस्क्रति अर इतियास सूं जुड़ियोड़ा है। आं रा छोटा–छोटा ललित निबंध त्यूंहार–वार, नामवर कवीसरां, भगतां कोट किलां, ख्याता–बातां सूं जुड़ियोड़ा है। 'चिणौ', 'वचन', 'चाटू', 'जींभा री लपालोल़' इत्याद निबंध घणा सांतरा अर छोटी–छोटी बातां सूं बड़ै सन्दर्भा री बात कैवणवाल़ा है।

जहूंर खां मेहर रा दो निबंध संग्रै 'राजस्थानी संस्क्रति रा चितराम' अर 'धरमजला धर कोसां' नांव सूं छप्योड़ा है। अैतिहासिक परिवेस, गहरी सांस्क्रतिक द्रस्टि अर भासा रो ललित रूप आं निबंधा री खासियत है। शक्तिदान कविया रो 'संस्क्रति री सौरभ' नांव सूं निबंध छप्योड़ा है तो डॉ. किरण नाहटा रो 'भल़ लुआं बाजो कत्ती' विवेचनात्मक सैली रा ललित निबंधां रो संग्रै है।

कल्याण सिंह शेखावत रो निबंध संग्रै 'मणिमाल़' (1995) रा निबंध राजस्थानी में सगळा सूं पैलां लिख्योड़ा मनोवैग्यानिक निबंध है। 'जीव', 'जाति', 'सोच', 'सपनो', 'भूख', 'डर', 'मौत' जैड़ा मनोजात सूं जुड़ियोड़ा विसयां माथै गैराई अर बारीकी सूं लिख्योड़ा निबंध है। इंया ई अमोलकचंद जांगिड़ रा 'गल़चट' में छप्योड़ा निबंध भी मनोवैग्यानिक हैं।

डॉ. गोविन्द सिंह राठौड़ री पोथी 'गांवा में गांव सुहावणो' (1998) गांव री लोक संस्क्रति अर बठै री जिदंगी सूं जुड़ियोड़ा ललित निबंध रो संग्रै है। भासा री दीठ सूं ई अै निबंध घणा असरदार हैं।

बी.एल. माली अशांत (माटी सूं मजाक अर तारां छाई रात), बुलाकी शर्मा (कवि, कविता अर घर आल़ी), श्रीमंतकुमार व्यास (संस्क्रति रो सोच, झांझर को अर सफलता रा पगोतिया) इत्याद रा निबंध भी सांतरा है। आं रै अलावा पत्र–पत्रिकावां में भी निबंध बरोबर छपता रैया हैं। श्रीलाल नथमल जोशी, सौभाग्य सिंह शेखावत (साहित्य सम्पदा, पूजां (पांव) कवेसरां), दीनदयाल ओझा, मूलचंद प्राणेश, माणक बंधु तिवाड़ी (सोनलिया ओल़खाण), सूर्यशंकर पारीक, देवकिसन राजपुरोहित (मोसर बंद), शरदचन्द्र पंड्या (बागड़ नी संस्क्रति), कृस्णलाल विश्नोई इत्याद केई निबंधकार आज भी निबंध लिख रैया है। दीनदयाल ओझा बरोबर बखत सिर विचारात्मक निबंध लिख रैया है। सूर्यशंकर पारीक (सुर नर तो कथता भला) रा निबंध भी प्रौढ़ अर ललित सैली में लिख्योड़ा हैं।

**समालोचना :–** राजस्थानी पत्र–पत्रिकावां में आलोचनात्मक लेख अर पोथ्यां री समीक्षा लगोलग छपती रैवै। पण राजस्थानी आलोचना रो सरूप अजै तांई सामी नी आयो। लेख अर समीक्षा री अेक सीमा हुवै तो उण री कीं कमजोरी भी। आलोचक तो तटस्थ रैय'र किणी मापदंडा रै आधार माथै रचनात्मक साहित्य री बात करै या किणी निरणय नै प्रस्तुत करै तो उण सूं आलोचना रो रूप भी बिगसै अर रचनाकारां नै भी सही दिसा–द्रस्टि मिलै। हरावळ, दीठ, जागती जोत, मरूवाणी, ओल़मो, बिणजारो, राजस्थली इत्याद पत्रिकावां में समालोचना सम्बन्धी लेख छपता रैया हैं। सरू में राजस्थानी री कीं काव्य कृतियां में लम्बी चौड़ी भूमिकावां लिखीजी जिण सूं आलोचना रो अेक परम्पराऊ दौर सरू हुयो। 'दुर्गादास', 'सांझ', 'राधा' इत्याद रचनावां री भूमिका घणी महताऊ हैं।

राजस्थानी में आलोचना वा लोगां सूं सरू हुवै जिका मौलिक सिरजण भी कर्‌यो तो रचनात्मक

चेतना रै बाबत आपरी विवेचनात्मक दीठ ही प्रगटी। अैड़ा रचनाकारां में डॉ. तेजसिंह जोधा, नंद भारद्वाज, डॉ. गोरधन सिंह शेखावत, डॉ. किरण नाहटा, डॉ. मदन केवलिया, ओंकार पारीक, चेतन स्वामी, अर्जुनदेव चारण, कुंदन माली, नीरज दइया, भंवर सिंह सामौर, जगमोहन सिंह पड़िहार इत्याद हैं। डॉ. तेज सिंह जोधा री समालोचना में विसय वस्तु नै समझणै री मौलिक दीठ है। राजस्थानी आलोचना में पोथ्यां रो अभाव है । नंद भारद्वाज रो 'दौर अर दायरौ', डॉ. तेज सिंह जोधा रो परम्परा रो अंक 'हेमाणी' ,डॉ. पुरूषोत्तम आसोपा रो 'सिरजण री परख', कुंदन माली री समकालीन राजस्थानी कविताः संवेदन अर सिल्प' अर अर्जुनदेव चारण री 'राजस्थानी कहाणी' 'परम्परा अर विकास' अर 'बखत री बारखड़ी' इत्याद कीं महताऊ पोथ्यां हैं। इण रै अलावै पत्रिकावां में बखत सिर आलोचनात्मक आलेख ही घणा छप्या हैं। समालोचना पोथी परख'ररै रूप में भी पत्रिकावां में छपती रैयी है अर केई आलोचक सांतरै ढंग सूं समीक्षा करता रैया हैं।

**गद्य साहित्य री दूजी विधावां :–** राजस्थानी में जीवनी, संस्मरण, यात्रा वरणन, इन्टरव्यू, गद्यकाव्य इत्याद विधावां में थोड़ो साहित्य लिख्यो गयो है। आं रा विवरण इण मुजब हैं :–

**जीवनी :–** राजस्थानी में जीवनी साहित्य आजादी रै पछै लिख्या गयो। 'मरूवाणी', 'ओल़मो', 'हरावल' इत्याद पत्रिकावां में संत–महात्मा, लोकप्रिय साहित्यकार अर कविसरां री जीवनी छपती रैयी है। श्रीलाल नथमल जोशी री गांधी जी री जीवनी 'आपणा बापूजी' (1969), डॉ. किरण नाहटा री 'शिवचन्द्र भरतिया' (1970), दीनदयाल ओझा री 'देस रा गौरव' (1972), 'भारत रा निर्माता' (1972), 'छोटी उमर : बड़ा काम' (1977), शान्ति भानावत री 'महावीर री ओल़खाण' इत्याद कीं उल्लेखजोग जीवनी हैं।

**रेखाचित्र अर संस्मरण :–** राजस्थानी में 1946–47 रै आसै–पासै रेखाचित्र लिख्या जावण लाग्या। भंवरलाल नाहटा रो 'लागू बाबो' पैलो संस्मरणात्मक रेखाचित्र है। 1946 में श्रीलाल नथमल जोशी रो 'फरामल' रेखाचित्र छप्यो अर पछै पत्रिकावां में रेखाचित्रां री सरूआत हुयी। रेखाचित्र लिखणवाळा में मुरलीधर व्यास, श्रीलाल नथमल जोशी, मोहन लाल पुरोहित, शिवराज छंगाणी, नेमनारायण जोशी, सूर्यशंकर पारीक (मन सूं कदै नै बिसरै), श्रीमती कमला कमलेश (बां दनां की बातां), अस्तअली मलकांण (उणियारा ओल्यूं तणा), ओंकार पारीक,सत्येन जोशी (रोवणिया दासा), बैजनाथ पंवार,, देवकिसन राजपुरोहित, मनोहर सिंह राठौड़, नथमल केडिया, तारालक्ष्मण गहलोत इत्याद प्रमुख हैं।

'जूनां जीवता चितराम' में मुरलीधर व्यास अर मोहन लाल पुरोहित समाज रा उपेक्षित पात्रां नै लेय'र मानवीय संवेदना रै साथै रेखाचित्र लिख्या हैं। श्रीलाल नथमल जोशी रा 'सबदड़ा' (1960) में आपरै घणै सम्पर्क सूं जुड़ियोड़ा लोगां री याद नै सबदां में ढाळी है। आं रै मांय कीं हास्य प्रधान रेखाचित्र भी है। रेखाचित्रां में भंवरलाल नाहटा री 'बानगी' (1965), शिवराज छंगाणी री 'उणियारा' (1970), ब्रजनारायण पुरोहित री 'अटारवां' (1970), 'वकील साहब' (1974) इत्याद कीं उल्लेखजोग कृतियां हैं। अन्य फुटकर रेखाचित्रां में दाऊदयाल जोशी रा 'भैंसौ होय न मिनख की बोल़ी बोल़ै', ओंकार पारीक रा 'हेमी भागीरथ जी' इत्याद हैं। रेखाचित्र नै 'सबद चितराम' कैय'र हरमन चौहान रा केई सांतरा रेखाचित्र पत्र–पत्रिकावां में छप्या हैं। सत्येन जोशी री 'रोवणिया दा'सा ' रेखाचित्र री दीठ सूं महताऊ पोथी है।

डॉ. नेमनारायण जोशी री पोथी 'ओ़ळू री अखियातां' (1994) संस्मरण विधा री प्रौढ़ कृती है। जोशी रा आं संस्मरणां में राजस्थान री लोक संस्क्रति रा फूठरा चितराम हैं। इण पोथी रा सातूं ई संस्मरण अपणै में बेजोड़ हैं। आ संस्मरण विधा री महताऊ कृती है।

अन्नाराम सुदामा 'देस दिसावर' (1975) अर 'आंगणै सूं अर्नाकुलम्' पोथी में यात्रा रा संस्मरण लिख्या हैं। इयां ई कल्याण सिंह राजावत, रामकुमार ओझा, बुद्धिजीवी रा भी यात्रा संस्मरण छप्या हैं। विष्णु भट्ट

(सोमनाथ री यात्रा), अमरनाथ कश्यप अर झमणलाल व्यास भी सांतरा यात्रा संस्मरण लिख्या हैं।

'ओळू री आरसी' डॉ. तारालक्ष्मण गहलोत रै आठ राजस्थानी संस्मरणां री पोथी है। आं सगळा रो मूल सुर है– नारी उत्पीड़न। संवेदना रै धरातल पर लिख्योड़ा अै संस्मरण घणा मारमिक हैं।

**इन्टरव्यू :–** राजस्थानी में इण विधा रो भी थोड़ो विकास हुयो अर बिणजारो, माणक, परम्परा, जागती जोत, राजस्थली इत्याद पत्रिकावां में विविध छेत्रां में कामकरण वाला व्यक्तियां रा विचार जाणणै सारू इन्टरव्यू लिया गया हैं। 'माणक' पैलां 'आमी–सामी स्तंभ' रै मांय अलग–अलग छेत्रां रै लोगां रा इन्टरव्यू लिया गया हैं । 'बिणजारो' पत्रिका में डॉ. गोरधन सिंह शेखावत, डॉ. मनोहर शर्मा, विमलेश, दूलिया राणा, झाबरमल शर्मा इत्याद रा इन्टरव्यू लिया है। 'परम्परा' रै 'हेमाणी' अंक में चन्द्र सिंह, डॉ. नारायण सिंह भाटी, सत्यप्रकाश जोशी, कोमल कोठारी इत्याद रा इन्टरव्यू छप्या हैं।

**व्यंग्य लेखन :–** राजस्थानी में कहाणी अर निबंध रै साथै सुतंतर रूप सूं व्यंग्य भी घणा लिखीज्या हैं। अै व्यंग्य समाज अर राजनीति में फैल्योड़ी असंगतियां माथै तीखो प्रहार करैं। राजस्थानी में बखतसिर पत्र–पत्रिकावां में व्यंग्य बरोबर छपता रैया हैं। अैड़ा रचनाकारां में डॉ. मनोहर शर्मा, नृसिंह राजपुरोहित, सांवर दइया, हरमन चौहान, त्रिलोक गोयल, मनोहरलाल गोयल, बुद्धिप्रकाश पारीक, कृस्ण गोपाल शर्मा, गोवर्द्धन हेड़ाऊ, अम्बू शर्मा इत्याद रा नांव लिया जा सकै हैं। राजस्थानी व्यंग्य रो विकास लारलै दो दसकां में कीं घणो हुयो है। व्यंग्य री केई लूंठी पोथ्यां भी छपी हैं जिणमें बुलाकी शर्मा री 'कवि कविता अर घरआळी' (1987), चेतन स्वामी रै सम्पादन में 'रचाव' (1991), प्रहलाद श्रीमाली री 'आवळ–कावळ' (1991), भगवती प्रसाद चौधरी री 'सुपने में चाणक' (1995), शंकर सिंह राजपुरोहित रो 'सुण अर्जुन' (1995), सांवर दइया री 'इक्यावन व्यंग्य' (1996), डॉ. मनोहर लाल गोयल री 'म्हारी जमलोक यात्रा' (1999), श्याम गोइनका री 'गादड़ो बड़ग्यो' (1999), बुलाकी शर्मा री 'इज्जत में इजाफो' (2000) इत्याद हैं। भगवती प्रसाद चौधरी रै व्यंग्य संग्रै 'सुपने में चाणक' राजनीति, समाज रा आडम्बर, भ्रस्टाचार, प्रसासन री आपाधापी इत्याद माथै चोखी चोट करणवाला हैं। सांवर दइया रा 'इक्यावन व्यंग्य' संग्रै में स्थितियां माथै सटीक व्यंग्य कर्‌या हैं। बै बिना किणी लाग–लपेट रै आपरी बात निरभीकता रै साथै अभिव्यक्त करैं। आ दइया रै व्यंग्य–संग्रै री खास विसेसता है। व्यंग्य–विधा में दइया रा व्यंग्य अेक महताऊ योगदान रै रूप में उल्लेखजोग हैं। हरमन चौहान रा व्यंग्य अेक तीखी चुभन अर नुंवा विसै लियोड़ा हैं।

आं व्यंग्य रचनाकारां रै अलावा पत्र–पत्रिकावां में नागराज शर्मा, श्याम जांगिड़, श्यामसुन्दर भारती, एस.आर. टेलर, भवानीशंकर व्यास विनोद, राजनिरंजन शर्मा ठिमाऊ, मालीराम शर्मा, भंवरलाल भ्रमर, छगनलाल व्यास, डॉ. मदन केवलिया, ताऊ शेखावाटी, डॉ. उदयवीर शर्मा, डॉ. मंगत बादल इत्याद रा व्यंग्य भी छप्या हैं।

राजस्थानी साहित्य में बाल साहित्य री सिरजणा भी हुय रैयी है। बाल साहित्य बाल मनोविग्यान सूं भरियोड़ो है। रानी लक्ष्मीकुमारी चूंडावत, डॉ. मनोहर शर्मा, लक्ष्मीनारायण रंगा, बी.एल. माली अशांत, जयंत निर्माण, बुलाकी शर्मा, अब्दुल वहीद कमल, मोहन मंडेला, नवनीत राय, रामनिरंजन शर्मा ठिमाऊ, मनोहर सिंह राठौड़, प्रेमचंद गोस्वामी इत्याद रचनाकार बाल कथावां , बाल उपन्यास अर बाल कवितावां लिखता रैया है। केई बाल कथावां रो दूजी भासा सूं उल्थो भी हुयो है।

**गद्य काव्य :–** गद्य काव्य 1946 ई. में चन्द्र सिंह 'राजस्थानी' पत्रिका में सीप नांव सूं रचना लिखी इण रै गद्य पद्य काव्य री प्रक्रति सरू हुयी। इण में कन्हैयालाल सेठिया, मुरलीधर व्यास, बैजनाथ पंवार, लक्ष्मीकुमारी चूंडावत, डॉ. मनोहर शर्मा, गोविन्द अग्रवाल, माणक बंधु तिवाड़ी आद प्रमुख हैं। सेठिया रा 'गळगचिया' (1972), चन्द्र

सिंह री 'बाल़साद', गोविन्द अग्रवाल रा 'नुक्तीदाणा' (1978) इत्याद महताऊ पोथ्यां हैं।

**अनुवाद :–** राजस्थानी में दूजी भारतीय भासावां रै महताऊ साहित्य रो उल्थो भी हुयो है। आं भासावां में संस्क्रत, अंग्रेजी, बंगला, उर्दू इत्याद भासावां री रचना रा अनुवाद भी हुया हैं। अनुवाद री द्रस्टि सूं चन्द्रसिंह (रघुवंश, गाथा सप्तशती, मेघदूत), डॉ. नारायण सिंह भाटी (मेघदूत), डॉ. मनोहर शर्मा (रवीन्द्रवाणी, मेघदूत, उमर खय्याम), मनोहर प्रभाकर (उमर खय्याम, भरथरी सतक), विश्वनाथ शर्मा विमलेश (भगवद् गीता), किशोरकल्पना कांत (रितु संहार, नस्ट नीड़, शेक्सपीयर री बातां), रामनाथ व्यास परिकर (लेनिन कुसुमांजलि–रूसी भासा सूं), रावत सारस्वत (जफरनामो , बंसरी गाथा सप्तसती, रिग्वेद री रिचावां), जोगीदान कविया (कुरान की आयंतां), बद्रीदान गाडण (मधुशाला), युशुफ झुन्झुनवी (गालिब राजस्थानी) इत्याद अनुवाद उल्लेखजोग है। दूजा अनुवादकां में गिरधारी लाल शास्त्री, नृसिंह राजपुरोहित, गोविन्द माथुर, मांगीलाल चतुर्वेदी, आई.के. शर्मा, भगवती लाल व्यास, सत्यप्रकाश जोशी, चन्द्रप्रकाश देवल, नंद भारद्वाज, पारस अरोड़ा, गोरधन सिंह शेखावत, ज्योतिपुंज, आईदान सिंह भाटी, शारदा क्रस्ण (शकुन्तला री ओल़ख), रामस्वरूप किसान, सत्यनारायण इन्दोरिया (सो कीं हैं बो ,मोवणी भोम),मालचंद तिवाड़ी, नीरज दइया, अर्जुनदेव चारण, मनोहर सिंह राठौड़, सीताराम महर्षि इत्याद हैं। अै इश्यावस्योपनिषद सूं उल्थो कर्‌यो है। विदेशी भासा रा नाटकां अर कवितावां रो घणो अनुवाद हुयो। गुजराती, उड़िया भासा री कवितावां रो चन्द्रप्रकाश देवल सांतरो अनुवाद कर्‌यो है। सजा (रूसी), जटायु (गुजराती), सबदां रो आभो (उड़िया), काल़ में कुरजा (हिन्दी) रो उल्थो चन्द्रप्रकाश देवल करियो।

**पत्र–पत्रिकावां :–** रचनात्मक साहित्य नै आगै बढ़ावण सारू पत्र–पत्रिकावां रो योगदान महताऊ है। आजादी सूं पैलां भी की पत्रिकावां ही जिंया– वेश्योपकारक (कलकत्ता), महेश्वरी (अलीगढ़), पंचराज (नासिक), हंस (इलाहबाद), विशाल भारत (कलकत्ता), मारवाड़ी (ब्यावर), राजस्थानी (कलकत्ता) इत्याद ही।

आजादी रै पछै जिकी पत्रिकावां निकल़ी वां में मरूवाणी (जोधपुर), ओल़मो (रतनगढ़) जैड़ी साहित्यिक पत्रिकावां रो अैतिहासिक महत्त्व है। इण रै पछै राजस्थानी में जाणकारी, अपरंच (जोधपुर), जलमभोम, मरवण (बीकानेर), हरावल़ (जोधपुर), नैणसी (कोलकात्ता), राजस्थली (श्रीडूंगरगढ़), जागती जोत (बीकानेर), ओल़खाण (जोधपुर), बिणजारो (पिलानी), राजस्थानी अेक अर दीठ (रणसीसर), कचनार (अंता), बतलावण (पिलानी), गोरबंद (लक्ष्मणगढ अर गंगानगर), पिणहारी (जयपुर), माणक (जोधपुर), नेगचार (बीकानेर), ईसरलाट (जयपुर) इत्याद पत्रिकावां हैं। मौलिक सूझ–बूझ सूं डॉ. तेजसिंह जोधा री राजस्थानी अेक, दीठ अर जागती जोत रा सम्पादन चर्चित रैया है। अपरंच, राजस्थली, नेगचार (बीकानेर) पत्रिकावां में युवा पीढ़ी रा रचनाकारां री खूब रचनावां छपी हैं, आरथिक संकट री बजै सूं आ पत्रिकावां में घणकरी पत्रिकावां बंद हुयगी।

**मूल्यांकन :–** राजस्थानी गद्य री विविध विधावां रो मूल्यांकन करां तो प्रतीत हुवै के कहाणी नै छोड़'र दूजी विधावां में भोत कम रचनावां उपलब्ध हुवै। पछै उपन्यास, नाटक, अेकांकी या दूजी विधावां में कहाणी ही अेक अैड़ी विधा जिकी समसामयिकता अर आधुनिकता नै अपणायी हैं। अती जरूर है के गद्य में अब लिखणो सरू हुयो अर अेक चोखी सरूआत कहीजसी। भंलाई राजस्थानी गद्य लेखन री स्थिति दीखण में कमजोर लागै पण सगळी विधावां में नुवी–नुवी प्रव्रत्तियां रो बिगसाव, अेक सुभ संकेत है।

आजादी रै पछै री स्थितियां सूं राजस्थानी रचनाकार घणो प्रभावित हुयो है अर वो आज री राजनीति, जड़ व्यवस्था इत्याद माथै तीखो व्यंग्य कियो है। आज उपन्यास, नाटक, अेकांकी, संस्मरण, रेखाचित्र, व्यंग्य लेखन धीरै–धीरै आपरी संतोसजनक स्थिति सूं भरोसौ जरूर दिरावै। राजस्थानी में जत्तो गद्य लिख्यो जासी, भासा री दीठ सूं वो बत्तो ई महताऊ कहीजसी।

**अभ्याससारू सवाल :–**

**वस्तुनिस्ठ सवाल :**

1. डिंगल परम्परा रा छेला कवि कुण हैं ?
   (अ) शंकरदान सामौर (ब) सूर्यमल्ल मिश्रण
   (स) रामनाथ कविया (द) उदयराज ऊजल ( )
2. आधुनिक काल रा सुधारवादी कवि कुण हा ?
   (अ) हिंगलाजदान कविया (ब) ऊमरदान लालस
   (स) स्वरूपदास (द) कवि चिमन जी ( )
3. 'करूणा बहतरी' रा रचनाकार बतावो ?
   (अ) शिवबक्स पालावत (ब) मोड़सिंह महियारिया
   (स) रामनाथ कविया (द) कविराज मुरारिदान ( )
4. 'दुरगादास' किण कवि री कृती है ?
   (अ) कन्हैयालाल सेठिया (ब) सत्यप्रकाश जोशी
   (स) महावीर प्रसाद जोशी (द) नारायण सिंह भाटी ( )
5. सुतंतर प्रक्रति चित्रण री पैली रचना कुणसी है ?
   (अ) बादल़ी (ब) परभाती
   (स) मेघमाल़ (द) डांफी ( )
6. 'लू' काव्य किण रो लिख्योड़ो है ?
   (अ) सुमेर सिंह शेखावत (ब) नानूराम संस्कर्ता
   (स) चन्द्रसिंह (द) डॉ. मनोहर शर्मा ( )
7. नुंवी कविता री सरूआत कद सूं मानी जावै ?
   (अ) सन् 1950 (ब) सन् 1960
   (स) सन् 1970 (द) सन् 1965 ( )
8. राजस्थानी भासा रो पैलो उपन्यास कुण सो है ?
   (अ) कनक सुन्दर (ब) आभै पटकी
   (स) हूँ गौरी किण पीव री (द) तिरसकूं ( )
9. राजस्थानी भासा री पैली कहाणी कुण लिखी ?
   (अ) मुरलीधर व्यास (ब) शिवचन्द्र भरतिया
   (स) अन्नाराम सुदामा (द) गुलाबचन्द नागौरी ( )
10. 'बोल भारमली' काव्य रा रचनाकार कुण हैं ?
    (अ) कल्याण सिंह राजावत (ब) चन्द्रप्रकाश देवल
    (स) रेवतदान चारण (द) सत्यप्रकाश जोशी ( )

**घणा लघुरात्मक सवाल :**

1. 'बोल़ावण' रा रचनाकार कुण हैं ?
2. 'सैनाणी' कविता कुण अर कद लिखी ?

3. कल्याण सिंह राजावत री ख्याति किण रूप में है ?
4. गणेशीलाल व्यास किण विचारधारा रा कवि हैं ?
5. 'चेत मानखो' रा रचनाकार कुण हैं ?
6. 'राजस्थानी रामायण' किण री लिख्योड़ी है ?
7. विश्वनाथ शर्मा विमलेश कैड़ा कवि है ?
8. अन्नाराम सुदामा रै उपन्यास रो नांव बतावो ?

**लधुरात्मक सवाल :**

1. कन्हैयालाल सेठिया रै काव्य री विसेसतावां लिखो ?
2. नृसिंह राजपुरोहित किण ढंग रा कहाणीकार हैं ?
3. अन्नाराम सुदामा री कहाण्या री विसेसतावां बतावो ?
4. विजयदान देथा रै उपन्यास रो कांई नांव है ?
5. राजस्थानी में गजल कुण–कुण लिखी है ?
6. मालचंद तिवाड़ी कैड़ा कहाणीकार हैं ?
7. राजस्थानी में संस्मरण लिखणवाळा रचनाकार कुण हैं ?
8. कालिदास रै 'मेघदूत' रो राजस्थानी में उल्थो कुण कर्‌यो ?

**निबंध रूप में सवाल :**

1. 'राधा' काव्य रो मूल सुर कांई है ?
2. पारिवारीक यथार्थ री कहाणी लिखणवाळा रचनाकार कुण हैं?
3. आधुनिक राजस्थानी नाटकां री स्थिति रो उल्लेख करो?
4. नुंवी कविता पैलां री कविता सूं साव अलायदा है कांई?
5. राजस्थानी प्रक्रति काव्य री विसेसतावां बतावो ?
6. राजस्थानी कहाणी री विसेसतावां लिखो ?
7. सांवर दइया री कहाण्या री विसेसतावां बतावो ?
8. राजस्थानी आलोचना री स्थिति किंया कांई है ?